प्रकाशक—

श्रीदूधनाथ पुस्तकालय एण्ड प्रेस,

६३, सूतापट्टी बड़ाबाजार, कलकत्ता—७

२१ वां संस्करण २०००] [१९५९ ई०

मूल्य तीन रुपये

मुद्रक—

श्रीदूधनाथ प्रेस,

९५।१, शम्भूहल्दर लेन, सलकिया, हवड़ा

भूमिका

—※※※—

आज जगन्नियंता परमपिता परमात्मा की असीम कृपासे आपलोगों की सेवामे "वृहत् कामाक्षामन्त्रसार" समर्पित करते हुए अतीव आनन्द प्राप्त होता है। आजकलके कतिपय कपोल कल्पित अथवा अधूरी मन्त्र पुस्तकोंके कारण मन्त्र विद्या को उपहासित और निन्दित होना पड़ा है। बहुतेरे साधकगण अपने कार्य साधन करने के निमित्त कठिन परिश्रम करने के पश्चात निराश होने से मन्त्र विद्या पर अविश्वास करने लग गये हैं। उन्हें हम विश्वास तथा स्मरण दिला देना चाहते हैं कि मन्त्र-विद्या अबतक विद्यमान है, इसके द्वारा प्राचीन काल के ऋषि, मुनि राजा और प्रजादि मन्त्र शक्ति का उपयोग कर दुष्कर कार्य्यों को भी आसान बना लेते थे, इस मन्त्र ग्रन्थ मे सिद्धिके ऊपर विशेष प्रकाश डाला गया है। जो कि अन्य नूतम मन्त्रादिक ग्रथो में नहीं पाया जाता है।

श्री हंसराज बच्छराज नाहटा
सरदारशहर निवासी
द्वारा
जैन विश्व भारती, लाडनू
को सप्रेम भेट –

श्रीमान् प० रामनारायणजी त्रिवेदी ने प्रचुर धन व्यय कर मुझसे तथा अनेक प्राचीन मन्त्र ग्रन्थादि की सहायता से और सुप्रसिद्ध मन्त्र देश कामरू कामाक्षा की कामिनियो से शिक्षा पाये हुए ओझा गुनियों से अनुनय विनय करके मन्त्रादि प्राप्त किया है।

इसमें हमने सर्वप्रकार के मन्त्रोंका वर्णन करते हुए विशेप-रूपसे सर्प बिच्छू आदिक मन्त्रों का तथा मोहन, वशीकरण इत्यादि तथा सब तरह के तन्त्रादिक उपाय के अलावा राजा भोजकी कन्या भानुमती कृत विख्यात "भानुमतीका पेटारा" भी वर्णित किया है। कठिन परिश्रम तथा अपनी क्षुद्र बुद्धि के अनुसार "बृहत् कामाक्षा मन्त्र सार" मन्त्र-प्रेमी सज्जनोंको अर्पण करते हुए अपने को भाग्यवान् समझता हू। आपलोग इसका उपयोग कर लाभ तथा अपने मनोरथको जब पूर्ण करेंगे तभी मैं अपने परिश्रम को सफल समझूँगा। आशा करता हूं हमारे उत्साह को बढाते हुए अगाध मन्त्र-विषयको कुछ भागों में परिपूर्ण करनेका सुअवसर प्रदान करेंगे।

निवेदक—

राधाकृष्ण प्रसाद्

बृहत कामाक्षा मंत्र सार

तथा

भानुमती का पेटारा

विषयानुक्रमणिका

प्रथम अध्याय

द्वितीय अध्याय

शान्ति करन

भूत प्रेत ग्रस्त रोगी का

सर्प भय निवारण मन्त्र

तृतीय अध्याय

(पृ० ११९ से १३२ तक)

पञ्चम अध्याय

(पृ० १५६ से १८१ तक)

षष्ठम अध्याय

(पृ० १८२ से २०३ तक

सप्तम अध्याय

(पृ० २०४ से २२६ तक)

अष्टम अध्याय

[पृ० २२७ से २६५ तक]

नवम अध्याय

[पृष्ट २०६ से २८८ तक]

भानुमती का पेटारा

अथ साधन प्रकरण

—:०:—

॥ श्री ॥

बृहद्

कामाक्षा मन्त्र सार

श्रीगणेश बन्दना

गजाननं भूतगणाधि सेवितं कपित्थ जम्बूफलचारु भक्षणम् ।
उमासुतं शोक विनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वर पाद पकंजम्॥१॥

श्री देवी बन्दना

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते।१

॥ दोहा॥

श्री गुरु गणपति उमापति, सरस्वती धरि ध्यान ।
विनय करों कर जोरि के, करहु सकल कल्याण ॥
कामाक्षा देवी पद वन्दिके, गुरूजनको शिरनाय ।
मन्त्र यन्त्र बर्णन करूं सकल सिद्ध फलदाय ॥

प्रथम अध्याय

—:०:—

❀ मन्त्र चैतन्य प्रणाली ❀

धर्म्मावलम्बी पुरुष साध्यानुसार इन्द्रिय संयम करके अपने गुरुके निकट दीक्षा ग्रहण करें। प्रथम गुरू मन्त्र एक लाख जाप करके मन्त्रको चैतन्यकरके फिर अन्य मन्त्र यन्त्रादिकी शिक्षा ग्रहणके निमित अग्रसर होवें।

जपादि करनेके पहले एवं पोछे अनेक प्रकारकी प्रक्रिया करनी पड़ती हैं। उसका नाम क्रमपद्धतिहै इस पद्धतिको नहीं जानकर जप करनेसे कार्य्य सिद्ध नहीं होता।

जपके प्रारम्भमें चौर गनेश, गुर्व्वादि नाम मन्त्र शिक्षा, मन्त्र चैतन्य, मन्त्रार्थ, गुरु ध्यान, कुल्लुका, सेतु, महासेतु, निर्व्वान, योनिमुद्रा, अङ्गन्यास

करन्यास, प्राणायाम, जिह्वाशोधन,मन्त्रप्राण, दीपनी सूतक (अशौच भङ्ग) निद्रादोषहरणगुर्व्वोष्टकमुख शोधन करशोधन, एवं गुरू, देवता वऐक्यकरकेजपारम्भ करना होता है एवं जपान्तमें पुनः सेतु सूतक व प्राणायाम करनेसे जप फल सिद्ध होता है।

यह सत्ताइस प्रकारके क्रम मध्य और गणेश गुर्व्वादि नाम, गुरुध्यान, अङ्गन्यास, करन्यास, व प्राणायाम (प्रातःकालमें कर लेनेसे पुनः उक्तन्यास द्वितीय वार करनेका प्रयोजन नहीं होता है)।

मन्त्र विश्वास—दृढ़ विश्वासके ऊपर निर्भर करके मूल मन्त्रको तेज पूर्ण ज्ञान करने को मन्त्र शिखा कहते हैं।

मंत्र चैतन्य—शरीरके भीतरमें षटचक्र भेद् ब्रह्मविवरसे जो ॐ कार ध्वनि निकलती है, उस ध्वनिका ॐ कार रूप वर्णभाव परित्याग कर केवल विशुद्ध ध्यानात्मक शब्दब्रह्म अनुभव करनेका नाम मन्त्र चैतन्य है।

मंत्रार्थ—मूलाधारसे ब्रह्म-रन्ध्र पर्य्यन्तकूलकुन्डलिनी शुद्ध स्फटिक सन्निभ आकाशके ऐसा पूर्ण ब्रह्ममय ध्यान करके उसके मध्य इष्ट देवतका वर्णमय शरीर स्मरणको मन्त्रार्थ कहते हैं।

कूल्लूका—किस देवताके मंत्र जप करनेके आदि व अन्तमेंमस्तकके ऊपर मन्त्र जप करनेका नाम कूल्लूका है। तीन बार प्राणायाम करके दश बार जप करना चाहिए।

कालीका कूल्लूका

मन्त्र—क्रीं हीं स्त्रीं हूंफट्। महानीलसरस्वती मन्त्र—ह्रीं स्त्रीं हूँ। छिन्नमस्तादेवीका-वज्रवैरोचनीय ॐ। भैरवीका-श्रीं। त्रिपुराका—ऐं क्लीं ह्रीं। त्रिपुरा भगती ऐं क्लीं।

सेतू—यहसेतुमन्त्र हृदिस्थानमेंअनाहतचक्रमें दस बार जप करना होता है। काली, तारा, त्रिपुरा

भुवनेश्वरी व भैरवी एवं अन्यान्य सब देवताओंकी सेतु ॐकार। वैश्य सेतफट् एवं शूद्रकी सेतु ह्रीं। शूद्रोंके पक्षमेंॐकारभी सेतु रूपमें कीर्तित होताहै।

महासेतु-जो मनुष्य महासेतुके व्यतीत जपाचरण करे तो वह पापी होता है। प्रथम महासेतु करके तब सेतु मन्त्र जप करना चाहिये, विशुद्धा व्याख्या चक्रमें कण्ठ देशमें महासेतु दसवार जप करना होता है। सुन्दरी भुवनेश्वरी वा काली के विषय में अपना बीज मंत्र ही महासेतु है। तारा देवीकी महासेतुकूर्च्च बीज (हूं) एवं अन्यान्यदेवता ओं की महासेतु वधुबीज (स्त्रीं) जानना चाहिये।

निर्वाण—मातृकामिलीहुई मूल मंत्रमणिपुरमें (नाभिमूलमें) दस मूलसे जप करनेको निर्वाणकहते हैं। मन्तारके पहलेॐ बादमें मातुका वर्णतिसके इसी प्रकार समस्त मातृकजप करनेसे भी निर्वाण निष्पन्न होता है।

जपारंभमें जातसूचक (जननाशौच)एवं अंतमें मृत्य सूचक (मरनाशौच)होता है। अशौचावस्थामें जप करनेसे जप निष्फल हो जाता है। इसलिए अशौचभङ्ग आवश्यकीय है उस अशौचभङ्गकानाम सूतक है। जपारम्भके पहले आठबार जप करनेसे अशौच दोष नाश होता है।

दीपिनी—मूलमन्त्रके आदि व अन्तमें योनिमंत्र (ऐ) संशोधन कर सातबार जपनेसे मंत्रकी दीप्ति बढ़ती है। इसे दीपिनी कहते हैं।

योनि मुद्रा-मन्त्र सिद्धिके लिये-षट् चक्रभेद पूर्वक कुण्डलिनी शक्तिको अनुलोम बिलोम क्रमसे बार त्रय सहस्त्रवार स्थिति परब्रह्ममें संयोग करके पीछे हृदयमें स्थापनाकर इष्ट देवताकी चिन्ता करे इस प्रक्रियाको योनि मुद्रा कहते हैं।

कोई मुद्रा करनेमें अक्षम व्यक्ति मूलमंत्रका आद्यान्तमें माया बीज (ह्री) श्रीबीज (श्रीं) कामबीज (क्लीं)प्रवणयोजित करके अष्टोत्तर सहस्त्रबार जपकरे,

प्राणयोग—मुल मंत्रमेंह्रींबीज मिला कर सात बार जप करनेसे पणोद्दीपन होता है। ऐसी विधि मंत्र ग्रन्थोंमें लिखी हुई है।

निद्रा दोषहरण-जैसे बनमें रोना बृथा होता है, उसी प्रकार कुण्डलिनीके निद्रावस्थामें जप करनेसे भी बृथा होता है अपने मंत्रके आदि व अन्तमें काम कला बीज मिलाकर जप करनेसे समस्त निन्द्रा भेष हरण होता है।

वर्गाष्टक—अष्ट वर्गजपछोड़कर करोड़ोंपुरश्चरण करने पर भी जप फल व्यर्थ होता है और अन्तमें नरक भागी बनना पड़ता है।

अष्ट वर्गजपनेका नियम—प्रयेक वर्गकेआद्य वर्णा को अर्थात् अ क च ट त प य श यह आठ वर्णाके बिन्दु युक्त कर मूलमन्त्रमें मिलाकर आद्यन्त में अष्टोतर शतवार जप करना होगा। जैसे अं मूल अं कं मूल कं इत्यादि क्रमसे शं मूल शं पर्य्यन्त एकबार जप होगा। इस तरह एक सौ आठबार जप करना होता है।

मुखशोधन—त्रिपुरा के विषय में मुखशोधन श्रीं ॐ श्रीं ॐ श्रीं ॐ। श्यामा के विषय में-- क्रीं क्रीं क्रीः ॐ ॐ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं। ताराकेविषय में----ह्रीं हुं ह्रीं बगला के विषय में,—ऐ ह्रीं ऐ भैरवी ॐ सौ मतङ्गिनी क्लौं ऐं क्लौं। लक्ष्मी के-श्रीं। कमलासनका श्रीं। महिषमर्द्दनी ऐं ह्रीं ऐं दुर्गे स्वाहा, ह्रीं ऐं एं दुर्गाके विषयमें ऐं ऐं ऐं। धनदा----ओं धुं ओं धूमावती के विषयमें ओं भुवनेश्वरी----ह्रीं किंवा ओं। अन्नदा---- क्लीं अन्यान्य देव देवी एवं विष्णु शिवके विषयमें-- ओं अवथा ह्रीं।

गुरु देवता व मन्त्रऐक्यकरण

पहले गुरुदेवको सहस्रबार मनमें चिन्ताकरके इष्टदेवताको हृदय में स्मरण करें। तिसके बाद मूलमन्त्र को जिह्वा के ऊपर तेजपूर्णा अनुभवकरके वह तेज के द्वारा गुरु देवता व मन्त्र यह तीनोंका ऐक्य करना चाहिये। अर्थात् गुरुदेवके कायिक मूर्ति देवता का घट घटादि मूर्ति एवं वर्णा के मन्त्रमय

मूर्ति, तह तीनों स्थूल मूर्ति परित्याग कर एकमात्र तेजमय मूर्ति ग्रहण करके ऐक्य किया जाता है। उसी मूर्तिको लक्ष्य करके जपानुष्ठान करने से देवता अति शीघ्र साधक पर प्रसन्न हो मन्त्र सुद्धि को प्राप्त होते हैं।

षट् कर्म नाम

१—शान्तिकरण, २—वशीकरण, ३—स्तम्भन, ४—विद्वेषन, ५—उच्चाटन एवं ६—मारण यह छः प्रकारके कर्म्मोंको मुनि ऋषिगण षटकर्म कहते हैं।

नौ प्रकार के प्रयोग।

मारण, मोहन, स्तम्भन, विद्वेषन, उच्चाटन वशीकरण, आकरण, यक्षिणी आदिका साधन, रसायन किया यह नौ प्रकार के प्रयोग कहलाते हैं।

षट् कर्मों का लक्षण

जिस कार्य्यके द्वारा रोगकुकत्य और ग्रहादिकों को शान्ति होतीहै उसको शान्तिकर्म्म कहतेहैं। जिस कर्मद्वारा समस्त प्राणियोंको वश किया जाय उसको

बशीकरण कहते हैं। तथा चलायमान वस्तु या जीवों कीप्रवृत्तिरोकदेना स्तम्भनहै। अत्यन्त मित्रताकेमध्य में बैरभाव उत्पन्नकर प्रीतिको छुड़ा देना विद्वेषण हैं। और जिस कर्म द्वारा किसी प्राणीको निज देशसे अन्य देश पृथककर दियाजाय उसको उच्चाटनकहते हैं, तथाजिस कर्मसे प्राणियों का प्राण हरण किया जाय, उसको मारण कहते हैं।

षट् कर्मों के देवता

शांतिकर्मकी अधिष्ठात्री देवी रति है' बशीकरणकी सरस्वती, स्तम्भनकीलक्ष्मी, विद्वेषणकी ज्येष्ठा, उच्चाटनकी दुर्गा औंर मारणकीदेवी भद्रकालीहै। जिस कर्मको करना हो उसके आदिमें उसी देवीका पूजन करे।

षट् कर्मों की दिशा।

शांति कर्ममें ईशान दिशा, बशीकरण उत्तरदिशा में,स्तंभनपूर्वमें, विद्वेषण नैऋत्यमें, उच्चाटन वायव्य में, और मरण अग्नि दिशामें इसका तत्पर्य यह है

कि, जैसा कर्म करना हो उसी दिशामें मुख करके बैठना चाहिये।

षट् कर्मों के ऋतु काल निर्णय

सूर्य्योदयसे लेकर हरएक रात दिनमें दस-दस दण्ड (घड़ी) में बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर ऋतु, भाग जाया करती है। कोई २ ग्रन्थमें ऐसा कहते हैं कि दोहरसे पहले बसन्त ऋतु, मध्यानमें ग्रीष्म, दोहर पीछे वर्षा, सन्ध्याके समय शिशिर अर्द्धरात्रिमें शरद, और प्रातःकालमें हेमन्त ऋतु भोग करता है। इसी प्रकार हेमन्त ऋतुमें शान्तिकर्म बशन्तमें बशीकरण, शिशिरमें स्तम्भन, ग्रीष्ममें विद्वेषण, वर्षामें उच्चाटन, और शरद ऋतुमें मारण कर्म करना चाहिये। दिनके तृतीय प्रहरमें शांतिकर्म और स्तम्भनके कार्य्य को करे। मध्याह्न कालके पहिले बशीकरण और मध्याह्न में विद्वेषण तथा उच्चाटन करे, सायंकालमें मारणकर्म करना उचित है।

षट्कर्मों के वर्ण ध्यान

वशीकरण, आकर्षण विद्वेषणमें लाल रङ्गका ध्यान करे, मोहन स्तम्भनमें पीला रङ्ग, उच्चाटनमें धूम्रवर्ण शांतिकर्म, (विषनिवारण और पुष्टि कार्य्य) में श्वेत रङ्गका ध्यान करे, उन्मादनमें वीरवहूटीके ऐसा लाल रङ्ग, मरणमें कृष्णबर्ण का चिन्तन करे तथा उसी रङ्गका वस्त्र पहिने और उसी रङ्गका फूल वस्त्रादि से देवीका पूजन करे। वस्त्र बिना सिलाया हुआ ही पहिनना चाहिये।

मारण कर्ममें देवताका समुत्थित, उच्चाटनमें निद्रित एवं अन्यान्य कर्मोंमें समासीन ध्यान करना चाहिये।

सात्विक कर्ममें सनासीन व श्वेत वर्ण, राजस कर्म में पीला लाल या श्यामवर्ण एवं तामस कर्ममेंकृष्ण वर्णवायानमार्ग स्थित चिन्तवन करना चाहिये। जैसे कोई राज्य कामना करता है तो उसे राजस मर्मका अनुष्ठान करना उचित है। शत्रु विनाशः रोग दूरी

करण एवं उपद्रव शान्तिके लिये तमाम कर्मका अनुष्ठान करना चाहिये।

षट कर्मोंके तिथि एवं दिन विचार

शान्तिकर्मको बुध, बृहस्पति, शुक्र या सोमवार यहकई दिनोंमें एवं द्वितिया, तृतीया, पञ्चमी सप्तमी तिथिमें उत्तम हैं। सोमवार या बृहस्पति बारके दिन छठी चतुर्थी, त्रयोदशी, अष्टमी, नवमी अथवा दशमी तिथिका संयोग होनेसे उस दिन पुष्टि कार्य्य का अनुष्ठान करना होता है। आकर्षण कर्मको रवि शुक्रवारके दिन और दशमी, एकादशी, अमावस्या नवमी या प्रतिपदा तिथि अच्छी है। शनिवार या रबिवारकेदिन पूर्णिमा तिथिका संयोग होनेसे उसी दिन विद्वेषणकर्म करना चाहिये और उच्चाटनकर्म को शनिवार एवं चतुर्थी छठी व अष्टमी को अनुष्ठान करना उचित है। विशेषकर उच्चाटन कर्म प्रदोष समय में बहुत ही फल प्रद होता है। मारण कर्म को शनिवार मङ्गल व रबिवार एवं कृष्ण चतुर्दशी

अष्टमी व अमावस्यातिथि उत्तम मानी जाती है। स्तम्भन कर्मको पञ्चमी व पूर्णिमा तिथि एवं बुध व सोमवार उत्तम कहा करते हैं। शांति कर्म तथा पुष्टि कार्य्यादि शुभ कर्म अशुभ ग्रहोंके उदय में करना चाहिये। मारण कार्य्य मृत्यु योग में करना उचित है। अति उत्तम शुभ तिथि किसी संक्रांतिमें रविवार या सप्तमी तिथिका संयोग होतो उसमें जो शुभ कार्य्य किया जावेतो निस्संदेह सिद्धि होती है। मंत्र यंत्र या तंत्र सिद्ध करनेके प्रथम तिथि नक्षत्रको उत्तम रूपसे विचार लेवें क्योंकि सिद्धि होना इसी पर निर्भर करता है। आगे हम और कुछ तिथि व नक्षत्रका वर्णन करते हैं। उसे देखकर बिचार लेवें अथवा गुरू की आज्ञा के अनुसार करें।

तिथि विचार

तिथि पाँच प्रकार की होती हैं, जैसे नंदा, भद्रा जया रिक्ता एवं पूर्णा। यदि शुक्रवारके दिन

नन्दा, बुधमें भद्रा, मङ्गलमें जया, शनिवार रिक्ता, वृहस्पतिमें पूर्ण तिथि होय तो सिद्ध योग जानना चाहिये। इसके अन्यथा मृत्यु योग है।

सिद्धियोग			मृत्युयोग		
नन्दा	१।६।११	शुक्र	नन्दा	१।६।११	रा, म,
भद्रा	२।७।१२	बुध	भद्रा	२।७।१२	चं, शु,
जया	३।८।१३	भौम	जया	३।८।१३	बुध
रिक्ता	४।९।१४	शनि	रिक्ता	४।९।१४	गुरु
पूर्णा	५।१०।१५	गुरु	पूर्णा	५।१०।१५	शनि

सिद्ध योगमें कार्य्य करनेसे सिद्ध होती है, मृत्यु योगमें करने से दुखदाइ होता है।

तिथि वर्णन

कृष्ण पक्ष को नौ तिथियों में सूर्य का और शुक्ल पक्ष की तिथियोंमें चन्द्रमा का अधिकार रहता है। इसी रीति से कृष्ण पक्ष की शेष छः में तिथियों में चन्द्रमा का और शुक्ल पक्ष की छः में

सूर्य का अधिकार रहता है इसलिये सूर्य के अधिकार में चर और चन्द्रमाके अधिकार में स्थिरकार्य करना उचित है। चर कार्य उसे कहते हैं जो थोड़ी देर तक रहता है और स्थिर कार्य उसे कहते हैं जो बहुत काल पर्यन्त उसी दशा में रहता है।

तिथि चक्र

चन्द्र तिथि						सूर्य तिथि					
शुक्र पक्ष			कृष्ण पक्ष			शुक्र पक्ष			कृष्ण पक्ष		
१	२	३	४	५	६	४	५	६	१	२	३
७	८	९	१०	११	१२	१०	११	१२	७	८	९
१३	१४	१५	०	०	०	०	०	०	१३	१४	३०

राशिगत चन्द्र दिशावास।

मेष सिंह धनु पूरब शशी।
मिथुन तुला, जाय पश्चिम बसी॥
मकर सूता बृष दक्षिण माहीं।
कर्क मीन अलि उत्तर के गांही॥

राशि देखने की रीति

हरेक राशि पर एक चन्द्रमामें सवा दो नक्षत्र भोग करते हैं, और प्रत्येक नक्षत्रमें चार चरण होते हैं जो अक्षर चरणों में लिखे हैं। इस रीति से हरेक को चन्द्रमा नौ चरणों तक भोग करता है। जिस मनुष्य की राशि जाननी हो उसके नाम का पहला अक्षर इन नक्षत्रोंमें देखे, जैसे, तारिणी प्रसाद, का पहला अक्षर ता (ता) है वह तुला राशि का स्वाती नक्षत्र के चौथे चरण में है तथा स्वामी शुक्र राशि जाति वादी एवं स्थान पच्छिम (चर) है। इसी तरह सब की राशि देख लेवें॥

चन्द्रमा एक राशि पर सवा दो दिन भोग करता है, जिसकी १३५ घड़ी कुछ जोड़ कर होती है इन एक सौ पैंतिस घड़ियों में चन्द्रमा आठो दिशाओं को भोगता है आवश्यकता के समय चन्द्रमा की स्थित जिस दिशामें हो उसीसे गिनकर सम्मुख करे।

१३५ घड़ी का चक्र।

१	२	३	४	५	६	७	८
पूर्व मे	अग्नि	दक्षिण	नै०	पश्चिम	बाय०	उत्तर	ईशान
१७घ०	१५घ०	२१घ०	१६घ०	१७घ०	१४१०	२०घ०	१५घ०

षट् कर्मों के नक्षत्र विचार

माहेन्द्र वरूण मंडल मध्य में नक्षत्र होने से उसी समय में स्तम्भन. मोहन व वशी करण कार्य्य का अनुष्ठान करने से बहुत ही फल प्रद होता है। ज्येष्ठा, उत्तराषाढ़, अनुराधा व रोहणी यह नक्षत्र गण महेन्द्र मण्डलमध्य गत जानना चाहिये। उत्तर भाद्रपद, मूल, शतभिषा, पूर्व भाद्रपद व अश्लेषा यह सब वारूण मण्डलके मध्य स्थानमें रहने वाला है। महादेवजीका कथन है कि पूर्वा षाढ़ नक्षत्र में भी उक्त विधि कर्म सिद्धि दायक होती है। वायु मण्डल के मध्यगत व अग्नि मण्डल के मध्य गत नक्षत्र में विद्वेसन व उच्चाटन कार्य्य करना उत्तम माना जाता है। अश्विनी, भरणी, आर्द्रा, धनिष्ठा

श्रवण, मघा, विशाषा, कृत्तिका पूर्वा फाल्गुन व रेवती यह वायु मंडल मध्यगत है एवं स्वामी हस्त, मृगशिरा, चित्रा, उत्तर फाल्गुन, पुष्य, पुनर्व्वसु, जानना चाहिये। इसी प्रकार नक्षत्र निर्णय पूर्वक विधिनुसार कार्य्य करने से निस्संदेह सिद्धि लाभ किया जा सकता है।

यह पांच नक्षत्र में तिथि का संयोग होने से शुभ कार्य्य नहीं करना चाहिये।

१ मे मूल	५ मेंभरणी	८मेकृतिका	९मेरोहिणी	१०मेश्लेषा

और धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वा भाद्रपद, उत्तरा रेवती यह पांच नक्षत्र अर्थात् पञ्चकमें शुभ कार्य्य करना उचित नहीं।

षट् कर्मों के लग्न

स्तम्भन कार्य सिंह वृश्चिक लग्न में विद्वेषणव उच्चाटन, कर्कट अथवा तुला लग्न में वशीकरण, शांति कर्म्म, मारण व पुष्टिक कार्य मेष, कन्या, धन तथा मीन लग्न में सर्वोत्तम है।

षट् कर्मों के तत्व

जब जल तत्व का उदयहो उस समय शांति कर्म, अग्नि तत्व के उदय में वशीकरण पृथ्वीतत्व के उदय में स्तम्भन आकाश तत्व के उदय में विद्वेषण और जब वायु तत्वका उदयहो तब मारण कार्यका अनुष्ठान करना होता है और यदि शत्रु भय अथवा अचानक किसी प्रकार का महाभय का सञ्चार होने पर उसके प्रतिकारके जन्य किसी तरहका कार्य साधन करना हो तब उस समय काल निर्णय करनेकी आवश्यकता नहीं, विपत्ति के होते ही उस समय कार्यानुष्ठान किया जा सकता है।

आसन पर बैठने की विधि।

जिस कार्य के लिये जैसी क्रिया करना चाहे उसीके अनुसार आसन ग्रहण कर जपारम्भ करे। जैसे पुष्टि कार्य में पद्मासन से बैठे, शान्ति कर्ममें स्वस्तिक आसन, विद्वेषण में कुक्कुटासन, उच्चाटन में अर्द्ध स्वस्तिका आसन, मारण और स्तम्भन

करने को विकटासन से और वशीकरण मोहन में भद्रासन से बैठे ॥
वशीकरण में मेढ़ाके चर्म के आसन पर, आकर्षण में मृगचर्म या बाघम्बर के आसन पर, उच्चाटन करनेको ऊंट के चर्म या चर्मासन पर, विद्वेषणमें घोड़े या हाथोके चर्मासन पर, मारणमें भैंसके चर्म या काले कम्बल के आसन पर, और छुड़ानेमें गज चर्म पर बैठे। शांति कर्म के लिये कुशासन श्रेष्ट है, काष्ट का आसन सब कार्यों के लिये निष्फल है ॥

अथ योगिनी विचार

योगिनी का बास नौमी व परेवाको पूर्व में तीज व एकादशी को अग्नि में,, तेरस व पंचमीको दक्षिण दिशा में, चतुर्थी व द्वादशीको नैऋत्य में षष्ठी व चतुर्दशी को पश्चिम दिशा में, सप्तमी व पन्द्रशको वायव्यमें दशमो व द्वितीया को उत्तरमें आमावस्या व अष्टमी को ईशान कोण में होता है

योगिनी पीठ और बांयी ओर रहे तो शुभ फल दायक है, दाहिने अथवा संमुख शुभ नहीं होती, आसन पर बैठनेके समय यह विचार करलेवें।

दिशा शूल

सोम शनिश्चर पूरब बासा।
रवि शुक्कर पश्चिम के पासा॥
बुध मङ्गल उत्तर में बहे।
बृहस्पति दक्षिण-दिशामें रहै॥

दिक् शूल चक्र

<table>
<tr><td></td><td>पूरब
सोमवार, शनिवार</td><td></td></tr>
<tr><td>उत्तर
मङ्गल, बुध</td><td>दिशा शूल ले जावो बायें
राहु योगनी पीठ। सन्मुख लेवे
चन्द्रमा, लावे लक्ष्मी लूट॥</td><td>बृहस्पति
दक्षिण</td></tr>
<tr><td></td><td>रविवार शुक्रवार
पश्चिम,</td><td></td></tr>
</table>

आसन पर बैठनेका दिन, दिशा विचार तथा कूर्म चक्र

यह कूर्म चक्र को देख कूर्म के मस्तक पर आसन बिछाकर बैठने से मन्त्र यन्त्र तत्काल सिद्ध होता है। कूर्मचक्र में जितने स्थान हैं सबको शिरहो समझना चाहिये, जिस स्थानमें पूजन करना हो उसको नौ भाग करे फिर उस स्थान के नाम में अक्षर को कूर्म चक्रके अक्षर से मिलता हुआ जिस भाग में देखे उसको भी नौ भाग करे फिर पूर्व अक्षर में जो मात्रा होवे, उसी मात्रा के स्थानमें आसन बिछावे, इस चक्र के मध्य आसन बिछा है अ आ स्थान भी स्थान भी आसन बिछाने का है।

* कूर्म चक्र *

ईशान
पूर्व मुंह
अग्नि
क ख ग घ ङ
च छ ज झ ञ
दायाँ
बायाँ
श
ष
स
य
र
ल
अं
अः
अ
आ
इ
ई
ओ
औ
उ
ऊ
ए
ऐ
लृ
ॡ
ऋ
ॠ
ट
ठ
ड
ढ
ण
उत्तर
दक्षिण
दायाँ
बायाँ
प फ ब भ म
त थ द ध न
वायव्य
पश्चिम
नैऋत्य
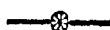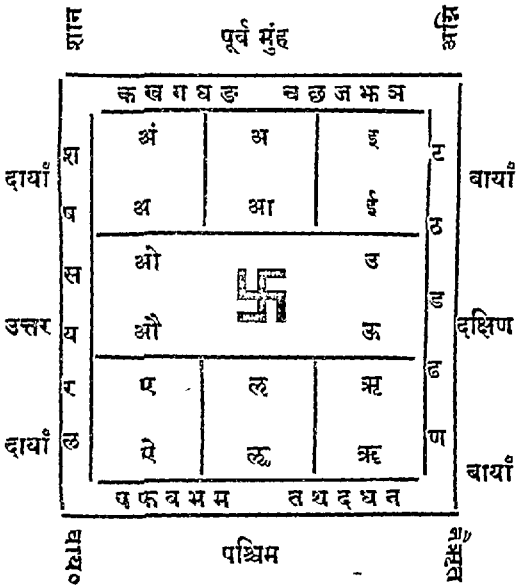
जो कोई शुभ कार्य की सिद्धि के लिये नीचे लिखे चक्रानुसार बैठे।

रविवार से कोई कार्य के लिये नीचे चक्रानुसार बैठे तो शीघ्र सिद्धि होय।

जिस कार्य को बहुत शीघ्र व सामान्य सिद्धि करना चाहे तो नीचे लिखे शनि चक्रानुसार बैठे। शनिवार से जपारम्भ कर पश्चिम मुख करके बैठे।

शनि चक्र।

योगिना	ईशान	पू० शनि अति निकृष्ट	आग्नेय	रवि उत्तम
शुक्र				
सामान्य	उत्तर	❋❋ ❋❋	दक्षिन	मंगल
गुरु उत्तम	वायव्य	पश्चिम	नैऋत्य	कनिष्ट

चन्द्र सामने रहने से बुध सामन्य।

जिस प्रकार का कार्य करना चाहे उसी ओर मुख कर बैठे नीचे लिखे योगिनी चक्र के अनुसार दिशा कर योगिनी को बिचार लेवें ।

ईशान ३०।८	पूर्व १।६	आग्नेय ३।११
उत्तर २।१०	बामै योगिनी सुख को दाता । दहिने धन अगणित भर लाता ॥ पीठ पिछाड़ी अमित दाई । सन्मुख दे मारण दिखलाई ॥	दक्षिण ५।१३
वायव्य ७।१५	पश्चिम ६।१४	नैऋत्य ४।१४

मन्त्र प्रकृति ।

अरि	साध्य	सिद्धि	सुसिद्ध
मन्त्र प्रकृति शत्रु हो तो कार्य को विगाड़े	साध्य होतो बने कार्यको विगाड़े देवें	सिद्धिहोतोसमय पाकर कार्य को वनावे	सुसिद्ध हो तो कार्य को वहुत शीघ्र वनावे

मन्त्र चार तरह की प्रकृति के होते हैं, जैसी प्रकुति हो उसी के अनुसार फल भी होता है। मन्त्र प्रयोग—बन्धन, उच्चाटन, विद्वेषण, मारण व संकीर्ण कर्मकी सिद्धिके लिये हूं पद का प्रयोग करे। छेदन में 'फट' पद का जप करे, अरिष्ट और ग्रह निवारण में 'हूंफट' पुष्टि आयन और बोधनमें 'वोषट्' अग्नि कर्म तथा देव कर्म में 'स्वाहा' या 'नमः शब्द का जप करना चाहिये।

मन्त्र का लिङ्ग निर्देश—तीन प्रकार के मन्त्र होते हैं। स्त्री लिङ्ग, पुलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग हैं बन्हियान्व (स्वाहान्त) मन्त्र स्त्री लिंग है। मन्त्र

के अन्तमें नमः है वे नपुंसक लिंग हैं और 'हूंफट वाले मन्त्र पुलिंग हैं। शांति करण व वशीकरणमें पुलिंग क्षुद्र क्रियाओंमें स्त्री लिंग और इससे अलग कर्मों में नपंसक जातिके मंत्रको जपना चाहिये।

मन्त्र भेद—१ वाचिक, २ उपांशु, ३ मानस यह तीन प्रकारके होते हैं। जिस मंत्र के उच्चारण को दूसरा सुनसके वह वाचिक होता है, जिसको कोई दूसरा न सुन सके और ओंठ हिलते रहें, उसे उपांशु कहते हैं और जिसके उच्चारणमें दांत ओंठ कुछ न हिले उसे मानस कहते हैं। अभिचार में मन्त्र को वाचिक रीति से जपना चाहिये, शांति तथा पुष्टिमें उपांशु और मानस मन्त्रका जप मोक्ष के लिये करना चाहिये।

माला निर्णय-मोहन वशीकरण मन्त्रोंको हीरे या मोती अथवा स्फटिक की माला से जप करे, आकर्षणमें गजमुक्ताकी माला से, विद्वेषण उच्चाटन मंत्रोंको बकोड़े की माला या काले ऊनकी मालासे

मारण में अपने से मरे हुए गदहेके दांतोंकी माला से, धर्म कामार्थं सिद्धिके लिये शङ्खमणि, स्फटिक अथवा मूंगे की माला से जपना उत्तम है। सब कामार्थ सिद्धि के लिये पद्माक्षकी माला सर्वोत्तम गिनी जाती है। सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाली रुद्राक्ष की माला श्रेष्ट है।

माला डोर निर्णय—शांति और पुष्टिमेंकमल की तन्तुके डोर बनाकर गूंथे, आकर्षण व उच्चाटन में अश्व पुच्छ केश से गूंथे, मारन में मनुष्यों के नसों का डोरा या ऊनका डोरा बनाकर गूंथे। और बहेड़े आदि माला को रूई के डोरा से ही गूंथना श्रेष्ठ है।

दानों की संख्या—मोती या स्फटिकादि की माला २७ या ५२ दाने, बहेड़े की माला में १५ दाने मूङ्गा तथा रुद्राक्षकी माला १०८ दाना उत्ततोत्तम कहा जाता है।

जपमें अंगुलियों का नियम-शांति कर्म, वशी करण तथा स्तम्भन में तर्जनी व अँगुली व अँगूठेके द्वारा माला फेरे, आकर्षणमें अंगूठे और अनामिका से, विद्वेषण उच्चाटन में अँगूठे व तर्जनी, और मारण में कनिष्ठ व अँगूठे द्वारा माला फिरावे।

कलश विधान—शांति कर्ममें नवरत्न युक्त स्वर्ण कलश स्थापन करे, यदि स्वर्णका न होवे तो चाँदी व तांबा कलस काम में लावे। मारण में लोहे का कलश, उत्पादनमें काँचका, मोहन में रूपेका, उच्चाटन यथा वशीकरणमें मिट्टीका कलश स्थापित करे। इनमें से यथा कलश न मिले तो तांबा का ही सर्व श्रेष्ठ है।

हवन विधान—शांति कर्म में दूध, घी, तिल व गूलर पीपलकी लकड़ी से होम करे, अमरवेल और खीरका होम करे.। पुष्टिकर्ममें घी और बेलपत्रका अथवा चमेली फूलसे हवन करे, कन्या की इच्छा करने वाला खीरसे हवन करे, लक्ष्मीको कमलगट्टा

दधि अथवा घृतलुप्त अन्नका हवन करे, आकर्षणमें चिरोंजी व बिल्वफलका हवन करे, और वशीकरण में राई लवन से होय करे, उच्चाटन में काक पङ्ख हवन करे।

मोहनमें धतूरेके बीजोंसे, और मारणमें विष मिले हुये रुधिर से हवन करना चाहिये।

होम मुद्रा—मुद्राहीन आहुतिको देवता ग्रहण नहीं करते इसलिये मुद्रा युक्त हवन करना चाहिये जो दुर्बुद्धि अज्ञान से मुद्रा हीन होम करते हैं वह स्वयम् भ्रष्ट हो जाते हैं होममें मुद्रा तीन प्रकारकी होती है। १ शुकरो, २ हँसी व ३ मृगी, जो हाथ को सिकोड़कर आहुति डाली जाती है उसेसूकरी मुद्रा कहते हैं। जो कनिष्ठाको छोड़कर तीन अँगूली व अँगुष्ठ सहित आहुति डाली जाय उसे हँसी मुद्रा कहते हैं। जो कनिष्ठा और तर्जनीके योगसे आहुति डाली जाती है उसे मृगी मुद्रा कहते हैं।

ऋणी धनी का विचार

नीचे लिखे चक्रसे वर्गोंके स्वामी तथा शत्रुता मित्रताका ज्ञान होगा।

संख्या	वर्ग नाम	वर्गों के अक्षर	शत्रु	मित्र	उदासिन
१	गरुड़	अ इ उ ए	सर्प	श्वान	सिंह
२	बिलाव	क ख ग घ ङ	मूषक	सर्प	श्वान
३	सिंह	च छ ज झ ञ	मृग	मूषक	सर्प
४	श्वान	ट ठ ड ढ ण	मेष	मृग	मूषक
५	सर्प	त थ द ध न	गरुड	मेष	मृग
६	मूषक	प फ ब भ म	विलाव	गरुड़	मेष
७	मृग	य र ल य	सिंह	विलाव	गरुड
८	मेष	श ष स ह	श्वान	सिंह	बिलाव

इस कोष्ठकके वर्गाक्षरों में अपने तथा दूसरेके नाम के प्रथम अक्षर देखकर वर्ग संख्या निकाल दुगुना करके दूसरे के असल वर्गाङ्क से गुणा करे फिर ८ से भागकर शेष अङ्क में प्रबल निर्बल की समता करें।

उदाहरण

जैसे रामचन्द्र सेठके पास नौकरी आदि मिलने की आशासे विश्वनाथ नामक मनुष्य मंत्रादिक द्वारा उपाय किया चाहता है। रामचन्द्रका (र) वर्गाङ्क ७ है, उसके दुगनाकरनेसे १४ हुआ, और विश्वनाथ का (व) वर्गाङ्क ६ है, उसको दुगना करने पर १२ हुआ। आगे नीचे अङ्क हिसाब द्वारा ज्ञान होगा।

रामचन्द्र	विश्वनाथ
७×२=१४	६×२=१२
६ विश्वनाथ का अङ्क	७ रामचन्द्रका अङ्क
८) २० (२	८) १६ (२
१६	१६
शेष ४ प्रबल	शेष ३ निर्बल

इसरीतिसे रामचन्द्रसेठ ऋणी हैं और विश्वानाथ की आशा रामचन्द्र पूर्ण करेगा। इसमें यह देखना चाहिये धनी ऋणी दोनों एक वर्ग हों तो श्रेष्ठ में धनी का वर्ग प्रबल हो तो अतिश्रेष्ठ है। ऋणी का वर्ग प्रबल हो तो कार्य सिद्धिमें बिलम्ब हो।

मंत्रादिक सिद्ध नियम व पूर्व कर्म काभेदः—

साधक किसी यन्त्र या तन्त्र में अविश्वास न करे क्योंकि ऐसा करनेसे फल विपरीत होता है। भीरु व पापी व्यक्ति इस कार्य को न करें, क्योंकि उनके मनचञ्चल रहने के कारण मतिभ्रम होकर अनेक स्थानों में भय का संचार होता है।

प्रथम स्नानादि आह्निक कर्मोंसे निवृत होकर एकान्त स्थानमें स्थिर चित्तसे जो मन्त्र जपना हो उसे भोजपत्र पर केशर से लिख मुखस्थ करलें साधकजबतकमंत्रक्रियादिकरे तबतकअरवा (आतप) चावल व मूंगकी दाल अथवा फलमूल एक समय आहार करे और पृथ्वीपर शयन करता रहे। अपना

आचरण शुद्ध रखते हुए ब्रह्मचर्यसे रहे, और अपने कर्मोंको किसीसे न बोले। फिरगुरुकी आज्ञा लेकर षटकर्मानुसार मंत्रजप सिद्धकरनेको पवित्र स्थानमें आसनादि लगाकरबैठे,तथा कलश पुष्प सुगन्धादिक धूप दीप नैवेद्य धरके वर्ण मूर्ति सम्मुख अनुभव करे व दीपक शिखा देखे गुरु को ध्यान व मस्तक पर समझ स्थिर चित्त से जपा-रम्भ करे।

षट् कर्मानुसारअथवालिखित कर्मानुसार रात्रि में जाकरमूलादि या कोई वस्तुको लाना या लेजाना हो तो अपने हाथोंसे मग्न होकर ग्रहण करे और आते जाते समय पीछे की ओर न देखे इसका कारण यह है कि रात्रिके समय में जाने से कोई बाधा (टोक) न पड़ेगी, मग्न होकर आने जानेसे भूत प्रेताद्रिक नहीं रोकसकता है और आते जाते समय पीछे ताकनेसे जो सिद्धि देने वाला कार्य पूरक कर्त्ता पीछे २ आते हैं पीठ पीछे देखनेसे वह लौट जाते हैं।

सहज स्वभाव सुकुमार अथवा स्त्रियों के लिये सुविधा यह है कि जहाँ दोपहररात्रिकेसमय लिखा हो वहाँ दोपहर दिनकोकरे, और जहाँ नग्न होनेका आवश्यकता है तहाँ विना सिलाया हुआ एक वस्त्र परिधान कर केवल काछेको हीखोले। जहां मनुष्य की खोपड़ी लिखा है वहाँ आधी नारियलको काम में लावै जहाँ चौराहे में बैठकर क्रिया करना लिखा हो वहां घरही में गोबर मिट्टी का चौकोर चौका लगाकर एक पूरबसे पश्चिम दूसरा उत्तरसे दक्षिण लकीर खींचकर कार्य साधन करे। और जहाँ पर श्मशान में बैठकर कुछ करनाहो वहाँ श्मशान-भस्म लाकर जप-स्थानमें छींटकर आसन लगाकर मंत्र जपके अपनी मनः कामना पूरी करे।

❀ इति प्रथमोध्याय ❀

इस पुस्तक जहाँ पर मन्त्रों में "अमुक" लिखा है वहाँ पर उसका नाम उच्चारण करे जिसपर प्रयोग करना चाहता हो।

॥ श्री ॥

अथ कामाक्षा मन्त्र सार

द्वितीय अध्याय

* शान्ति प्रकरण प्रारम्भ *

सर्व ग्रह निवारण मन्त्र

ओ नमः भवे भास्कराय आस्माकं अमुक सर्व ग्रहणं पीड़ा नाशनं कुरु २ स्वाहा ।

विधि--पहिले मंत्रको १०८ जप सिद्ध करे फिर आक, धतूरा, ओंगा, बरगद, अशोकओर दुर्वाकीजड़ और शमी, आम्र, डुम्बरक पत्ता और चावल, चना मूङ्ग, गहूं, जौ तिल, श्वेत सरसों, कुश, मधु, गोमूत्र दुग्ध औरघृतइनसबोंको एकत्रकर शनिवार को संध्या समय उपरोक्त मन्त्रसे विधनानुसार १०८ मंत्र पढ़ आहुति देवे तो सर्वप्रकारके ग्रह, पीड़ा, भूतोपद्रव

एवं महापातक दोष महा दारिद्रादिका नाश होकर सुख शांति मिले ।

सर्व विघ्न निवारण मन्त्र

ॐ नमः शांते प्रशांते ॐ ह्रीं ह्रीं सर्व क्रोध प्रशमनी स्वाहा ।

विधि--इस मंत्र को नित्य इक्कीस बार पाठकर मुखमार्ज्जन करने से उसके घरके सब प्राणी एवं बंधु आदि निर्विघ्न रहते हुए सदाशांति पूर्वक रहते हैं और संध्या समय पीपल वृक्ष की मूलमें शर्बत डालकर धूप दीप जलाया करे ।

ग्रह बाधा निवारण मन्त्र

ॐ शं शं शिं शीं शुं शूं शें शैं शों शौं शं शः स्वः सं स्वाहा ।

विधि-बारह अंगुल प्रमाण पलाश कष्ठका कीला बनाकर उपरोक्त मन्त्रसे एक हजार बार अभिमंत्रित करके वह कीला जिस ग्रहमें गाड़ा जाय उस घरमें

किसी प्रकारकी विघ्न बाधा न होय। और इसी मंत्र के अनुसार (हुं) के बारहखड़ीमें पहले ओंसं योगकर फिर (क्ष) की बारहखड़ी हुं अन्तमें योग कर नित्य तीनबार पढ़कर ताली बजानेसे भूत, पिशाच, सिंह व्याघ्र चोरादि का भय दूर होता है।

ग्राम्य बिघ्न निवारण तन्त्र

रबिवार या मंगलवार को बन्दरका हाड़लाकर धूप दीप से पूजाकर गांवके बाहर गाड़ दे और नित दिन पूजा करे तो गॉवकी विपत्ति दूर होय।

सर्व द्रोष दूर करण तन्त्र।

शनि दिन संध्याके समय, घर कुम्हार के जाय।
चाक पै चौंसठ दीपको, उल्टी चाक फिराय॥

फिर सब दीपकमें घृतकी बाती जलाकर रोगी को संध्या समय उत्तर मुख बिठाय उतारा करे और भात दूध शक्कर रोगीसे घुलाकर चौराहे पर धरे तो रोग दोष नाश होय।

सर्व दोष नाशक तन्त्र।

ॐ श्रीं ह्री फट् स्वाहा। आक और अरंडकी जड़ मंगाकर सिन्दूर लगाके धूप दीप दिखलावे, सात वार उपरोक्त मंत्र पढ़ बांये हाथ से उठाकर रोगीको दिखा कर घर या आंगन के कोनेमें गाड़े तो सब तरहके रोग-दोष मिटे

उतपितृ दोष निवारण मन्त्र

होय मूल नक्षत्र जब, मूल ताड़ संगवाइ।
उतपितृके दोप सव, लावत ही चल जाइ॥

भूत प्रेत ग्रह निवारण मन्त्र

ॐ नमो मसाणं वरसिने भूत प्रेतानां पलायनं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मंत्रको हजार वार जप करके सिद्ध करने के उपरान्त भूत लगा हो उसे सात वार झारे।

भूत प्रेत ग्रस्त रोगीका प्रथम झारा।

सूत्र वनावें वन वीच, आनन्द कन्द रघुवीर।
लखे सिय सन्मुख महं होय धीर मति धीर॥

तेही समयँ लषण तहं आये।
पूछहिं राम लषण बुलाये॥
बोले हरि कवन कारण तुम भाई।
इत आवत बहुं विलंब लगाई॥
लषण बोले गयउं दूरि पहारा।
देखेउं तहाँ भूत दल भारा॥
तहं एको मानुष न दिखाये।
निज आश्रम को छोड़ पराये॥
इतना सुन हरि बान चलायउ।
भागे भूत आनन्द गिरि भयउ॥
अमुकके अंग नहीं भूत नहीं भार।
रामके नामसे, भई समुद्र पार॥
आदेशश्री श्रीराम सीताकी दोहाई

इस मन्त्रको पढ़कर तीन बार फूंक मारना चाहिये।

दूसरा झारा

उत्तर बिराजे केदारनाथ नामके राजा।
हादिक शशपीर पुकार किये पूजा ड

शशापीर मक्का मदीना के पीर।
काहे आये हिन्दू के मन्दिर॥
हिन्दू मन्दिर से निकाल गुन तोर।
अपनानामरखोतो अमुककोजल्दीछोर।

अपना मन्त्र से यदि कुछ उपकार न मालूम हो तब इसमें तीन वार झारे।

तीसरो मन्त्र

भूत सबको भई काहे आनन्द अपार।
जिसको गुमान से अमुको को भार॥
हमरे सांईको पाऊं करो सलाम हजार।
जाते होय भूत आवेश किनार॥
जितनी मेथी छोट वड़े, और आदि से अंत।
तिसके धूम्र गन्ध ते, पल में भूत भगंत॥
अमुक अङ्ग भूत नहीं, यह मेथी के लाय।
उठी के आगे तुरत क्षणमें जाय पराय॥
आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई।
आज्ञा हाड़ि दासी चन्डी की दोहाई॥

थोड़ी मेथी लेकर रोगी के देह में सात बार मंत्र पढ़ते हुये छुआकर अग्निमें देकर मुंह के सामने धुआं देवे।

चौथा जीरा मन्त्र

जीरा २ महाजीरा जिरिया चलाय।
जिरियाकी शक्तिसे फलानी चलि आय॥
जीये तो राम टले मोहे तो मशान टले।
हमरे जीरा मंत्रसे सुमुक अङ्गभूतचलजाय
हुक्म पाण्डूआ पीर की दोहाई।

इस मन्त्र को भी ऊपर लिखे नुसार प्रयोग करे।

पांचवां सरसो मन्त्र।

ऐ सरसों पीला सफेद और काला।
तू चलना फिरना भाईसा चाला॥
तोहरे बाण से गगन फट जाय।
ईश्वर महादेव के जटा कटाय॥
डाकिनी योगिनी व भूत पिशाच।
काला पीला श्वेत सुसाँचा॥

सब मार काट करूं खेत खरिहान।
तेरे नजर से भागै भूत ले जान॥
आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई।
आज्ञा हाड़ि दासी चन्डी दोहाई॥

इस मंत्र से थोड़ी सरसो को तीनवार पढ़कर रोगी को वही सरसों मारे और थोड़ा अग्नि में डाल धूनी देवे।

चुड़ैल प्रेतिनी निवारण मन्त्र

वैर वैर चुड़ैल पिशाची वैर निवासी।
कहुं तुझे सुन सर्व नाशी मेरी गांसी॥
वर बल वैर करे तूं कितना गुमान।
काहे नहीं छोड़ती यह जान स्थान॥
यदि चाहै तूं रखना अपना मान।
पल में भाग कैलाश लै अपनो प्रान॥
आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई।
आदेश हाड़ि दासी चण्डी की दुहाई॥

यह मंत्र दशहरे में १०८ बार जप कर सिद्ध करे फिर रोगी को इक्कीसबार मंत्र पढ़कर फूंकमारे तो डाइन चुड़ैल किच्चिन आदि भाग जाय।

डाइनादि के नजर का मंत्र

हरि हरि स्मरिके हम मन करूं स्थिर।
चाऊर आदि फेंक के पाथर आदि वीर॥
डाईन दुतिनी दानवी देवी के आहार।
बालक गण पहिरे हाड़ गलहार॥
राम लषण दूनों भाई धनुष लिये हाथ।
देखि डाईनी भागन छोड़ शिशु माथ॥
गई पराय सब डाईन योगिनी।
सात समुद्र पारमें खावे खारी पानी॥
आदेश हाड़ि दासी चण्डी माई।
आदेश नैना योगिन के दोहाई॥

ऊपर लिखे अनुसार नजर बलाय को झारें

भूत प्रेतादि के दोष निवारण तंत्र

शनिवार के दिन नाव (नौका) का कांटा लावे और घोगे का नाल मढ़ाकर अंगूठी या बाला बनवा कर हाथ में पहिरे तो सर्व प्रकार वायु दोष पूर होय शान्ति मिले।

भूतादिक भगानेके (चुटकुले) तन्त्र

(१) हींग और लहसुन दोनों को पीस कर आंख नाक में लगाते ही भूत भाग जाता है।

[२] घुग्घू के सुखाये हुये मांस की धूनी देने से भूत प्रेत सब भाग जाते हैं।

[३] गदपूरना, नीम के पत्ता, सरसों और घृत को रोगी के सामने अग्नि पर फेंक नाक में धूनी दे तो भूत पिशाच दूर भाग जाता है।

[४] सफेद चन्दन, सेंधा लवण, कूट, वच, सरसों तैल, घृत और भैंसकी चर्बी इन सबों के द्वारा धूप तैयार कर रक्खे, जब किसी तरह की अपदेवता से पीड़ित मनुष्य के संमुख जलाने से सर्व दोष दूर होकर सुख शान्ति मिलती है।

भूत वावा निवारण कवच

(१) रविवार पुष्य नक्षत्र में सफेद अकवन पेड़का जड़ लेकर भुजा में बांधे ।

(२) ज्येष्ठा नक्षत्र में अनार वृक्ष की टहनी बालक के कण्ठ में बाँधे तो भूतादिक ग्रह निवारण होता है ।

(३) रविवार के दिन धतूरे की जड़ लाकर बाहुमें बांधे तो भूत भाग जाय ।

ब्रह्म राक्षसादिक दूर करण तन्त्र

बिनौला, गोरखमुंडी और गोखरू को गौमूत्र के साथ पीसकर धूनी देवे । और श्वेत मुर्गा या श्वेत कबूतर जिस घरमें रहते हैं वहां भूतादिक व जमागी का भय नहीं रहता ।

टोना दूरि करण मंत्र

ॐ काकलक कपाट बज्र परबत लङ्का अलक पलङ्का फलक फलीक यती की वाचा गुरू की साँचा सत्यों ।

एक कपड़ेको एरंडके तेलमें भिगोकर जलावे और नीचे एक बर्तनमें पानी भरके धरे, फिर उस पलीतेसे तेल टपकावे व, २१ बार पढ़कर फूंक देवे।

आपत्ति टालन मन्त्र

शेख फरिद् की कामरी निशि अस अन्धियारी तानों को टालिये अनल ओला जल विष।

इस मन्त्र लो पढ़ ताली देने से आग पत्थर पानी का भय दूर होता है।

भूतादिक दोष काटने का वाण मन्त्र

तह कुछ इलाही का वान। कूडूम की पित्ती चिरवान। भाग भाग अमुक अङ्ग से भूत मारूं धुलावन कृष्ण बर पूत। आज्ञा कामरू कामाख्या हाड़ि दासी चण्डी दोहाई॥ एक मुष्ठि धूल को तीन बार मन्त्र पढ़कर मारै।

रोगादिक निवारण मन्त्र प्रारम्भ

सिर पीड़ा झारण मन्त्र

ॐ नमः आज्ञा गुरुको केशमें कपाल कपालमें भेजा बसै भेजीमें कीड़ा कीड़ा करैं न पीड़ा कञ्चनकी छेनी रूपेका हथौड़ा पिता ईश्वर गाड़ै इनको आपे श्रीमहादेवतोड़ै शब्द सांचा फुरो मंत्र ईश्वरोउवाच ॥

इसमंत्रको १०८ बारपढ़कर जपकरैंफिरराखको सातबार पढ़करकाटे

दूसरा मन्त्र

लङ्कामें बैठके साथ हिलावै हनुमन्त ।
सो देखि राक्षसगण पराय दूरन्त ॥
बैठी सीता देवी अशोक बनमें ।
देखि हनुमान को आनन्द भई मनमें ॥
गई उर विषाद देवी स्थिर दरशाय ।
इसीसें "अमुक" के सिर व्यथा पराय ॥

अमुक के नहीं कछु पीर नहीं कछु भार ।
हनुमत किये सात समुद्र पार ॥
आदेश कामाख्या हाड़ि दासी चण्डीकी दोहाई ।

सिर दर्द वाले व्यक्तिको दक्षिण मुख बैठाकर मस्तकको हाथ से पकड़ इक्कीस बार झारै तो मस्तक सिर पीड़ा दूर हो ।

सिर पीड़ा निवारण मन्त्र

हजार घर घालै एक घर खाय, आगे चले तो पीछे जाय । फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

हाथसे मस्तकको पकड़कर सात बार फूंक देवे तो अरोग्य होय ।

अधकपारी झारनेका मन्त्र

शङ्कर शङ्कर खोजा जाई ।
शङ्कर बैठे जङ्गल जाई ॥
भूत बैताल योगिनी नचाय ।
सब देवनके जय जय मनाय ॥

ब्रह्मा विष्णु पूजे जाय।
अधकपारी पीड़ा दर्द छुड़ाय ॥१॥

इस मन्त्रको दशहरेमें दस सौ बार जव सिद्ध करके आधा लोटा जल लेकर जिस तरफ दर्द हो उस ओर १३६ बार मन्त्र पढ़के धोवे और उस पानीको चौराहे पर फेंके।

आधा शीशीका अन्य मन्त्र

ओं नमो बन में बिआई बदरी।
खाय दुपहरिया कच्चा फल कन्दरी॥
आधी खायके आधी देती गिराय।
हूँकत हनुमन्तके आधा शीशी चलिजाय।२।

रोगीको सम्मुख बिठाय छूरीसे सात रेखा भूमि पर खींच मन्त्र पढ़े।

अन्य मन्त्र

कौन मरता कूडूम करता बाटका घाटका हांक देता पवन सुमिरिता योगी यती अचल अचलः॥३॥

अन्य मन्त्र

ॐ नमः आधा शीशी टारी, हुंहुंकारी दुपहरी प्रचारी अंखिया मूँद मुखपारल डारी, अमुक पीर रहै तो दोहाई गौराकी आदेश फुरो ओं ठं ठं स्वाहा॥४

इन दो मन्त्रोंमेंसे कोई एक मन्त्रसे मस्तकको पकड़कर २१ बार मन्त्र पढ़कर झाड़े और सेन्धा नमक पानीसे घिस कर लगा देवे।

नेत्र ज्योति तथा फूली मन्त्र

शर्य्यातिं च सुकन्यांश्च च्यवसं शक्र मश्विनौ।
एतेषां स्मरण मात्रेण नेत्र नेत्र रोमान् प्रणश्यति॥

इस मन्त्र द्वारा भोजनोपरान्त जल पढ़ पढ़कर नेत्र पर सातबार छींटा देवे। फूली प्रातःकाल सात बार जलसे झारे तो फूली माड़ा आरोग्य होय।

नयन फूली काटन मन्त्र

ओं हजार ज्वाला उज्जोहार धः धः

रवि या मङ्गलको प्रातःकाल २२ बार मन्त्र पढ़ चाकूसे भूमि पर रेखा काटे।

अन्य मन्त्र

उत्तर दिशि कूल कामाख्या सुन योगीकी बाछ इस्माय योगीकी दुइ बेटी एकके सिर चूल्हा दूसरी काटै माड़ी फूला लोना चमारी दुहाई शब्द साँचा फूली काछा पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरवाचा।

इस मन्त्रको २१ बार पढ़ २ चाकूको भूमिमें मारे सात दिन तक झाड़े।

आंख आनेपर झारण मन्त्र

ॐ नमो वनमें ब्याई बानरी जहाँ २ हनुमान अंखिया पीर कषकारो गहिया थने लाई चारिडजाय भस्मन्तन फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।

सात बार पढ़ कर झाड़े तो आंखकी पीड़ा जाय।

नेत्र रोग पीड़ा निवारण मन्त्र

ॐ नमः झिलमिल करे गरल भरी तलइया।
पच्छिम गिरि से आई करन भलइया॥

तहं आय बैठेउ बीर हनुमन्ता ।
न पीड़ै न पाके नहीं फूटन्ता ॥
यती हनुमन्त राखे हीड़ा ।
नीम के पल्लव से सात बार मंत्र पढ़ के सात दिन तक झाड़ै ॥

रतौंधी निवारण मंत्र

ॐ भाट भाटिनी निकली कहे चलि जाई उसपार, जाइब जाइब हम जाऊं समुद्र पार । भाटिनी बोली हम बिआइब उसकी छाली बिआइब हम उपस माछी पर मुंडा मुंडा अंडा सोहिला तारा २ अजय पाल राजा उतर रहे पार, अजय पाल पानी भरत रहे मसकदार यह देख बाबा बोलाउ गोड़िया मेला उजाड़ तैके हम अधोखी जांय रतौंधी ईश्वर महादेव के दुहाई उतरि जाय ।

डाढ़ कीड़ा मसूड़े की पीड़ा का मन्त्र

ॐ नमः आदेश कामरू देश कामाख्या देवी, जहाँ वसै इसमाईल योगी । इसमाईल योगीने पाली

गाय, नित दिन चरने बन में जाय। बन में सूखा घास पात जो खाय, उसके गोबर ते कीड़ा उपजाय। सात सूत सुतियाला, पुच्छि पुच्छियाला। देह पीला मुख काला। वह अन्न कीड़ा दन्त गलावे मसूढ़ गलावे, डाढ़ मसूड़ करै पीड़ा तो गुरुगोरखनाथ की दोहाई फिरै।

इस मंत्र से तीन लोहे के कांटा को सात बार मंत्र पढ़कर काष्ठ में ठोंके।

अन्य—ओं नमः आदेश गुरुको सवारीमें शीशी शीशी में मीच, मीची में सूड़ा मसूड़ा में पीड़ा कीड़ा मरे पीड़ा टरे फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

इस मंत्र से दो लोहे के कांटो को लेकर मंगल के दिन सात बार झारे और एक कांटा को कूप में डाल दूसरा खट्ट पानी से भिगो कर नेवमें गाड़ो तो सब कीड़े मरे तथा पीड़ा जाय।

दन्त पीड़ा निवारन मन्त्र

आग बांधो अगिया बैताल बांधों सो खाल

विकराल बांधो सौ लोहा लोहार बांधो वजर अस
होय वज्र घन दांत पिराय तो महादेव की आन।
अंगुलियों से तीन बार मंत्र पढ़ झारे

❀ दाँत का दर्द दूर होनेका मंत्र ❀

काहे रिसियाये हम तो अकेला।
तुम हो बत्तीसबार हम जोला॥
हम लावे तुम बैठे खाव।
अन्त काल में संगहिं जाव॥

मुख धोने के समय सात बार मंत्र पढ़ कुल्ला करे तो पीड़ा जाय और दाँत न हिले।

निनाइ घृत मन्त्र

गौ घृत तुम अपार गुणाकर।
ऋषि मुनि सब जानत व्यवहार।
आदेश नरसिंह के चलिजाय॥
यह घृतसेमृत हो अमुकनिनाय।
आदेश देवी कामाक्षा हाडि॥

गौ घृत को तीनबार मंत्र पढ़ जीभ पर लगाने में निनाय आरोग्य होय।

अन्य-ओ नमः तड़भ उड़ भड़त तेलकाबाती तेल जले गलै वाई नर है निनाइ रहे तो यती हनुमान की दोहाई।

सात बार मन्त्र पढ़ विभूति को छूरी से काट कर देवे।

कण्ठ वेठल निवारण मन्त्र

ओं नमः कण्ठवेठल तुम दुम दुमवालो सिरपर जड़ी बजर की ताली। गोरखनाथ हुकत आये। बढ़ती बेल कूं तुरत घटाये। तनिक बची उसको सुखाये। घट गई बेल बढ़े ना रोग पाके फुटे पीड़ा करे तो गुरु गोरखनाथ की दोहाई।

इस मन्त्र से सात दिन मूरछल से सात मंत्र पढ़कर झारे।

गरल रोग का तैल मन्त्र

आकाश तेल पाताल तेल तेल,मुंहमें बापलगाय।

तेल शियाल सिंदूर सिद्धी हो के फिराय। आदेश देवी मनसा माई। आज्ञा विषहरी राईकी दुहाई।

इस मन्त्र से तीन बार नारियल तैल पढ़कर गरल स्थान में लगावे।

अन्य-आदेश देवी मनसा को मछरी को पीठ हुई कुबरी। नहीं रक्त नहीं पीप नहीं कुसरी। वन शिलाय के तीन रोआ। यह तेल मन्त्र स्वर्ग के कुंआ। आदेश विषहरी राई की दोहाई फिरै।

इस मन्त्र से सात बार शनिवार को नारियल तैल मन्त्रित कर लगावे।

गरल रोग पर हल्दी मंत्र

बड़ी बड़ी हल्दी पतली पतली देश।
गल फांसी देइ करों सब विष शेष॥
विषना रहे विषहरि के आदेश।
वेगि जाय विष मनसा के आदेश॥

तीन प्रति कच्चा हल्दी को अभिमन्त्रित कर पीस के गरल रोग पर लगाने से अल्प दिनों में आरोग्य लाभ होता है।

गरल पर नींबू मन्त्र

आदेश देवी मनसा कागजी निबुआ रस से भरी। तेरे गुणन से विष जाय झरी। ऊपर न जा विष। रह तूं मुंडमूलाय। विषहरिके दुहाई से चल जाय।

नींबू को तीन बार मन्त्र पढ़ कर गरल स्थान पर लगावें।

कखरबाई का मन्त्र

ओं नमः कखरबाई की भरी तलाई। तहं बैठे हनुमन्ता आई। पाके न फूटे न पिराय चलै चलै वाल यति सहाय गुरु गोरखनाथ दोहाय।

इस मन्त्रसे २१ बार नीमकी डाली से ३ दिन झाड़ै

जानु व पसली, डमरू वायु तीनोंका एक मंत्र।

ओं नमो खंखारी खंखारा कता गया सवा लाख परवतो गया सवालाख परवतो जाय काह करेगा सवाभार कोइला करेगा सवाभार। कोइलाकर कहा करेगा हनुमंत वीरका नवचन्द्रहास गढ़ेगा नवचन्द्र-

हास खड्ग गढ़िके काहे करेगा जानु वहमरू पसुली वाईकाट कूट नोना समुद्रपार फेंकेगा। गुरूकीशक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो बाचा ।

इस मन्त्र द्वारा सिन्दूर तिल तैल से तीर के सहारे झारै । पहले हजार मन्त्र जप सिद्ध करे ।

ऊबा डबका का मंत्र

ओं नमः खङ्खारी खङ्खारा, कहाँ गया सवा लाख पर्वतो गया । सवा लाख पर्वतो जाई काहे किया, लड़की कटाया । लकड़ी कटाई काहे किया,कोइला कराया, कोइला कराई काहेकिंया, छुरा गढ़ाया छुरा गढ़ाई काहे किया । ऊबा डबका हाड़ गोड़ कटाया गोड़ काटि काह किया कारी कमरिया लपेट समुद्र पार फेकाया । शब्द सांचा फुरो मंत्रो इश्वरोवाचा ।

पोलिया का मंत्र

ओं नमः आदेश गुरु को श्री राम सर साधा लक्ष्मणसाधा वाण कालापीला रीतानीली थोथापीली पीला पीला चारो गिर जहिं तो श्री रामचन्द्रजी

रहे नाम हमारी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा ।

सात शनिवार पीतल के कटोरा में पानी ले सुई से सात बार झारै ।

रोघन वायुका मन्त्र

ओम् नमो कामरू देश कामाख्या देवी जहां बसे इस्मायल योगी । इस्मायल योगी के तीन बेटी, एक तोड़े एक पिछौड़े एक रींधन वायु को मोहर शब्द ।

मङ्गलवार को मणियार (मतिहार) के मुरगीसे २१ बार झारे ।

पेट व्यथा वायुगोला पिल्ही का मंत्र

ओम्नमो कालो कङ्कालिनीनदीपार बसैइस्माल योगी लोहे का कछौटा काटि २ लोहे का गोला काट काट तो शब्द सांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा ।

इस मंत्र से रविवार मङ्गल को चाकू से भूमि पर रेखा काटके झारै ।

उदर पीड़ा झारण मंत्र

ओ नुन नुन तूं सिंधु नून सिंधुवाय।
नुन मंत्र पिता महादेव रचाया॥
महेश के आदेश मोही गुरुदेव सिखाया।
गुरु ज्ञान से हम देऊं पीर भगाय॥
आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई।
आदेश हाड़ि सादी चण्डी की दोहाई॥

तीन अँगुली से सेन्धा नीमक लेकर तीन मंत्र पढ़ खिलावे।

नाड़ा (धरन) बैठने का मंत्र

ओऽम नाड़ी नाड़ी नवासी नाड़ी, बहत्तर कष्ठा चल आगे टिके न कोष्टा, चले नाड़ी रक्षा करै यती श्री हनुमान की आन।

नौ पोरका एक बांस लेकर नाभिपर रख बांस के भीतर सात फूंक मारे।

कर्ण रोग झारण मंत्र

बनरा गांठि बनरी तो दांट हनुमान अकंटा

विलारी बाघिनी थनैला, कर्णमूल जाई श्रीरामचन्द्र बानी जलपथ होई । सातबार झारे विभूति से ।

अन्य—ॐ कनक पर्वत पहाड़ धुंधुआर धार घुस लेकर डार २ पात २ झार २ मार हुंहुंकार ओं क्रीं क्रीं स्वाहा ।

सर्प बांबी की मिट्टी को इक्कीसबार मन्त्र पढ़ लगादे कर्ण रोग शान्त हो ।

घिनही झारण मन्त्र

इहर चलो भेहर चलो लङ्का छांड़ी विभीषन आन चलो जल्द चल जल्द चल मन्त्र फुरो इश्वरो वाच सातबार झार कर देवे ।

मृगी का मंत्र

ओं हलाहल सरगत मंड़िया पुरिया श्रीरामजी फूंके मृगी वाई सूखे सुख होई ओं ठः ठः स्वाहा ॥ यह मंत्र लिख कंठ में बाधे ।

बवासीर का मंत्र

ओं नमो आदेश कामरू कामाक्षा देवीको भीतर

बाहर में बोलूं सुन देकर मन तूं काहे जलावत केहि कारण ।

रसहित पर तूं डूमर में विख्यात ।
रहे ना ऊपर अमुक के गात ॥
नरसिंह देव तोह से बोले बानी ।
अब झट से हो जा तूं पानी ॥

अज्ञा हाड़ि दासी फुरो मंत्र चंडीउवाच लगाता १५ या २० दिन तक सुबह और शाम को तीन बार मंत्र पढ़ कर झाड़ै ।

अन्य-ईसा ईसा ईसा कांच कपूर चोरके शीशा अलिफ अक्षर जाने नहीं कोई । खूनी बादी दोनों न होई दुहाई तख्त सुलेमान बादशाह की ॥

एक लोटा पानीको तीन बार मंत्र पढ़कर आब दस्त लेवे, तो बवासीर आराम होय ।

अन्य—खुराशानकी टोनी साव खूनी । वादी दोनों जाय इमती चल डमती चल स्वाहा ॥

लाल डोरा में तीन गाठ लगाकर २१ बार मंत्र पढ़

जिस ओर ज्यादा तकलीफ हो उस ओर पैर के अंगूठे में बांधे। और तीन मंत्र से जल पढ़कर आवदस्त लेवे।

अन्य—ओं छइ छुइ छलक छलाई आहुं आहुं क्लं क्ला क्लीं हुं।

सातबार मंत्र से जल पढ़कर आवदस्त लेव तो अर्श (बवासीर) आराम होय।

फूका बाघी का मन्त्र

बनमें ब्याई अञ्जनी जाय अञ्जनी पूत हनु-मन्त ने इरुवा देरुवा जलि हो अन्त॥

सात ठीकरी से सातबार तीन दिन तक झारै

अदीठ का मन्त्र

ॐ नमः नखकटा विष कटा हाड़ मेद् मज्जा वद् फोड़ा फुँसी अदीठ दुर्व्वल दुःख न्योतावरी घनवाइ चौसठि योगिनी बावन पीर छप्पन भेरूं रक्षा कर आई॥

विभूति सातबार पढ़कर फोड़े पर लगावे।

पेट व्यथा निवारण मन्त्र

पेट व्यथा पेट व्यथा तुम हो बलबीर।
तेरे दर्द से पशु मनुष्य नहीं स्थिर॥
पेट पीर लेवों पल में निकार।
दो फेंक सात समुद्र पार॥
आज्ञा कामरू कामक्षा माई।
आज्ञा हाड़ि दासी चंडी दोहाई।

बांये हाथसे दर्द स्थान पकड़कर ७ बार झारे शान्त होय।

अन्न पचने तथा अजीर्ण का मन्त्र

अगस्त्यं कुम्भकरणं च शनिं च बड़वानलम्
भोजनं पाचनार्थाय स्मरेद्भीम् च पञ्चकम्।

नित्य भोजनोपरान्त तीन बार मन्त्र पढ़ कर उदर पर हाथ फेरें।

जले हुए घावका मन्त्र

ॐ नमो आदेश कामरू देश कामाख्या देवी जले तेल तेल तेल महा तेल तारे। अमुक लहर

पीर पलमें टारे, मंत्र,पढ़े नरसिंह देव कुटियामें बैठ के, श्रीरामचन्द्र रहि रहि फूंक के। जाय अमुक के जलन एक पलन में जाय खाय सागर की नीर नानमें। आज्ञा हाड़ि दासीं फुरों मन्त्र चण्डी बाचा ॥

सरसोंका तेल तीन बार मंत्र पढ़कर जलेस्थानमें लगा देवें। परन्तु तेल तेलीके घर से एक पुकारमें लाना चाहिये।

अन्य मन्त्र—ब्रह्मा, विष्णु, महेश, तीनों बंधु तीनबार। बोले ब्रह्मा ना जानूं कछु विकार। घाव जले तेल जले अमुकके घाव होय पानी। आज्ञा कामाख्या हाड़ि चण्डी बानी।

ऊपर लिखे अनुसार इसे भो प्रयोग कर सकते हैं।

अस्त्र का घाव पूरनेका मन्त्र

ॐ नमो सार-सार विजय सार संसार बाधूं सात बार कटै अङ्ग न उपजै घाव सिर राखे श्री गोरख नाथ ॥

बरण तलवार छूरा आदिके घाव को सातबार मन्त्र पढ़कर फूंके ॥

बाण घाव या दर्दझाड़न मन्त्र

युद्ध किये राम लषण दुइ भाई ।
बाल्मीकि ने मन्त्र पढ़ि बाण जन्माई ॥
बाण से बाण कटे होय बाण बरिषन ।
अर्द्ध चन्द्रहास से कपै राम लछिमन ॥
आदेश मुनि बाल्मीकि की दोहाई ।
'अमुक' की पीर व्यथा कटिजाई ॥

तीनबार मंत्र पढ़कर फूंके तो बाण तथा अकस्मात दर्द आराम हो ।

फोड़ाका झारन मन्त्र

ॐ महतिल हलूमिआ आविर्भूता प्रदहत ओं ठः ठः ॥

मङ्गलवार को सूर्य्योदय से पहले चौरास्ते की धूल लाकर सात बार मन्त्र पढ़कर फोड़ामें लगा दे तो फोड़ा आरोग्य हो ।

नाली या शोष घाव झाड़न मन्त्र

ॐ नमः आदेश श्री सहदेव शक्तिको ।
शाख बसाक निज कर मेले ई जाई ॥
बनमें झारै सहदेव गुसांई ।
जहं खान्डव दहन में गिरी अङ्गार ॥
वही काम से एक लिये निकार ।
घसि के तिलक ललाट लगाई ॥
माथे डाली धरि घूमि चलि आई ।
बसिक के गुणनसे नाली विष दूर पराय ।
'अमुक' की पुरानी नाली भरि जाय ।
शक्ति गुरु सहदेव की आन ॥

बसाक पल्लव युक्त डाल ले २१ बार मन्त्र पढ़ कर घाव पर फेर कर फूंके ।

हूक पीड़ा झारन मन्त्र

ओं नमः सुमरु गिरि पर लोना चमारी, कञ्चन की रांपी सोने का सुतारीहुक चाक बांह बिलारी घरनी

नाली काट कूट खारी, सागर पार बहावो लोना चमारी की दुहाई फुरो मंत्र कामाख्योवाच ।

दर्द स्थान को पकड़ कर २१ बार झारे तो हूक पीड़ा जाय ।

हूक चोर फोड़ा या चोट झारना मन्त्र

ॐ नमो खां खङ्गार खाङ्गारन कहाँ गइले नंदन बन चन्दन बन काट के । किसके सत्ताइस दुरुआ गढ़े, किसके सत्ताइस दुअरिया गढ़के हूक काटों, हूक चोरा पीवा काटौं, सत्ताइस लङ्का पार फोड़ा काटौं फुटकी काटौं आशा काटौं बांसा काटौ करो काट कूट के । पिता ईश्वर महादेव की शक्ति गुरुकी भक्ति से झारो बलाई जात नहीं तो श्रीं महादेव की दुहाई फिरै ।

यह मन्त्र तीन बार पढ़कर दर्द स्थान में हाथ फेर कर फूंक मारे ।

मचक (मोच) झारन मन्त्र

ओं नमः आदुश श्रीराम को देऊँ मचक उड़ाई।

इसके तन से तुरत पीर भगि जाई ।
ना रही रोग पीर फूंक से हुई सब पानी ।
'असुक' की व्यथा छोड़ भात तूं मचकानी ।
पिता ईश्वर महादेव को दुहाई ।
आदेश सियाराम लषन गुसाई ॥

गर्म सरसों के तेल को २१ बार मन्त्र पढ़कर तेल मालिश करे ।

सर्व अङ्ग पीड़ा भारण मन्त्र

हुक्म लश्कर फर उन दर दर रोहनी लगर्क सूद ॥ फलाने ॥

कोई अंगमें दर्द हो तो तीन हल्दी गाँठ से मन्त्र को तीन बार लिखे और तीन फूंक लगा कर हल्दी के बराबर शक्कर तौल लड़कों को बांटे ।

तन पोड़ा भारन मन्त्र

ॐ नमो कोतकी ज्वालामुखी काली दो बर रोग पीड़ा दूरकर सात समुद्र पारकर आदेश कामरू देश कामाख्या माई हाड़ि दासी चण्डी की दुहाई ।

इस मन्त्रसे २१ बार झारे तो दर्द दूर होकर शान्ति मिले।

अन्य—उस पारसे आती बुढ़िया छुतारी तिस के कांधे पै सरके पेटारी वह पेटारी कौन कौन शर वाण सु-शर, कु-शर कु-पोरा शर समान। अमुक के अङ्गकी व्यथा तन पीर। लवटि गिरे उसके कलेजे तीर आज्ञा पिता ईश्वर महादेव को दुहाई फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

बांये हाथ के अनामिका अँगुली से सेन्धा नमक को तीन बार फुंक देकर खिलाने से कैसा हू दर्द क्यों न हो शान्ति मिलती है।

अन्य—कृष्ण कलेज फेकि जाय काँधे के उपर रे।
भाग रे भाग अमुक अँग पीर रे।
मारूं लात तोरे पांजर बज्र सलान।
रहे तो पिता ईश्वर धर्म की आन।

दर्द स्थान को पकड़ कर तीन बार झारें। तेलादि व्यवहार न करे।

जादू या बाण जनित घाव मन्त्र

आदेश कामाक्षा देवीको काली बैठी जो लिहे कटारी, उसे देख दुष्टन को भय भारी। कटारी गुण तोरे बलिहारी जाई। कटारीके बन्दनसे घाव सुखाई॥ "अमुक" का पीर मा काली के बरदान। रहे बिहड़वन बाँस लुकान आज्ञा हाड़ी दासी चण्डी दुहाई फिरै।

एक गिलास पानी को सात बार मन्त्र पढ़ आंख धुलावे और पीजावे तो आरोग्य होय।

नजर टोना जनित रोग मन्त्र

ओं नमो कामरू देश कामाक्षा देवीको आदेश नजर काटौं बजर काटौं मुहुर्त में देकर पाय रक्षा करे जय दुर्गे माय नरसिंह ओना टोंना बहाय। अमुक के रोग सागर पार चल जाय आज्ञा हाड़ि दासी चण्डी दुहाई।

कोई दुष्ट के चलावा का रोग या घावादि पर तीन मन्त्र पढ़ झारै।

कटि दर्द झारन मन्त्र

चलता आवे उछलता जाय भस्म करता डह डह जाय, सिद्धि गुरु की आन, मन्त्र सांचा पिंड कॉचा, फूरो मन्त्र ईश्वरोवाचा ।

शुक्ल पक्ष में कुमारी कन्या का काता हुआ १०१ तार सूत लेकर ११ मन्त्र पढ़कर कमर में बांधे दर्द शान्त होय ।

रक्त शूल आंव पेचिश का मन्त्र

ॐ नमो कामरू देश कामाक्षा देवी तहां क्षीर सागर के बीच उपजा पानी । अरे रक्त पेचीस तोर कौन ठेकाना । अमुक के उदर खोंचा जो रहा उपजाय । नरसिंह वर से क्षण में चल जाय । "अमुक अङ्ग नहीं रोग नहीं पीर । गुरु ने बांध दिया जञ्जीर । आज्ञा हाड़ी दासी चण्डी की ।

पीतल के पात्र में जल लेकर तीन बार मन्त्र पढ़कर पिलावे ।

शूल रोग का मन्त्र

ओंबाहि वाहि गुरु लोलम्बक शूल विशूल त्रां त्रां त्रां रवि या मङ्गलको मिरचा में गुड़ लपेट कर खिलावे॥

सीत का मन्त्र

ओं नमः कामरू देश कामाख्या देवी जहां बसै इस्मायल योगी, इस्मायल योगी के तीन बेटी एक तोंड़े एक पिछोड़ै एक शीत तिजारी गोडै।

रोगी को खड़ा करके जहाँ पर ज्यादा शीत लगे वहीं से २१ बार झारे।

सर्व ज्वर झारन मन्त्र

सागर स्योत्तरे कूले कुमुदो वीर वानरः।
एषां स्मरणमात्रेण ज्वर व्याधि विमुच्यते॥

इस मन्त्र को कुशा से २१ बार झारे तो ज्वर जाय।

सर्व ज्वर हरण मन्त्र

ओं भैरव भूतनाथे विकरालकाये अग्नि वर्णाधाये सर्व्व ज्वर बन्ध मोचय मोचय व्यम्बकेति हूं।

रवि या मङ्गलको सहदेईकी जड़ तीन बार मंत्र पढ़कर दायें भुजापर बाँधें।

अन्य--श्रीकृष्ण बलभद्रश्च प्रद्युम्न अनिरुद्धकः।
तस्य सस्मरण मात्रेणज्वरो याति दशोदिशः॥
इस मन्त्रको रोगी तीन बार मनमें स्मरण करे ज्वर भाग जाय।

ज्वर ताड़न मन्त्र

दोऊ भाई ज्वर सुरा महाबीरा नाम।
दिन राति खटि मरे महादेव के ठाम॥
फूर छुदसे छत्तिस रूप मुहूर्त्तमों धराय।
नाराज नामूक के घर दुआर फिराय॥
ज्वाला ज्वरपाला ज्वरकाला ज्वरविंशाकि।
दाह ज्वर उमा ज्वर भूमा ज्वर झूमकि॥
घोड़ ज्वर भूता तिजारी औ चौथाई।
सवन को भङ्ग घोटन शिवने बुझाई॥
यह ज्वर ज्वर सुरा तूं कौन और तकाव।
शीघ्र अमुक अङ्ग छोड़ तुम जाव॥

यदि अंगन में तू भूलि भटकाय ।
तो महादेव के लागा तूं खाय ॥
आदेश कामरू कामाख्या माई ।
आदेश हाड़ि दासी चण्डी की दोहाई ॥

कैसा ही विषम ज्वर क्यों न हो रोगीको उत्तर मुख बिठाय सात बार मंत्र पढ़के तीन दिन तक झारनेसे सर्व्व प्रकारके,बुखार पलायन करते है ।

अन्य-ओं नमः नमः अजयपालकी दुहाई ॥
ज्वर रहे तो पिता महेश की दुहाई ॥

रवि या मंगल को सात बार पढ़ कुशासे झारै तो ज्वर जाय ।

तिजारी ज्वर का मन्त्र

ओं नमो महा उच्छिष्ट योगिनी प्रकीर्ण दंष्ट्रा खादति चर्वति नश्यति भक्ष्यति ओं ठः ठःठः ठः

रवि या मंगल अपामार्गका फूल तीन मंत्र पढ़ दाहिने बाहु पर बांधे तो ज्वर जाय ।

चौथिया ज्वर का मन्त्र

ओं ऐ ऐं ओं महमह द्रावय द्रावय ओं ऐं ए ओं महमह ओं ह्रीं। चन्द्र पर्व या सूर्य्य पर्व में नदीमें खड़ा होकर १०८ मन्त्र जपे तो ज्वर भागे।

तिजारी निवारण का मन्त्र

काली कुतिया सात पिल्ला बिआई सातो दूध पिलाई जिलाय वाय थनई लाका सच लाये तिनोंके मन्त्रन से चौथिया जाये।

शनि मंगलको दाहिने हाथसे आँचला द्वारा २१ बार मन्त्र पढ़ तीन दिन तक झारे।

कोई अन्य रोग टोना या घाव जनित

ज्वर मन्त्र

कहाँ के ज्वर तू कहां तोर घर दुआर।
किसके गुमान अमुक अंग कर बिहार॥
चाकरानी कोटचन्द्रकी विभीषणकी दास।
का रहि सकै अमुक अंगजवरासी॥

लङ्का से आये करने अमुक अंग खेला ।
भाग जा वेगि तू, विपिन बन कसैला ।
रहो बहुक्षण भाल्लूक के अंग ।
वह जलि मरे नाना विध नाना रङ्ग ॥
जा जल्दी कर अमुक के अङ्ग से ।
भूल न करना कभो ज्वर तंग इसे ॥
आज्ञा कामरू कामाख्या देवी ।
हाड़ि दासी चण्डी का आदेश ॥
इस मन्त्रसे तोन बार फूंक कर झारे ।

टोना निवारण मन्त्र

ओं नमो आदेश कामरू कामाख्या देवी लीनो सलोना योगिनी बाँधे टोना आवो राखि में जादू कौन देश फिर पहले अफुल फुलवारी ज्यों ज्यों आवै बास त्यों त्यों अमुक आवे हमारे पास मोहिनी देवी के दुहाई फिरै ।

यह मन्त्र पढ़कर फूलसे सात बार झारे टोना दूर होय ।

अन्य--ॐ नमो आदेश गुरुकी लोनाचमारिन जगतकी चपली मोती हिलते चमके गम गमगमके पिंडमें ज्यान बिजुयान करे। तो उस टोनाके ऊपर परे। दुहाई तख्त सुलेमान बादशाह की।

इस मंत्रको बीफैको मोर पंखसे २१ बार झारै

जादू टोना निवारण मंत्र

ॐ नमो बजरमें कोठमें बजरमें ताला बजरमें बाँधूं दशो दुआर। बजर की चौकठ दुआर जहांसे जहाँ ही जाय। जिसने भेजा उस पै चढ़ जाय। इस पिंडकी मुठी लोना चमारी बीर बेलाल इस पिंडको कुछ करें तो पिता महादेव को आदेश। श्री गुरुगोरखनाथ की दुहाई फिरै।

शनिवारके दिन २१ बृक्षोंका पत्ता, २१ कुएका जल और चौरास्ते की धूल व चूना कच्चा घानी का तेल सबको एक कलसी में रख रात्रि में यह मन्त्र १०८ बार पढ़कर रोगीके सिर पर पल्लवों से जल

को छिड़के फिर सुबह को स्नानादिक कराकर दान पुण्यादिक करे।

पशुओं का कीड़ा झारन मन्त्र

ॐनमो कीड़ा रे तूं कुण्ठ कुण्ठिला। लाल पूंछ तेरा मुंह काला हम तुमसे पूछू कहांसे आया। तोडि मांस तू सब काहे खाया। अब जाय तूं भस्म होय जाय। गुरु गोरखनाथ बाबा के लागों पांय शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो बाचा।

रबि मङ्गलको नीमकी डाली से सुबह और शाम को सात झारा देवे।

पशु बाधा निवारण मन्त्र

ॐ कनक कलाई आई बाई लाग लगाई दूर दूर भाग बलाई ओं ठः ठः।

रविवार या मङ्गलको गुड़हली पक्षीको मार उसके हृदयको निकल कर सात बार मंत्र पढ़कर पशुशाला में गाड़े तो सब बाधा दूर होय।

सर्प भय निवारण मन्त्र प्रारम्भ

सर्प भय निवारण मन्त्र

आस्तिकस्य मुनिर्माता भगिनी वासुकिस्तथा ।
जगतकारुमुनिपत्नी मनसा देवीनमोस्तुते ॥

इस मन्त्रको तीन बार पढ़कर ताली बजानेसे स्वप्न में भी सर्प भय नहीं होता ।

सर्प विष बन्धन मन्त्र

ॐ नमो मन्सा देवी का आदेश ।
धोबिनियां पाट पर गुदरिया जो धोय रही ।
पुरइनि के पात में सर्प विष उपलाय रही ॥
हे गुदरी तुम गुरु मेरी हम तुम्हारी चेला ।
असुक अङ्गके काली विष बाधूं तेरा आंचला ॥
विष विष अरे विष खपरा विष गोखुरा ।
हम गुदरिया में छिपाय रखूं तोहरा ।
गरुड़ तुम जे रहत ऊँचे पहार ॥

तमिक ताकौ ऊपर से नीचै एक बार ॥
आवोरे विष तारे बाँधू मनसाके बरदान ।
दुई मास रह तू गुदरिया में लुकान ॥
आदेश हाड़ि दासी चंडी को दोहाई ॥

जब किसीको सर्प काटे तो तुरत यह मंत्र पढ़ अपने कपड़ेमें एक गांठ बाँधे तो बिष बंधका ऊपर नहीं चढ़ सकता है ।

घर बैठे सर्प बिष शान्ति करण मन्त्र

नहान्हाडियाते काई खॉटों खांधॉ झियो मारिजाय ।
अना खांधा में जल प्याऊँ खांधो उतरि जाय ।

इस मंत्रसे जलको तीन बार पढ़कर जो मनुष्य सर्प दंशनका सम्वाद लावे उसे पिलावे तो सर्प विष शान्त होय ।

सर्प विष बन्धन अन्य मन्त्र

गुदरी धोबिनियां कपढ़ा फींचै केवड़ातल्ला घाट में ।
पद्म पात में विष उपलाय आंइ उसके पाट में ॥
धोबिनी तुम गुरु हम तोहार चेला ।

अमुक अंग के विष बांधूँ तेरी आचला ॥
आवी रे विषि हमारे कपड़े में आय।
बांधू बिष बांधते घटि जाय।
आदेश देवी मनसा माई। दुहाई विषहरि राई ॥

इस मंत्रको तीन बार पढ़कर अपने चादर के खूंटमें एक गांट लगावे तो विष बहुत कम हो जाता है फिर पीछे झारन मन्त्र का प्रयोग करे।

थप्पर मार मन्त्र

थर पटक धसनि धसनि सार।
ऊपर धसनि बिष नीचे जाय ॥
काहे विष तू इतना रिसाय।
क्रोध तो तोर होय पानी ॥
हमरे थप्पड़ तोर नहिं ठेकान।
आज्ञा देवी मनसा माई ॥
आज्ञा बिषहरि राई दुहाई।

जो मनुष्य सर्प झारनेको बुलाने आवे उसे एक थप्पड़ यह मन्त्र पढ़ कर मारे तो रोगीके शरीरका

विष कम होकर शान्ति मिले। फिर झारन मंत्रसे जाकेर झारै।

कोड़ा मार मन्त्र

अंगौछा अंगौछा तोरे बलिहारी जाई।
अंगौछा मंत्र मारसे विष झर झर जाई॥
सोने का अंगौछा रूपे की झालरी।
होय निर्विष तोरे मारे रोगीका गातरी।
लो विष झार फेकहुं सात समुद्र पार॥
आदेश माई मनसा की दुहाई।
नहीं तो विषहरि राई की आन लागे॥

एक नये अंगोछाका कोड़ा बनाकर इस मन्त्र से तीन कोड़ा मारे उसे, जौ कि सर्प काटनेको झारने के लिये बुलाने आवे। इससे विष ज्वाल कम हो जाय फिर झार के आराम करे।

सर्प जल दर्पण मन्त्र

द्वितीय मंथन से समुद्र विष उपलाय।
सो देखि देव दैत्य उर सोच अकुलाय॥

देवगण बोले शिव सों होय कवन उपाय।
अब कैसे बचूं तुम सब बोलौ जुटिआय ॥
इतना बचन सुन बोले देव महेश्वर।
कहैं अधीर होय अब हरि रक्षा कर ॥
हुए उपस्थित हरि स्मरण के करते ही।
देखि शिव सन अस मधुरी बानी कही ॥
अपने कण्ठ में धरौ यह सब बिष।
तब तो होय समुद्र जल निर्वीष ॥
हरि वचन सुन शिव किये विष पान।
उदरस्थ नाहीं कियो दियो कण्ठ स्थान ॥
तबते उनका नाम नील कण्ठ कहाय।
हरि हरि बोल विष जलमों दरसाय ॥

एक नई मिट्टीकी हड़िया लाकर जल भरे और उसमें तीन दल दूर्व्वा डालकर हांड़ीके ऊपर त्रिशूल चिन्ह बनाकर तीन बार मंत्र पढ़कर रोगीको उस जलको देखनेको कहे फिर उसे जलमें दृष्टिगोचर होगा कि रोगीको किस जाति के सर्प ने काटा है।

सर्प हूल उखारण मन्त्र

इकड़ी मकड़ी खिड़की जंगला दुआर ।
राम रहीम को इसमें कछु नाहीं विचार ॥
जय मां देवी चामुण्डे करूँ तुरा भरोसा ।
कारण हुल उखारण देहु वर ऐसा ॥
आड़ और डङ्का धरि के घुमाय ।
कौन कौन सर्प सेवा कहूं समुझाय ॥
जितने सब सांप खड़िस करैता औ गुखुरा ।
और केवटिया बारह मास बसै जल पोखरा
जल में जल कितना खाय ।
सो कछु बूझि नहिं जाय ॥
एक चोट से झाड़ै चुप चाप ।
विष के ज्वाल से जीव थर थर काँपे ॥
चोट देखि के ओझा नहिं झारैं ।
का करै सो सोचि के मन मारैं ॥
इसी समय वैद्य धन्वन्तरि आय ।
तब उसने ओझा सो कही समुझाय ॥

सुन ओझा अभी मोर बचन धर ध्यान।
चौसवाके मन्त्रसे करु विष उत्पाटन॥
शंख जल में औ मानिक जल में।
जल में काल कूट विष जल में॥
माता के तीन शिष्य ईश मर्दाना औलियासांई।
माता के स्मरण से विष उखारण जाई॥
इसके अंक में अब तनिको विष नाई।
राई विषहरि देवी मनसा माई की दुहाई।

बिच्छू के दंशनसे जिसतरह काटे स्थानमें हूल (कांटा) टूट कर रह जाता है उसी प्रकार सर्प हूल रहने पर थोड़े केशोंके गुच्छ हाथमें ले ले इस मन्त्र द्वारा झारने से सर्प दन्त उठ जाते हैं।

रस्सी बन्धन मन्त्र

ओं नमो आदेश मातु विषहरियाका।
धुलिया धुलिया तुम उड़िके फिराव॥
हमको देख तुम सम्मुख में ठहराव।
मनसाके वर विष जाय न ऊपर में॥

विषहरि के शपथ कहूं यह पाठ में ।
झट से विष घाव मुँह चलि आय ॥
दुहाई देवी मनसा लाय ।

सर्प काटने के साथ ही थोड़ा सा पाट या पाटकी रस्सी ले तीन बार मन्त्र पढ़ सर्प के काटे हुए स्थान के ऊपर कसकर बांधे तो विष ऊपर नहीं चढ़ता है।

डंस मुख विष लावन मन्त्र

ओं नमो आदेश मनसा देवी को

केला अफूला गाछ खाली झूर झूर झुराय ।
देवो को ज्योति से विष डङ्क मुंहे दिखराय ॥
तूं कहाँ रे विष माया मनसा की दुहाई ।
गरुड़ाज्ञा हम कहौं जे गाई ॥
कि कंपन से करे विष शीघ्र नीचूं आय ।
शिव भोला बुलावें औ मनसा माय ॥
आदेश विषहरि राई ।

यह मंत्र सात या इक्कीस बार पढ़के डङ्क स्थान में फूंके तो विष डङ्क मुंह में आवे ।

हस्त चालन मन्त्र

ॐ नमो आदेश देवी मानसा माईको । चाल कटै चालो थान काटे और काटै चाल वानी रेख। हाथ चलते पवन चलै औ चलेमहादेव ॥ चल रे हाथ जल्दी चल यदि न चले तो भादो मास ताड़ चोरी तिसके नीचे तलसे जाय आदेश विषहरि माई की दुहाई फिरै ।

कोई कुवांरे ८ या १० वर्षके बालकको उत्तर मुख बिठाय बांये हाथ के तलवेको भूमि पर रक्खे और यह मंत्र सात बार पढ़ फूंक मारे तो हाथ चलकर यदि सर्प काटे स्थान में विष रहे जल्दी उठेगा ।

प्रथम सर्प विष झारण मन्त्र

कोने में बैठे लखीन्दर, बिहुला बैठीं घर में ।
दोनों मिलि चरखा काटें, हाथ पांव के भरमें ॥
बिहुला बोलत विषहर तो ही पहिचान ।
मोर स्वामी को डंस लिये थे प्राण ॥
अभी तोहीं करूँ नमस्कार बारम्बार ।

तू हमरे घर भूल न आना इस बार ॥
जावो वेघि बेगि झट से जाव।
नहीं तो माय मनसा के माथा खाव ॥

इन झारण मन्त्रो से २१ या १०८ बार तक झरना चाहिये। प्रथम मन्त्र से फायदा न मालूम होने पर दूसरा या तीसरा मंत्र तीन वार पढ़ प्रयोग कर सकते हैं। नीमकी टहनीसे भी झारा जाता है।

द्वितीय सर्प विष झारण मंत्र

अरे विष तोरे कोरिया रङ्गनिरेखरहेयों।
जेहि पीवत महादेव के नीलकंठ भयो ॥
जावोरे विषमनसादेवी दूध झारीलियो।
शीघ्र जावो विष देवी के गुहार भयो ॥
आज्ञा देवी मनसा माई।
आज्ञा विष हरि राई की दुहाई फिरै ॥

तृतीय सर्प झारण मन्त्र

नदिया से आय रही विष लहरों के संग में।
सो गरुड़ बिलोकत ही पान करै बहू रंग में ॥

जावो वेग विष लगावो मति देरी ।
आये देवी मनसा लिये दूधके भारी ॥
नहीं विष अमुक के अङ्गतनिको नाहीं ।
फूंकचोटसे मनसाके दोनों हाथ उड़ाहीं ॥
आदेश देवी मनसा विषहरिराइकीदुहाई ।

चतुर्थ सर्प विष भारन मंत्र

ॐ नमो आदेश मनसा देवी को फुड़िया मारे छूः हथिया कोने उठले वदरिया । वही पवनमें उड़ि जाय विष तोरी सब गदरिया । स्थिर होवो विष घाव मुंहके पोरमें । नहीं विष नहीं विष 'अमुक' के शरीर में नहीं तो विषहरी राइकी दुहाई फिरै ।

पञ्चम सर्प विष भारण मन्त्र

सुग्रीव के वन्दन से विष उड़िके पराय ।
बुढ़िया मौसी हाट बोढ़न को जाय ॥
मुंह में लिये और लिये अंचला पसार ।
उनकी कृपा सब विष जल होय छार ॥

'अमुक' अंग नहीं विष नहीं भार।
देवी विषहरी ने दिया बिष टार॥

षष्ठम सर्प झारण मन्त्र

परइले बदरिया अन्धेरी रतिया।
सांप सांपिन तू कौन कौन जतिया॥
डइनी खेले झारू बांयी ओर।
जितना विष सब रह पांव के पोर॥
आदेश विषहरीके विष चल जाई।
ना रहे विष साय मनसा के दुहाई॥

सप्त सर्प झारण मन्त्र

पिता गृह जाय गौरी शिव रहे रिषाय।
बेयार लंगे उनके अंग बसन उड़ाय॥
उसमें विधि के वीर्य गिर जाय।
सो देख ब्रह्मा मनसे किये उपजाय॥
उसे भरि रखैं शङ्ख के भीतर।
रहे तीन कोटि बरष शंख मे आकर॥
जितने कालकूट विष बसीसे जन्माई।

कितनी रिष बसके यह कहि नहिंजाई ॥
यही विष पान करें नाग गण सब आई ।
तेही समय से जीवन दंशन कराई ॥
उसके ज्वाल से जीव जन अकुलाय ।
श्रीहरि हरि कही पुकार लगाय ॥
दयामय दीनबन्धु संत पै होय दयावन्त ।
पठये गरुड़ कह, वह आये तुरन्त ॥
शोष लई सब विषको, गरुड़ आनन्दसे ।
कृष्णकृष्ण राम राम, बोलो प्रेमानन्दसे ॥
अमुक अङ्ग नहीं विष नहीं भार ।
श्रीहरि ने दिये सब विष टार ॥
आदेश देवी विषहरो की दुहाईफिरै ।

सर्प विष निवारण मन्त्र

उत्तर दिशि काली बदरिया ।
तेही बीच ठाढ़ काल मदरिया ॥
एक हाथ चक्र धारे एक हाथ गदा संभारे ।
चक्र के मारो सात खंड हो जाई ॥

गदा के मारे सात पताल चल जाई।
ॐ हरहर बेगिजाय विष महेशके आदेश॥

नीम के डालीसे साल या २१ बार मन्द्र पढ़ झार विष दूर होय।

अन्य—ओं झार झंखार काले कोठा बार बाल पलाता दह-दह छः उजरा छः कारी छः पीरी अठारह जाति जाग-जाग शब्द सांचा फुरो बाचा।

गूमा के फूल और अढ़ाई मिर्च पीसकर तीन मन्त्र पढ़कर पिलादे विष उतर जाय।

अन्य—शिरू पवन जेहि विषनाशे तेहि देखि विषधर कांपे। सत्यजी आय विष में सन्दी त्येष्टये ना विष रहे मन्त्रे कुशउ वालु यावत काल विष निर्विष होई। सात मन्त्र पढ़ फूंके।

सर्प विष नाशन मन्त्र

ह्रीं ह्रीं जय चामुण्डे दुष्ट सर्प नाशनी विष घातनी घोर दंशने। कह-कह लह-लह दह-दह पच पच-पच मथ-मथ विषं नाश्य स्फोटय विद्रावय

किल किल द्र हि द्रु हि फट् फट् असुक विष नाशय ह्रीं ह्रूं ह्रीः फट् कालिके गोष्टेविचर मठ मठे भ्रां भ्रां शीं शीं फट् स्वाहा ॥

सर्प डंसे हुए व्यक्ति को सम्मुख बिठाय बत्तीस बार मन्त्र पढ़ माथे पर झारे तो रोगी सम्पूर्ण आरोग्य होता है ।

सर्प विष नाशक तिलक मन्त्र

घोर निःस्वने श्वसन्वसिनि नील नीभे झगझग गह गह फट फट मथ मथ ज्वाला द्वलिनी विद्रु में हन हन विषं नाशय २ स्तम्भय २ विद्रावय २ स्थावर जङ्गल विष नाशय नाशं द्रुत २ लह मट मट कुरु २ ह्रीं फट स्वाहा ॥

इस मन्त्र को प्रयोग करने के पहले ब्राह्मणद्वारा नोल निभा देवो को पंचोपचार पूजा अर्च्चना करके देवी का चरणामृत लेकर सर्प काटे हुए व्यक्ति के कटे स्थान धुलाने तथा पिलाकर नेत्रादि धुलावे फिर उत्तर मुख बिठाय सिर पर ३२ बार शरीर पर

१६ वार कण्ठ में १२ बार हृदयमें ८ बार नाभि में ६ बार और जानु में ४ बार मन्त्र को जप करे तो मन्त्र ग्रन्थों का कहना है कि मृत व्यक्ति भी जीवन पा सकता है।

सर्प विष नाशक तुलसी मन्त्र

राम तुलसी कृष्ण तुलसो बबुल तुलसी पत्ता।
नाहि जाने सबकोई सॉपा लता॥
यदि गिरे रस पिव रोगी के गात।
सर्प विष तुरत हो भगि जात॥
क्लीं क्लीं ह्लीं ह्लीं रां रां ठः ठः।
नहीं विष अमुक अङ्ग अबनाहीं॥
माय मनसा देवी के दुहाई।
आज्ञा विषहरो राई की दुहाई॥

एक निश्वास में कृष्ण तुलसो के तीन पत्ता तोड़ कर तीन मन्त्र पढ़ सर्प काटे स्थान में एक एक कर लगावे। पत्ता सटा हुआ रहने से जानना चाहिये कि अभी विष है। उखड़ जाने से विष नहीं है ऐसा जानना।

सर्प विष दूरिकरण मन्त्र

ॐ तमहानी ऊदर महानी वासुन्थरी विश्वक्र-हाला हलोना प्ययहति ठः ठः ॥

इस मन्त्रको पढ़कर गो धूमाकी जड़ जलमें पीस पिलावे विष दूर होय ।

इसके आगे हम रामसार मन्त्र कृष्णसार मनसा मार मथन सार गोपिन्न सार मंत्रोको लिखता हूं जो कि सर्पकाटे रोगी को झारनेके लिये अद्वितीय माने जाते हैं और बड़े बड़े ओझा गुनी इन मंत्रोके प्रयोग से भयंकर विपधर सर्पों के विप को दूर करते हैं ।

प्रथम मनसा सार मंत्र

मातु मनसा तेरे मंत्र को करौं प्रचार ।
विष नाशन मों देवी रहै तेरा अधिकार ॥
किसको शक्ति वल है कौन सके छुड़ाय ।
विप के हाथ से कौन सके छुड़ाय ॥
जवलों पूजा तेरी जो करे मनलाय ।

ता तिनके तेजसे उसका विष झर जाय।
तब तुम कृपा करो जान अति दीन॥
सर्प दंशन विष फूँकसे हो जाय क्षीन।
निशि घोर रहे चढ़ें अंधेरी हाय॥
कौन सर्पने डंसा ना जानू हम सोय।
बीछी मकरी आदि अरु अष्ट रङ्ग नाग।
नाजानी कौन जाने यह रोगीसों लाग॥
यदि होय सोरह चित, विषधर विषाऊ।
तबहुंन होय स्थिति, कोई पोर कोई ठांऊ।
आदेश माया मनसा देवी की।
अमुक अंग विष निर्विष हो जा॥

जिस समय रोगी निस्तेज हो जाय और कौनसर्प ने काटा है यह ठीकनहीं कर सकने पर इसमंत्रद्वारा झाड़नेसे विष उतर जाता है। इस मंत्र द्वाराविशेष उपकार न हो तो द्वितीय और उसमें भी उपकार न हो तो तृतीय मंत्रसे झारे। प्रत्येक मंत्रको तीन या सात बार पढ़ करके फूंक देना चाहिए।

द्वितीय मनसा सार मंत्र

मेधलाल आदि करे काल कूलिममें जितनी ।
सूत्ताके संचार से उसको लाल गिरे उतनी ॥
केउटियाके कमरख भाई ।
तोहरे रहरे हमना जाई ॥
काला कचूर काल कूटिया विष ।
काहे तूं करती इतनी रिष ।
जा विष घाव मुख के पोर ॥
जब तक रहे शक्ति बळतोर ।
आदेश देवी मनसा माई की ॥

तृतीय मनसा सार मन्त्र

ॐ नमो आदेश मनसा देवीको बूजि बोलेहुई नितोरे हम काटों। कालयार काल कुटीं विष कोरे देय भाठी । मनसा मन्त्रसे फूंक करूं तोरे पानी । देखूं इसवार तेरी होय कौन ठेकानी । मनसा मंत्र के जोरसे, विष जल होय गरुड़के स्मरणसे विष नाहिं रहाय ।

प्रथम कृष्टम सार मंत्र

चंवर सम घुंघट केश, सिर कृष्ण के छाय।
हँसते खेलते मोहन, तीर काली दहके जाय॥
वहाँ रहा कदम्ब तरु एक सुन्दर।
नाना भाँति के चारि कदम्ब तरुवर॥
तँह राखि मुरलिया मोहन मुरारी।
कालीदह केलि कारण गये बिहारी॥
सोवत रहेऊ भयङ्कर नागा।
पाई आखेट तुरत वह जागा॥
तुरत सन्मुख आयेके धाय रिषि आय।
विहंसि कृष्ण तबनाग सिर चढ़िजाय॥
जब प्रभु चरण नाग सिर लागे।
झरण लगै विष झट भागे॥
नहीं बिष अमुक अङ्ग अब नाहीं।
आदेश मनसा विषहरी राईको दुहाई

ये मंत्र हरेक स्थान में ब्यवहार करते पाये जाते हैं। इसमंत्रसे सर्प भय निवारण होताहै और २१ बार झारने से शीघ्र आरोग्य लाभ होता है।

द्वितीय कृष्ण सार मन्त्र

कालीदहके तीर पे कृष्णजी पहुंचे आय ।
बांसुरी राखिके कूदि परे जलमें जाय ॥
कलिया नाग बसै वह जलके मँझार ।
श्रीकृष्णको देखिके धाये छोड़ फुफुकार ॥
यह देख कृष्णचन्द्रने तुरत बध कर दीन्ह ।
पशु पक्षी अरु जीव संकट हरि दीन्ह ॥
श्रीकृष्णके स्मरणते अमुक अङ्ग विषझरजाई ।
आदेश विषहरी राई की दोहाई ॥

गोपिनी सार मन्त्र

कंसने बुलाये तक्षक को निज गृह सान ।
कालकचूर विष मांगते सो तक्षक किये प्रदान ॥
दधि के भीतर राखि यतन कराई ।
मस्तक धरि एक इत पटवाई ॥
दूत चले गोकुल पुर नियराये ।
राति समय राधा गृह चलि आये ॥
श्रीकृष्ण जन्य राधा दधि लै राखि ।

फेंकि मटुकी निजमटुकी दधिमंह राखि ।
सरल राधा प्रपंच कछु नहीं जानि ॥
निज मटुकी दधि कृष्ण पंह आनि ।
मगन मन कृष्ण करै दधि अहारा ।
खालहीं गिरे अचेत धरणी धारा ।
सब गोपिनी चकित चित होई ।
राधा हृदय दारुण दुःख होई ॥
राधा बोली ललिता यह का भयऊ ।
प्रिय मोहन केहि भांति गिरेऊ ॥
ललिता कृष्ण मुखलाल जो देखी ।
राधा सन कहई उर दुख विशेषी ॥
काह करि तू राधा दधि कहं पाई ।
जानि तूं विष कचूर खिबाई ॥

❀ दोहा ❀

नन्द यशोदा सुनै जब, लगै कलंक प्रीत नशाय ।
जब आया न सुने सब, होय दुर्गति दुखदाय ॥
अब बोलहु राधा करौ कवन उपाई ।

कृष्णचन्द्र प्रिय जस जीवन पाई ॥
ललिता वचन राधा चिन्तित भयऊ ।
कवन करों उपाय कह रोवन लागेऊ ॥
करे विलाप कहि प्राण अधारा ।
लोटहि धरणि न देह संभारा ॥
ईश्वर कृपा कछु बुझि न जाई ।
क्रन्दन वाक्य मन्त्र अस होई ॥
उठि बैठेऊ कृष्ण हर्षाई ।
गोपियन सान्त्वना दै समझाई ॥
प्रेमानन्द उमंगि उर लावही ।
गोपियन पुलकि कहति विष नाहीं ॥
आदेश सरल षोड़शी गोपियन की ।
आज्ञा विषहरी राई की दुहाई ॥

रोगी की अवस्था जब अत्यन्त ही खराब हो जाय तब यह मन्त्र क्रन्दन स्वर से सात बार या बारह बार पढ़ने से रोगी आरोग्य लाभ करता है। इसके बाद रामसार मन्त्र लिख सर्प विष निवारण

उपायोंको शेष करता हूँ। हमारा लिखा हुआ सर्प बिच्छू, कुत्ता, शृगाल और मकड़े आदि जितने बिषैले जानवरों ओर संखिया कुचले जहर अफीम आदि अनेक प्रकारके विषोंके मंत्र यंत्र तंत्र द्वारा उपाय तथा चिकित्सा बताई है जो कि सरल सुन्दर वा मूल्य में सुलभ है।

रामसार मन्त्र

जेही समय गये राम बन माहीं।
तिनका तहाँ कष्ट अति होहीं॥
सिया हरण अरु बाली नाशा।
पुनि लागो लषण नाग फाँसा॥
विकल हरि देखि नाग फाँसा।
स्मरण करहिं गरुड़ निज दासा॥
विनती नन्दन बसहिं पहारा।
पहुंचे स्मरणते ही लङ्का पल पारा॥
रहे लषण बांधि जितने सब नागा।
सो गरुड़ देखि तुरत सब भागा॥

अमुक अङ्ग विष निर्विष होय जाई ।
आदेश श्रीरामचन्द्र की दुहाई ॥
आज्ञा विनतानन्द की आन।

इस मन्त्र द्वारा सात या बारह बार झार कर फूंक देने से मृत्युमुख पतित रोगी भी चैतन्य होकर सुख पाता है। प्रत्येक मन्त्र में अमुक स्थान में रोगी का नाम उच्चारित करे।

सर्प विष निवारणके पूर्व आवश्यकीय विचार

सर्प मन्त्र जानते हुए जो सुने कि अमुक को सर्प ने काटा है तो कैसा हो कठिन कार्य में क्यों न सलग्न हो छोड़ कर अति शीघ्र जाना चाहिये। जो पुरुष नहीं जाते वह कल्पान्त तक रौरवनरक के भागी बनते हैं।

श्वेत वर्ण के सर्प ब्राह्मण शोणितवर्ण के वैश्य व कृष्ण वर्णके सर्पगणों को शूद्र जातिका जानना चाहिये यह चार जाति सर्प होने पर भी उसका नाम आठ प्रकार का होता है।

१—अनन्त, २-कुलिक, ३-बासुकी, ४-शेखपालक
५—तक्षक, ६-महापद्म ७-कर्कोटक, ८-पद्म।

जङ्गल सूखे हुए कुंआ, बरगद को जड़में सह-जता को जड़में सूखे हुये वृक्ष पर, किसीदेव मंदिर में सर्प काटने से मृत्यु निश्चय जानना चाहिये।

जो सर्प मनुष्य के भौंह या आंख मस्तक, गर्दन, गाल कण्ठ, ओट, स्तन स्कन्ध, नाभिउदर, लिङ्ग या अण्डकोष में, या किसी सन्धिस्थल में यदि काटता है तो उस रोगी को प्रायःबचते नहीं देखा जाता।

जिस मनुष्यको रवि मङ्गल शनि को सर्प दंशन करे या पञ्चमी, अष्टमी आमावस्या पूर्णिमा, चतुर्दशी तिथिको और पूर्व्वफाल्गुनो, पूर्व्वाषाढ़ पूर्व्वभाद्र-पद, कृतिका, श्रवणा मूल, विशाषा भरणी, चित्रा, अश्लेषा नक्षत्रों में सर्प दंशन करे तो उसकोनिश्चय मृत्यु मुखमें पतित जानना चाहिये। ऐसालिखाहै।

यदि सर्प दंशन स्थान में चक्राकार गोल पके जामुन के ऐसा दिखाई पड़े तो धन्वन्तरि भी नहीं

बचा सकते और दंशन स्थान दिखाई पड़े व भयानक दर्द ज्वाला होकर शरीर गर्म हो तो कालका डँसा हुआ समझना चाहिये।

यदि रोगी दर्पणमें जलमें या स्वच्छ द्रव्यादि में अपनी परछाहीं न देख सके, चन्द्र सूर्य तारा नहीं देख पड़े तो अवश्य मृत्यु जाननी चाहिये। रोगी जबतक जीवित रहे तबतक तथा साध्य तंत्र मन्त्र द्वारा चेष्टा करना आवश्यकीय है।

बिच्छू निवारण मन्त्र

ॐ भं हं यं जं वं बलखंय ऐ अ औ ह हः॥

बकुल के बीजकी भीतरी मींगी पीसकर तीन मंत्र पढ़ लगावे विष दूर हो। अथवा ओल (सूरन) की शाखा को तीनबार मंत्र पढ़कर दंशन स्थान में घिस दे तो विष तुरन्त दूर हो जाय।

अन्य—ओं काली बीछी कर मतवाला हरि सोन की नारी सर्प डंसे तो सोवे बीछी डंसे तो रोवे शब्द सांचा फुरो वाचा॥

सात मंत्र पढ़ हाथमें नीम की पत्ती दबावे तो बिच्छू विष उरे ॥ १ ॥

अन्य----जितना बिछा माकड़ सबके बास ।

मनसा मंत्र से विष हौंय सबनाश ॥

ताकते नरसिंहकेपोरेपोर विषउतराय ।

जिसके प्रतापते चौसाया विषजाय ॥

बिच्छूके डङ्क जो रही अमुक शरीर ।

नरसिंह ने फेंक दिये समुद्र तीर ॥

आदेश देवी विषहरि मनसा माई की दुहाई ।

बकुल के बीज पीसकर तीन मंत्र पढ़कर लगावे तो विष न रहे ॥ १ ॥

अन्य----ओं नमः समुद्र समुद्रमें कमलके फूल वह कमल फूलमें काली बिच्छू उपजाय बिच्छू तोरी कै जाती गरुड़ कहे मेरी अठारह जाती छः कारी छः चित्तकारी छः कूं कूंवान उतर रे विष नहीं तो गरुड़ हंकारू आन फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

सात बार मन्त्र पढ़कर हाथ फेर दे शीघ्र विष उतर जाय ॥ ३ ॥

अन्य--अव नारा मोटा वैगन सोच ऊतरु बीछी मति कर गुमान । यह मन्त्र इक्कीस बार पढ़ कर झारे विष दूर होय ॥ ४ ॥

अन्य—ओं नमो कारी सुरही गाय गायको चमरी पुच्छि आई तिसके गोबर बिच्छी बिआई बीछी तेरी कौन जाति ऊजरी वर्ण अठारह जाती छः काली, छः पीलो, छः भूमिधारो, छः पर्वत गिरिवारी, छः छः कूंटूं कूंटूं शरीर में मारी उसे उतारू बिच्छी हाड़े हाड़े पोरे पोरे शोवें नील कण्ठ विष तोर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई यदि न उतरो विच्छो तो आदेश हनुमत के आन हनुमत दुहाई ॥

सातवार पढ़कर फूंके विप उतरि जाय ॥ ५ ॥

अन्य—ओं नमो आदेश गुरुको काहे रे बिछु तेने काटा सब गोंद गिरी मुंह चाण्यों में जल काटिके पिलाऊं कटे से उतरी जाय उतारी उतारू

छाढ़े तो मारके गरुड़ ख हंकारू लङ्कासी कोट समुद्र सी खाई, उतर रे विषयती हनुमन्त की दुहाई।

सातबार जल पढ़कर काटे स्थान धुलावे तो विष दूर होय ॥ ६ ॥

अन्य—पर्वत ऊपर कपिला गाय उकरे गोबर बिछी बीआय कौन बिछा कैली बिछ आठ गांठ नौ पोर उतर रे विष पोरे पोरे।

यह मन्त्र १२५ बार पढ़ कर झारे बिच्छू विष उतर जाय ॥ ७ ॥

अन्य—बीस उन्नीस अठारह सतरह सोलह पन्द्रह चौदह तेरह बारह ग्यारह दस नौ आठ सात छव पाँच चार तीन दो एक।

यह मन्त्र तीन या सात बार पढ़ कर झारे बिच्छू विष तुरन्त दूर होता है।

बिच्छू विष चढ़ाने का मन्त्र

पर्वत ऊपर चरकी गाय ओकरे गोबर बीछी बिआई कौन बीछी कारी बीछी ग्यारह पोर सतरह

गांठ चढ़ रे बिषा पोरे पोर। १७७ बार पढ़े तो चढ़े।

अन्य—टूटल खाट पुरानी बान चढ़ जा बिच्छू विष सिर पैंतान। जहाँ बिच्छूने काटा है वहाँ यह मन्त्र पढ़ कर फूंके तो विष चढ़ जाय।

सिंगी मछली विष झारनेका मन्त्र

ओं नमों विषहरि को आदेश धर टीपनीसार काल के विष खारी काटे नल गरैई कोई शिंगी मांगुरी। शिंगी माथ विराजे बोढ़न काटा श्रीरामजी के होय दुइ बेटा। लव कुश दुई भाई अति दुरन्त। उनका गुण प्रताप हुआ अनन्त। पदमा दासीकपड़ा फींचे। शिंगी मछरीका कांटा नीचे, माई मनसाके दुहाई विष चल जाई।

तीन वार मंत्र पढ़कर फूंक दे आरोग्य होय।

अन्य----शिंगी मौरी मेवताशी मोरे मोरे दूर्गा दासी अजैपाल खनाया पोखरा ताही पैठ नहाहिं गौरा महादेव पढ़ फूंके निर्विष हो जा।

कठ बेंगुची का मन्त्र

सोनेका सिंधोरा रूपे लागा बान, छव मासके मरली बेंगुची लागी जिस घर वरुआके कान। तुहहि जगावे लोना चमारी श्रीपार्वती की दुहाई।

❁ श्रृगाल कुकुर विष नाशक जल मंत्र ❁

हे जल जलेश्वर तुमको जगत संसार।
जैसे तुम विष को देते तुरत पछार॥
बौरान कूकुर के विष देवे नीर नशाय।
आसरा तेरो मेरी बचन खाली न जाय॥
यह नरसिंह बचन अकारथ नहीं होई।
अमुक के तन गरल जनि अमृत होई॥
आज्ञा देवी देवीकामरू कामाख्यामाई।
हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई॥

एक लोटा जल तीन बार मन्त्र पढ़कर काटे को धुलावे और पिलावे।

अन्य--कारी कुत्ती विष बिलारी नाटा कूकुरके-लोर फलाला काटा कूकुर बारा ध्यलणायु॥

कुम्हारके चाकपर की मिट्टी लेकर काटे स्थानपर फेर २ झारे और रोवां निकले तो आराम होय।

अन्य--ओं नमों आदेश कामरुदेश कामाख्या देवी जहां बसै इस्मायल योगी इस्मायल योगीने पाली कत्ती दस कारी दस कावरी दस पीली दसलाल कूकुर विष हनुमन्त हरे रक्षा करे गुरु गोरखनाथ फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा॥

विभूति से तीन दिन तक झारे आरोग्य होय

अन्य--ओं हसन हसानी कूकुर पलानी घाटमें लोटे बाग में न भूकै आवो आवो सिद्ध यती सिद्ध शब्द सांचा फुरो वाचा।

इतवार मंगल को झारे और कुकरौंधा, पुराना गुड़, कड़ुआ तेलपीसकर काटे स्थानपर लगावे; अवश्य शीघ्र आरोग्य हो।

सर्व विष उतारनेका मंत्र

ओं गङ्गा गौरी दोउ रानी, ठोकर मार करो विष पानी। गङ्गा पोसे गौरी खाय अठारह विषनिर्विषह्वै जाय॥ गुरुकी भक्तिमेरी शक्तिफूरोमंत्र इश्वरोवाचा।

इतवार के दिन सात बार मन्त्र पढ़कर झारे सब तरह के जहर दूर होय ॥

ऋतु दर्द निवारण मंत्र

ओं नमो आदेश देवी मनसा माई बड़ी बड़ी अदरख पतली २ रेश बड़े विष को गल फांसी दे शेष गुरू का बचन न जाय खाली पिता पञ्चमुन्ड के बाम पद ठेली, विषहरी राई की दुहाई फिरै ॥

अदरख को तीन बार मन्त्र पढ़ खिलावे ऋतु यन्त्रण निवारण होय ।

अन्य पान नंत्र—आदेश श्रीरामचन्द्र सिद्ध गुरु को तोड़ू गांठ औगांठाली तोड़दूं लाय, तोड़िदेऊं सरित परित देकर पाय, यह देखि हनुमन्त दौड़कर आय अमुकी को देइ शान्ति पीर भगाय ॥ श्रीगुरु नरसिंह को दुहाई फिरै ॥

एक पान बीड़ा तीन मंत्र पढ़के खिलावे तो रजो धर्म बिकार दूर होय ॥

सुख प्रसव मन्त्र

ॐ मन्मथ मन्मथ वाहि वाहि लम्बोदरं मुंच मुंच स्वाहा। ओं मुक्ताः पाशा विपाशश्च मुक्ता सूर्य्येण रश्यमः। मुक्ता सर्व्व भयाद्गर्भ एहि मारिच स्वाहा। एतन्मन्त्रेणाष्टवारं जलमभि मनय पिवतम् तत्क्षणात् सुख प्रसवो भवति।

इस मन्त्र द्वारा८ बार जल पढ़कर पिलावे तो सुख से बालक होय। जल कूंएसे एक हाथ से खींच कर लावे और जमीन में न रक्खा जाय।

अन्य—लंका खोलों रावण बांधो दुश्मन मुख आग लगावो सब देहीके बांध ख लाऊँ जैसे मातु कौशिल्या पुत्र रामचन्द्र जन्माया देवी कामरू कामाख्या गुरु काली माई की दोहाई।

इस मन्त्र को १३२ बार जल पढ़ कर पिलावे वो आँख धुलावे तो सुख प्रसव होय। जल कुंए से एक हाथ से लाकर उस जल को मन्त्रित करे।

अन्य-ओं नमो भगवते मकर्केतवे पुष्पध्वनिने प्रति चलितं समस्त सुरासुर चित्ताय युवति भग-वासिने ह्रीं गर्भ चल चल स्वाहा।

गौ दुग्धको सात बार मंत्र पढ़ पिलावे तो सुख से बालक जन्म होय।

अन्य—ऐं ह्रं ह्रां ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः। यह मंत्र भोज पत्र पर केशरसे लिखकर मूढ़ गर्भ वाली स्त्री को दर्शन कराके उसके बिछावन के नीचे रख दे तो बालक सुख से होय शान्ति मिलै।

रज दोष नाशन मंत्र

ओं रिं जय चामुण्डे घूमि राम रम्भा तरुवरचढ़ि जाय यह देखत 'असुक' के सब रोग पराय। ओं श्लिं हूं फट स्वाहा असुकी रज दोष नशाय।

कंटेली केला तीन बार मन्त्र पढ़ खिलावे तो रजस्वला का दोष शान्ति होय।

इति कामाख्या मन्त्र सारे शान्ति कर नाम द्वितीय अध्यायें

राधाकृष्ण कृतेन समाप्तम्

* श्री *

अथ कामाख्या मन्त्र सार

तृतीय अध्याय

मारण मन्त्र प्रारम्भ

ॐ नमो काल रूपाय अमुकं भस्मी कुरु कुरु स्वाहा।

प्रथम पन्द्रह सहस्त्र जपे फिर भांग, नमक, चूरण दीपशिखापर एक सौ नौ बार मंत्र पढ़ जलावे तो शत्रु मृत्यु मुख में पतित होता है। परन्तु मारणकर्म प्रयोगके पहले स्थिर चित्त से विचार लेवे। गुरुकी आज्ञा लेकर जिस मनुष्य ने उसके पुत्र, स्त्री बन्धु आदिका नाश किया हो तथा वह पापी पुरुष हो तब ही प्रयोग करें नहीं तो फल उलटा हो सकता है। मैं स्पष्ट लिख देता हूं, इसमें सोच विचार लेवें।

ॐ नमों अमुकस्य हन हन स्वाहा ।

कनेरके फूल सरसों तेलमें मिला यह मंत्र पढ़ दस हजार हवन करे तो शत्रु मरण होय ।

ॐ ऐं ह्रीं महा महा बिकराल भैरवाय ज्वालाक्ताय मम शत्रुं दह २ हन २ पच २ उन्मूलय उन्मूलय ॐ ह्रीं ह्रीं हुं फट् ।

श्मशान में भैंसा के चर्मपर बैठ काले ऊनके द्वारा सात राति तक जप करे । प्रत्येक राति १०८ मंत्र जपे तथा सवा सेर सरसोंका हवन करे तो अवश्य शत्रु नाश होय ।

शत्रु मारण मन्त्र

ॐ नमः काली कङ्काली महाकालीके पुत्र कङ्काल भैरो आदेश रहे अजीर मेरा पठामा काल करे मेरा भोज रक्षा करे आन बांधूं बान बांधूं दशोसुर बांधोना नारीबहत्तर कोठा बांधूं फूलमें भेजूं फूलमें जाय कोठे जो पड़े थर २ कांपे हल २ हले मेरा भेजा सवा घड़ी सवा पहरको बावला न करे तो माता कालीकी शय्या

पर पांव धरे बाबा चूके तो कूवा सूखे बाबा छोड़ कुंवां चाकरे नो धोबीके नाद चमार कूंड़े परै मेरा भेजा बावला न करे तो महादेवकी जटा टूटी भूमि में गिरे माता पार्वतीके चोर पै चोट करे बिना हुकुम नहीं मारना हो कालीके पुत्र कङ्काल भैरूं फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।

पान, सुपारी, दो लौंग, लोहबान, धूप कपूर और एक ठीकरासें सिन्दूर द्वारा सात वदोदन त्रिशूल बनाके नाम लिखे श्मशानमें सब वस्तुओंका हवन करे नित्य २१ वार मन्त्र पढ़के सात दिन तक करे तो अल्प दिनों में शत्रु का नाश होता है।

अन्य—जलकी योगिनी पताल का नाम उठ अमीर जहाँ लगाऊँ तहां दौड़केमार दौड़कर असुकको मारलाई। मुहम्मदपीरकोदुहाई पैगम्बरतुर्कनोबूतकी दुहाई चक्रवोकी फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

अञ्जीर वृक्षके पास जाय गूगल की धूनी देकर एक पत्ता मुंह में रख तालाब में गोता लगाकर ७ मन्त्र पढ़

फिर धूनी सुखाकर शत्रु के मुख या सिरपर डारे तो निःस्सन्देह शत्रु मरे।

अन्य मन्त्र—ओं नमः गुरुकी आज्ञा लाल पलङ्ग नौरङ्गी छाया काढ़ कलेजा तूंही चाख, चौकालगाय दीप जलाय तीनबार कहे,आवे श्रीमहावीर बलबीर हनुमानजी, फिर तीन बार कहे, आवो कलुआवीर रणधीर, फिर नैवेद्य धर ११ दिन प्रतिदिन सहस्रमंत्र जपे और घृतमेंलौंग, सुपारी जायफल, गूगल, मिश्री मिला १२५ बार होम करे। ब्राह्मण भोजन करावे सिद्ध होय। जब प्रयोग करे तब इसी विधिसे एक माला ११ दिनतक जपेतो अवश्यशत्रु का मरणहोय।

शत्रु नाशन मन्त्र

ओं नमः कर फावड़ी बांधे कामरी भैरो वीर खड़ा मसाला हलकी धनुहो बज्रका बाण अमुकको बेगि ना मार तो देवी कालीको आन। फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

दीपमालिकाके रात्रिमें आसन बाँध चौकालगाय धूप दीपनैवेद्य धरके १२१ बार मन्त्रपढ़ दीपशिखापर

मारे। जब प्रयोग करना हो तब काले कुत्तेके रक्त उड़द और चित्ताभस्म मिलाय तीन बार मन्त्र पढ़ कर शत्रु को मारे तो मरे।

शत्रु को दुख देने का मंत्र

ॐ नमः कामाक्ष्ये अमुकस्य हन २ स्वाहा।

सोमवार या मङ्गलवारको श्मशानकी धूललेकर राई और आक का काष्ठ लेकर बीस बार मंत्र पढ़ हवन करे तो वैरी दुख पावे।

शत्रु का मनचाही कष्ट का मंत्र

ॐ नमः हनुमंत वलवन्त मातुअञ्जनी पुत्रहल हलन्त आवो चढ़न्त गढ़ किला तोड़न आवो लङ्का जाल वाल भस्मन्त करि आवो लेइ लंगा लंगूर तेल पटाय सुमिर ते पटका ऐ चन्द्री चँद्रावली भवानी मिलि गावे मंगलचार विजयो रामलषण हनुमानजी आओ तुम आओ सात पानका बीड़ा लगाय चाभी माथे सिन्दूर चढ़ाओ आओ मन्दोदरिके 'सिंहासन हिलत डोलत आओ यहाँ आओ हनुमन्त माया

नरसिंह माया आगे भैरूँ किल किलाय ऊपर हनुमंत गाजे दुर्जन को डाट दुष्टको मार करो संहार राजा हमारे सतगुरु फुरो ईश्वरो वाचा ।

प्रथम दशहजार मंत्र जपकर ४० वा २१ दिन में पूरा करे । षट कर्मानुसार सब विधि करे पहिले दिन ७ पानका बीड़ा सात लड्डू भोग धरे फिर दूसरे दिनसे एक बीड़ा सात बताशा और धूप दीप पुष्प आदि हनुमानजी की पूजनकर सिन्दूर चढ़ावे तो सिद्ध होय । प्रयोग काल में भूमि पर शत्रुकी मूर्ति (पुतला) बनावे जहाँ तहाँ बीज लिखकेहृदय में शत्रु नाम लिखे और मुर्देका हाड़ छाती में ठोंक पुतलाको मशान भूमिमें गाड़े फिर मुर्देको भस्म से लोप दे तो शत्रु पागल हो उठ भागे औरभागने से विवश हो बीमार हो जाय यदि जल्द पुतला न उखाड़ा जाय तो शत्रु पर हजारों आपत्ति आए और अन्तमें मर जाय । ध्यान रहे कि जो कोई कर्म करे हर समय मंत्र पढ़ता जाय । और इस मंत्र

को पढ़ के लोहे के कीलों को शत्रु घर के चारों कोने में गाड़ दिया जाय तो स्तम्भन हो।

अन्य-- ॐ नमः काल भैरो कालिका तीरमार तोड़ बैरी की छाती घोट हाथ काल जो काढ़ बत्तीस दांती यदि यह न चले तो नोखरी योगिनी का तीर छूटे मेरी भक्ति की शक्ति फुरो मन्त्र इश्वरो वाचा।

कनेर का फूल २१ प्रति २१ गुगुल की गोली लेकर श्मशान की अग्नि में एक फूल एक गुगुल मंत्र पढ़कर हवन करे २१ दिन तक करे तो शत्रु को अत्यन्त ही कष्ट मिले।

शत्रु मारण मन्त्र

(१) भरणी नक्षत्र भोमबार के दिन चिता की लकड़ी लाकर शत्रुके द्वारपर अर्द्ध रात्रिको गाड़ेतो एक मासमें शत्रुका मृत्यु हो लकड़ी न्योतकरलावे।
(२) बहेड़ा बृक्ष की लकड़ी का कोयला और बहेड़ा का फल, करञ्जा का फल, व लता केशर

इन सबोंको सरसों के तेल के साथ नाम लेकर होम करे तो मृत्यु होय।

(३) काले उल्लूका जीभ में केशर मिलाकर दुग्ध के साथ पुष्प नक्षत्र रविवार में जिसे पान करावे तो वह उल्लू ऐसा हो जाय उसको कुछ नहीं सूझे फिर मरण होय।

(४) शनिवारको काला तीतर व बड़ी बटेर और लवा पक्षी की बीट लाकर शत्रुके सिरपर छोड़े तो अवश्य शत्रु का मरण होय।

(५) अश्लेषा नक्षत्र में काले सर्प की अस्थि एक अंगुल प्रामणले शत्रुके घरमें फेंके तो शत्रु वंश विनष्ट होय।

भूतादिक मारण मन्त्र

ओं नमः आदेश गुरुको हनुमंतबीर बजरंगीवज्र धार डाकिनी शाकिनी भूत प्रेत जिन्न सबको अब मार मार, न मारे तो निरञ्जनि निराकारको दोहाई।

शनिवार से लगातार इक्कीस दिन तक हनुमान जी की पूजा व २२१ मंत्र जप करे फिर चौरास्तेकी कांकरी अथवा उड़द् सात बार पढ़ कर रोगी को झारे।

अश्व मारण मन्त्र

ओं नमः पच २ स्वाहा।

अश्विनी नक्षत्रमें घोड़े का हाड़ सात अंगुलका मंगाकर घोड़शाला में गाड़े और उपरोक्त मन्त्रको हजार बार जपे तो अश्व मरण होय।

नाशन मन्त्र

मछुआ मछली नाशन मन्त्र—ओं जलो जले पच पच स्वाहा।

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रमें आठ अंगुल प्रमाण बैर की कील उपरोक्त मंत्र १०८ बार पढ़कर मछुओंके घर में गाड़ दे तो सब मछली नाश हो जाय।

धोबी वस्त्र नाशन मन्त्र—ओं कुम्भे स्वाहा।

ऊपर लिखि विधिके अनुसार चमेलीकीलकड़ीसे कार्य साधन करे।

तेली तेल नाशन मंत्र—ओं दह दह स्वाहा।

चित्रा नक्षत्र में चार अंगुल प्रमाण भटैटी की लकड़ी का कीला तेली के घरमें गाड़े तो तैल नाश होता है। हजार मन्त्र जपकर पहिले सिद्ध करे।

अहीर दुग्ध नाशन मन्त्र----अनुराधा नक्षत्र में आठ अंगुल जामुनकी लकड़ी लाकर ग्वाले के घरमें गाड़े तो दूध नष्ट हो जाय।

किसान अन्न नाशन मन्त्र

ओं नमो बज्रपाताय सुरधिपति राधापति हूं फट् स्वाहा।

जहां पर आकाशसे बज्र गिरा हो वहां की मिट्टी लेकर बज्र बनावे फिर १०८ मंत्र पढ़कर जिस खेत में डाले उसका अनाज नष्ट हो जाय।

माली साक नाशन तंत्र----गंधक जलमें घोल कर जिस खेत में छीटे उस खेत का साक सब नष्ट हो जाय।

तम्बोली पान नाशन तंत्र—शतभिषा नक्षत्रमें नौ अंगुल प्रमाण सुपारी काठकी कील बनाय तमोली के घरमें गाड़े तो पान नष्ट होय।

मदिरा नाशन तन्त्र-कृत्तिका नक्षत्रमें सोलह अंगुल प्रमाण आक (मदार) की जड़का कीला बनाय कलाली (मदिराकीदुकान)में डालेतो मदिरानष्टहोय।

कुम्हार वर्तन नाशन तंत्र-हस्त नक्षत्रमें तीन अंगुल प्रमाण कनेरका लकड़ीका कील कुम्हारके घरमें गाड़े तो सब वर्त्तनादि नष्ट होय।

अन्य—कौंच बीजको काले घोड़ेके वालमें गूँथ कर आवाँमें डाल देतो सब वर्तन टूटकर नाश हो जाय।

गर्भ नाशन तन्त्र—एरंडकी जड़ नौ अंगुल प्रमाण लेकर उसपर गन्धकका लेप करके तीन दिन तक योनिमें रखे तो गर्भ नाश होय।

अथ उच्चाटन मन्त्र

ॐ नमः भगवते रुद्राय द्रंष्ट्राकारालाय अमुकं

सपुत्र बान्धवैः सह हन हन दह दह पच पच शीघ्रं उच्चाटय २ हुं फट् स्वाहा ठं ठः ॥

मनुष्य की हड्डी या गूलर काष्टको चार अंगुल प्रमाण कील बनाय एक सौ आठ बार मन्त्र पढ़कर शत्रुके द्वारपर गाड़े तो अवश्य उच्चाटन होय। इसी मंत्रको कोई २ ऐसे प्रयोग करते हैं कि सफेद् सरसों और शिव निर्माल्य पोटली बनाके गाड़ते हैं फिर उखाड़ने पर सुखी होता है। मन्त्र दशहजार बार जपकर पहले सिद्ध करलें।

अन्य-ॐ नमो भीमास्याय अमुकस्य गृहेउच्चाटय कुरु कुरु स्वाहा ॥

प्रथम १००० बार जप कर सिद्ध करे, फिर जहाँ भौम वारको दोपहर समय गद्हा लोटताहुआ देखे तो जाय, उत्तर मुख होय बांये हाथसे धूल लाकर २१ बार मन्त्र पढ़कर शत्रु के घरमें फेंके तो उच्चाटन होता है।

❁—❁

महा उच्चाटन मन्त्र

ॐ तुङ्ग स्फुलिङ्ग वंक्रिम चांचिक विद्वद्दहन मांध बने स्फरै स्फरें ॐ ठः ठः ॥ अमुकं ॥

रविवार या मंगलवारको जब अमावस्या पड़ेतो आधीरातके समय ऊँटके चर्मपर सफेद गुंजाकी मालसे शत्रुके नामके साथ मंत्र एक हजार अस्सी वार जपे तो शत्रु को मारणान्तक उच्चाटन होय।

अन्य—ॐ श्रीं श्रीं श्रीं अमुक शत्रु उच्चाटन स्वाहा।

उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र में कुंकुम कांष्ट सात अंगुल प्रमाण लाय १०८ मंत्र पढ़कर शत्रु के द्वार पर गाड़े तो सात दिनमें उच्चाटन होय।

उच्चाटन मन्त्र

अश्लेखा नक्षत्रमें मरघटका हाड़ घुग्घू पक्षीका हाड़ एवं बिल्लीका चमड़ा व नख व नींबूकी लकड़ी इन सबोंको काले धतूरेके रसमें मिलाकर शत्रु गृह में प्रवेश करे तो अवश्य उच्चाटन होय।

अन्य-पीपल काष्ठका दश अंगुल प्रमाण कील बनाकर शत्रुके घरमें गाड़े तो शत्रुका उच्चाटन होता है।

अन्य-एक शिवलिङ्ग बनाय उसपर ब्रह्मदंडी और चित्ताकी भस्म लेपन करे फिर स्वेत सरसोंके साथ शनिवारको शत्रुके घरमें फेंके तो महा उच्चाटन होता है।

उच्चाटन मंत्रका प्रयोग बिना सोचे समझे न करें, गुरुकी आज्ञा पाकर भी प्रयोग करने के पहले बुद्धिसे काम लें।

॥ इति तृतीय अध्याय ॥

॥ श्री ॥

अथ कामाख्या मन्त्र सार

चतुर्थ अध्याय

मोहन मन्त्र प्रारम्भ

ओं नमः भगवते कामदेवं यस्य २ हृदयं भवामि यश्च २ मम मुखं पश्यति तं तं मोहयतु स्वाहा ॥

यह मंत्र पहले दशहजार जपकर सिद्ध करलें फिर मनसिला, कपूरको केलाके रसमें पीसकर तिलक करे तो सर्व लोक मोहित होय। अथवा विल्वपत्र छायामें सुखाकर दुग्धमें पीसकर २१ बार मन्त्र पढ़ तिलक लगाकर जिसके सन्मुख जाय वह क्षण भरमें तन मन धनसे मोह जाय।

अन्य—ओं उड्डामरेश्वराय सर्व जगन्मोहनाय अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं हुं फट स्वाहा प्रथम एक लक्ष प्रमाण जपकर सिद्ध करे।

यह मन्त्र पढ़ २ सहदेवीके रसमें तुलसीके वीज पीसकर रविवारको सातबार मंत्र पढ़कर तिलककरे तो सर्व जगत मोहित होय। अथवा कुंकुम, गोरो-चन सिन्दूरको आंवलेके रसमें घोटकर तिलक करे तो देखते ही मोहित होय।

अन्यविधि—हरिताल अश्वगन्धको कदली (केला) के रसमें पीस गोरोचन मिलाय सात वार मंत्र पढ़कर तिलक करे तो राजकुल मोहित होय।

अन्यविधि-कुटकी, जीरा, श्वेत आकके वीज और मोथा इन चारोंको अपने रुधिरमें पीस तिलक कर जिस स्त्रीके सन्मुख जाय मोहित होय।

अन्य विधि—रविवार अष्टमीको पांचो अङ्ग बादामके श्वेत चिरमिटी रत्ती प्रमाण पीस तिलक करे तो स्त्री पुरुष, बालक बृद्ध मोहित होय।

अन्य विधि—श्वेत गुंजाके रस में ब्रह्मदण्डी की मूल पीस सात बार मंत्र पढ़ देहमें लेपन करे तो सर्व जगत मोहित होय।

महामोहन मन्त्र ।

ॐ श्रीं धूं धूं सर्व्व मोहयतु ठः ठः ॥ प्रथम १००० बार जपकर सिद्ध करे । परिवाके दिन चिंचिक पक्षीका पङ्ख लाकर कस्तूरीमें पीस १०८ बार मंत्रपढ़ कर तिलक लगावे जो देखे तुरन्त मोहित होय ।

सर्व्व मोहनो मन्त्र ।

ॐ नमः पद्मनी अञ्जन मेरा नाम इस नगरी में जाय मोहूं। सर्व ग्राम मोहूं राज करन्ता राजा मोहूं फर्श पै बैठाय पंचमोहूं । पनघटकीपनिहारी मोहूं । इस नगरीके छत्तीस पवनिया मोहूं । जो कोई मारमार करन्त आवे, उसे नरसिंह वीर बाम पद अंगूठा तर धरे और घेर लावे । मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा ।

शनि रवि की रात्रि में नरसिंह देव की विधि पूर्वक पूजनकर गुगूल पान सुपारी घृत शक्कर १०८ बार मंत्र पढ़कर हवन करे तो सिद्ध होय। फिर चन्दन बनका रूईमें अपामार्ग (लटजीरा) की जड़ लपेट बत्ती

बनाय घृत दीपमें जलाकर काजल बनाकर सातबार मन्त्र पढ़कर नयनमें अञ्जन करे तो जिसकी नजर पड़े वही मोहित होय इसी प्रकार समस्त नगरको मोहित करे ।

अन्य--ॐ नमः अनरुठनी अशत्र स्थनी महाराज क्षनो फट् स्वाहा ।

उल्लूपक्षी । पङ्ख लाय लेखनी वनाकर बकरा के रक्तसे १०८ मंत्र लीखे और उसे पगड़ीमें रख के जिसके सामने जा खड़ा हो मोहित होय ।

सर्व्व ग्राम्य मोहन मंत्र ।

ॐ यती हनुमन्त यह जाय मरे घट पिंडका कौन है शौर छत्तीस मयवन परे जेहि दश मोहूं जेहि दश मोहूं गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥

प्रथम वार शनिवारतक प्रतिदिन १४४ बार मंत्र जप करे तथा हनुमानजीकी पूजन करके सिद्ध करले फिर चोरास्तेसे सात कङ्कड़ी लेकर १४४ बार मंत्र पढ़के

ग्राम्यके मुख्य कूपमें डारे तो जो कोई उस कूप-
जलको पीवे वही मोहित होय ।

अन्य तेल मन्त्र—तेलसे यह तेल राजा प्रजा
पाऊं मेल पोखरी पानी मसको आ लगाय योनि मेरे
पाय लगाय हाथ खड़ग बिराजे गले फूलोंकी माला
जानि बिजानै गोरख जानै मेरी गतिको कहै न कोय
हाथ पछानों मुख धोऊं सुमिरौं निरञ्जन कार देव
हनुमन्त यतो हमारी पति राखे मोहनो दोहनी दोनों
बिहिनी आवो मोहनो रावल चलैमुख बोले तो जीभ
मोहूं आश मोहूँ पास नोहूं सब संसार मोहूं निसरूं
बन्दी देह ललाट, शब्द सांचा फुरो मंत्र ईश्वरो० ॥

दीपमालिका की रात्रि में उलटो घानी श्वेत
तिल का तेल निकलवा कर इक्कीस वार मंत्र पढ़
उस तेलको विन्दी लगावे तो सब जीव मोहित
होय ।

सभासोहन मन्त्र ।

कालूं मुंह धोइ करूं सलाम मेरे नैनों सुरमा बसे

जो निरखै सो पॉयन पड़े गोसुल आजम दस्तगीर की दुहाई ॥

शुक्रवारके दिन सवालाख गेहूं एक २ कर मंत्र सवालाख पढ़ आंटा पिसवाय घीका हलुवा बनाकर गौसुल आजन को नियाज़ दे, और स्वयं उसको खाय ७ बार मन्त्र पढ़ सुर्मा लगाकर सभा में जाय तो सभा मोहित होय।

कामिनी मोहन मन्त्र।

अल्लाह बीच हथेलीके मुहम्मद् बीच कपार, उसका नाम मोहनी जगत मोहे संसार। मोहे करे जो मार मार, उसे मेरे बांये पांवतर डार। जो न माने मुहम्मद् पैगम्बर की आन, उस पर मुहम्मद् मेरा रसूलिल्लाह ॥

शनिवार के दिन से धूप दीप नैवेद्य रख एक एक मन्त्र नित्य दूसरे शनि तक जपे फिर स्त्री के पैर तले की धूल ले सात वार मन्त्र पढ़कर जिस स्त्रीपर डाले वही मोहित हो जाय।

सर्वोत्तम सभा मोहन मन्त्र ।

ओं नमः आदेश नरसिंह गुरुका ॐ शङ्खाहूली बनमें फूली ईश्वर देख गर्व से जाय भूल आवभाव से राजा प्रजा कदम गिराव मङ्गल मोहन वशीकरण मोहन मेरो नाम वे मोहन असुक के हृदय बसो संग महेसुर गांव चल मोहनी रावल चल जलती अंग बुझावत चल तीन गांव आगे मोह तीन गांव पाछे मोह तीन गांव उत्तर मोह तीन गांव दक्षिन मोह आवते का नजर मोह तखत बैठा राजा मोह पलङ्ग बैठो रानी मोह दर मोह दीवार मोह काजी की अक्ल मोह तू नरसिंह वीर हमारा कार्य्य ना करे तो अपनी मां का दूध पिया हराम करे ॐ ठः ठः ठः ठः ठः स्वाहा ॥

शनिवार को शङ्खाहूलीको न्योता देकर रविवार को इक्कीस मन्त्र पढ़ विधि पूर्वक सात दिन तक नरसिंह देव का पूजन कर चावल घृत शक्कर से १२१ बार हवन कर आरती सातबार उतारके शङ्खा-हूली की गोली बनाकर रख ले। फिर सातबार

मंत्र पढ़ पगड़ीमें रख सभामें जाय तो सारी सभा मोहित हो। इस मन्त्र को २१ बार पढ़ के मिठाई स्त्री को खिलावे तो स्त्री मोह जाय। और किसीसे कोई कार्य्य साधना हो तो गोली जल में घिस सात मन्त्र पढ़ तिलक करे तो मनोरथ पूरा होय।

गुड़ मोहनी मंत्र।

ॐ नमो आदेश श्रीगुरुको यह गुड़ राती यह गुड़ माती यह गुड़ आवे पांव पड़ती जो मांगूं वही पाऊं सोवत तिरियाको जगाय लाऊं चल अगिया बैताल "अमुकी" के हृदय पैड़ चलावे चाल निशि को चैन न दिन को सुख घुम फिर ताके मेरा मुख। जं मकड़ी मकड़ो से टले तो माथ फार दो टूक हो पड़े काला कलवा काली एक कलवा, सोइ धाइ चाटे मेरा तलवा। आंख के पान कवारी बसे धन और जोवन सो खरी पियारी रेत रङ्ग गुड़ में लसे शीघ्र 'अमुकी' आवे फलाना पास हनुमन्तजी के शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा॥

प्रथम सात शनिवार प्रति शनिको १२१ बार मन्त्र

पढ़कर त्रि त पूजन करे सिद्ध हो, फिर थोड़ासा गुड़ में अनामिका अंगुठा का रक्त मिला २१ बार मन्त्र पढ़कर जिस स्त्री को दिखावे वही प्राण से मोहित होय।

मिठाई मोहन मन्त्र

ओं नमो कामख्या देवीको आदेश जल मोहूं थल मोहूं जङ्गल की हिरणी मोहूँ बाट चलन्ता बटोही मोहूं दरबार बैठा राजा मोहूं पलङ्ग रानी मोहूं मोहनी मेरा नाम मोहूं जगत संसार तारा तरीला तोतला तीनों बसे कपाल सिर चढ़े मातु के दुश्मन पामाल करूँ गात के मोहनी देवी की दोहाई फिरै।

शनिवार से प्रारम्भ करे २१ दिन तक लगातार १४४१ मन्त्र पढ़ कर गुग्गुल हवन करे फिर मिठाई पर २१ बार मन्त्र पढ़ कर जिसे खिलवे मोहित होय।

तेल मोहन मन्त्र

ॐ नमो मन मोहनी रानी सिंहासन बैठी मोह रही दरबार मेरी भक्ति गुरू का शक्ति दुहाई गौरा

पार्वती बजरङ्ग बली को आन नहीं तो लोना चमारी की आन लगे।

दीपमालिकाकी रात्रि को २०० बार जपकर सिद्ध करे फिर चमेली तेल की बिन्दी लगाकर सभा में जावे तो सभा मोहित हो और जिसे मोहना हो उसके शरीर पर सात मन्त्र पढ़ कर तेल का छीटा दे अवश्य मोहित होय।

अन्य--ओंनमो मन मोहनी रानी मोहनी चल सैर को मस्तकधर तेल की दीप जल मोहूं थल मोहूं सब जगत मोहूं औ मोहूं मोहनी रानी जो शैय्या बैठी मोहर दरबार गौरा पार्वतीको दोहाई। जोना चमारी को दुहाई फिरे नहीं हनुमन्त की आन॥

उपरोक्त विधि अनुसार प्रयोग करे इसमें ३२० मन्त्र जपे।

लौंग मोहनी मन्त्र

ओं नमः आदेश गुरू का लौंग २ तू मेरा भाई तुम्हारी शक्ति चलाई पहली लौं राती बाती दूजा लौंग जोवन माती तीजी लौंग अङ्ग में राखे चौथी

लौंग दूईकर जोड़े चारो लौंग जो मेरी खाय "अमुकी" झट मेरे पास चल आय आदेश देवी कामरू कामाख्या की दुहाई फिरै ॥

इतवार से प्रारम्भ कर लगातार इक्कीस दिन तक प्रतिदिन २१ मन्त्र पढ़कर दीपक पूजन करे फिर चार लौंग ७ मन्त्र पढ़कर जिसे खिलावे वह तन मन से मोहित होय।

सुपारी मोहन मन्त्र

ओं नमो दैव देवेश्वर महारये ठं ठं स्वाहा ॥

एक सौ आठ वार मन्त्र पढ़ चित्तो सुपारी खिलावे मोहित होय।

अन्य मन्त्र----ओं नमः गुरूका आदेश पीर मैं नाथ प्रीतमें माथ जिसे खिलाऊं तिसे मोहित फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।

सूर्य्यग्रहणके अवसरपर नाभि पर्यंत तालाब में खड़े होकर सातबार मंत्र पढ़कर १ सुपारी निगल जाय फिर जब पेटमेंसे निकले तो जलसे धोकर दुग्ध

धोकर सात मन्त्र पढ़ जिसे खिलावे वही तुरंत मोहित होय।

फूल मोहनी मन्त्र

ओं नमो कामरूकामख्या देवी जहां बसे इस्माइल योगी योगीने लगाई फुलवारी फूल लोढ़ै लोना चमारी एक फूल हंसे दूजे फूल मुसुक्याय तीजे फूल में छोटे बड़े नरसिंह आय जो सूंघे इस फूलकी बास वह चल आवे हमारे पासदुश्मनको जाई जिया फटै मेरी भक्ति गुरू शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।

रविवार से लगातार २१ दिन तक धूप दीप नैवेद्य लौंग पान फूल धर के सुगन्ध पुष्प को घृत में मिलाकर नित्य प्रति १०८ बार हवन करे फिर सुगन्ध पुष्प को साथ मंत्र पढ़ सुंघावे तो मोहित हो चला आवे।

चम्पा फूल मोहनी मंत्र

ओं नमो आदेश कामरू देश कामाख्या देवी जहां बसे इस्माइल योगी इस्माइल योगीने लगाई

फुलवारी फूल लोढ़ै लोना चमारी एक फूल राती एक फूलमती एक फूल हँसी एक फूल मुसुकाय तहॉ लगा चम्पाका गाछ चम्पा के गाछमें काला भैरों रहाय जो भूत प्रेत मरे मसान में आवे यह किसके काम आवें टोना टामन के काम पठाऊँ काला भैरों जो लावे मुस्के बॉध बैठी हो तो भगाय लावे सोवती होय तो जगाय लावे वह सोवतो राजा के महलों प्रजा के पलङ्ग हों मुझ से लेनी रानी यह फूल दूं जिसके हाथ वह लागै मेरे साथ हमको छोड़ पर घर जाय छाती फाटि वहीं मर जाय इसमें चूके उमाह सूखे लोना चमारी बाहरी योगीके कुण्डमें पड़ जाय बाचा छोड़ कुवाचा जाय तो नरक खार में गिर जाय।

शनिवार सन्ध्याको जाय चम्पा पेड़ को न्योता दे शाखा में लाल धागा बॉध के चला आवे. फिर रविवार को जाय वही शाखा फूल सहित ले आवे और धूप दीप गूगुल नैवेद्य रख २१ दिन तक नित्य ७ बार मन्त्र पढ़कर भैरव का पूजन करे फिर मदिरा

उरद् तेल गुड़ दही भोग लगावे फिर जिसे चम्पा फूल माला सात मन्त्र पढ़ के देवे वह सूंघते ही मोहकर पास चला आवे।

मोहन तन्त्र

(१) खंजन पक्षी की बीट,मुक खद्योत इन दोनों को पीस टिकिया बनाकर भस्म बनाय जिसके सिर पर छोड़े वही मोहति हो इसमें संशय नहीं।

(२) गरगल पूँछ, काछिव नख और पङ्क और सिगरफ चारों पूर्ण कर जिस कामिनी के सिर पर छोड़े वह अपनो प्यारी होवें।

(३) काले धतूर के पांचो अङ्ग तथा महिषा रुधिर, पीपल और गूगूल यह सब चूर्ण कर वस्त्रों में धूनी दे पहिर के शत्रु से मिले तो शत्रु मोहित होय।

(४) भोजपत्र पर रक्त चन्दन द्वारा शत्रु का नाम रविवार के दिन लिखे मधु (शहद) में डुबो दे तो शत्रु मोहित होय।

(५) चैत्र मास के कृष्ण पक्ष अष्टमी को चित्रा नामक पौधा को न्योता देकर फिर नौमी के दिन धूप दे पास रख के नजर मिलावे तो मोहित होय।

(६) कारी कूकरी जब बिआवे तो रविवार के दिन दूध लेकर दो चार लौंग तीन दिन तक भिगोवे फिर तीन दिन तक बीर्यमें रखे फिर उस लौंगको जिसे खिलावे स्त्री हो या पुरुष निश्चय मोहित होय।

(७) रविवार को एक पान का बीड़ा लगाय धोबी के घाटपर सन्ध्या समय नग्न होकर खोलकर रखे फिर पानका बीड़ा बनाय कपड़े पहन घर को आवे पीछे न देखे, वह बीड़ा जिस स्त्री को खिलावे वह मोहित होय।

आकर्षण मन्त्र प्रारम्भ

ओं नमः देव आदिरूपाय अमुकस्य आकर्षणं कुरुकुरु स्वाहा ॥

काले धतूर का रस गोरोचनमें मिलाय सफेद् कनेर की लेखनी से भोजपत्र पर नामके सहित मंत्र लिख खैरकी अग्नि में तपावै तो सौ योजन तकका आकर्षण होय अथवा अनामिका अंगुलीके रुधिरसे नाम सहित मन्त्र लिखकर मधुमें डुबा दे तो निश्चय स्त्री तथा पुरुष का आकर्षण होय अथवा मनुष्य की खोपड़ी पर गोरोचन से मन्त्र लिख खैर काष्ठ की अग्नि में तीन सांझ मन्त्र पढ़ २ कर तपावे तो अरुन्धती-सी स्त्री को आकर्षण होता है। प्रथम मंत्रका दस हजार जप कर सिद्ध करे।

महा आकर्षण मंत्र

ॐ एं एं एं लं लं लं क्रंक्रां क्रीं ठः ठः स्वाहा।

जिसे बुलाना हो उसे मन में ध्यान करके षट-कर्मानुसार मन्त्र पढ़ २ कुलीरापक्षी के मांस का १०८ बार होम करे तो वह उसी समय उपस्थित हो ।

अन्य—ओं नमः ह्रीं ठं ठः स्वाहा ॥

यह मन्त्र मङ्गलवार से दश हजार जप सिद्ध करे फिर मूसे की बॉबीकी मिट्टी व सरसों और बिनौला तीन बार मन्त्र पढ़कर जिसे आकर्षण करना हो उसके वस्त्र पर मारे तो अवश्य आकर्षण होय ।

अन्य—ओं नमः भगवते रुद्राय सदृष्टि लंपिनाहर स्वाहा कंसासुर की दुहाई ।

मङ्गलवार से प्रारम्भ कर दश मङ्गल तक नित्य १२ मंत्र जप दशांश हवन तथा ब्राह्मण भोजन कराय ऊपर लिखे अनुसार प्रयोग करे तो आकर्षित होय ।

आकर्षण तन्त्र प्रारम्भ

(१) होली के दिन होलिका को न्योता देके लड़की लाय धूप दीप रख पूजन करे फिर धोबी की

भट्ठी में जलाकर कोयला बना चूर्ण कर रक्खे जब हस्त नक्षत्र आवे तब जिस किसी स्त्री के सिर पर छोड़े बिना बुलाये चली आवे ।

(२) अश्लेषा नक्षत्र में अर्जुन वृक्ष की मूल लाकर बकरी के मूत्र में पीस किसी के सिर पर क्योंन छोड़ा जाय वह निश्चय ही आकृष्ट होता है।

(३) दीवाली के दस दिन पहले एक नयी हँड़िया में एक रुपया धर पूजन करे फिर मूली न्योत कर काट लावे और इन्द्रयव तथा स्त्री रजस्वला-रक्त में मिलाकर दिवाली के दिन श्मशान में ले जाय चित्ता भस्म मिलाकर जिस किसी स्त्री या पुरुष या पशु के मस्तक पर छोड़े वह तुरत आकर्षित होता है यह अनोखा तान्त्रिक योग है ।

(४) मङ्गलवारको करबिलास पक्षी (लम्बी चोंच काला और सफेद एवं तालाबके पास रहता है) का बीट लावे और जिस कामिनीको आकर्षण करना हो उसके पलंग तले की धूली लाय बीट में

मेलाकर पुतला बनाकर सम्मुख ध्यान कर बैठे तो दूर देशमें हो तब भी वह सन्मुख आ जाय।

(५) स्त्री के बायें पैर तलेकी धूल लाय गिरगिट के रुधिर में सान पुतला बनाकर हृदय में उसका नाम लिख मूत्र स्थानमें गाड़ नित्य उसपर मूत्र करे तो सैकड़ो योजना दूर स्थित स्त्री आकर्षित होय।

* इति चतुर्थो अध्याय *
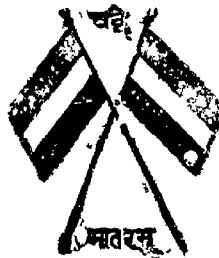
॥ श्री ॥

अथ कामाख्या मन्त्र सार

पंचम् अध्याय

वशीकरण मन्त्र प्रारम्भ

सर्व जीव वशीकरणम्

ओं नमो सर्व जीव वशङ्कराय कुरु२ स्वाहा। एक लक्ष जपने से सिद्ध हो। फिर पुष्य नक्षत्र में पुर्नवा की जड़ लाय सात बार मंत्र पढ़कर दाहिनी भुजा में बाँधे तो सर्व लोक वश्य करने की क्षमता प्राप्त हो।

अन्य-ॐ नमः फट् बिकट घोर रमिणी स्वाहा। ग्रहण में हजार बार जपकर सिद्ध करे फिर रविवार को यह मन्त्र पढ़२ जिसके नाम से सात ग्रास अन्न भोजन करे वह निश्चय वशीभूत होता है॥

अन्य-ॐ नमों चामुण्डे जय जय वश्वमानय जय २, सर्व सत्वा नमः स्वाहा। प्रथम दस हजार जप सिद्ध करे फिर रविवार को एक फूल सात मन्त्र पढ़कर जिसे देवे वह निस्सन्देह बशीभूत होय।

अन्य—ॐ ताल तुम्बरी दह दह दरै झाल झाल आं आं आं हुं हुं हु हें हें हें काल कमानी कोटा कमरिया ओं ठः ठः।

कोचनी का फूल एवं राजहंस पक्षी का पङ्ख श्वेत गौ दुग्ध में खीर बनाकर १०८ मन्त्र पढ़ हवन करे और वश करने वाले को मन में ध्यान करे तो अवश्य अति शीघ्र मनोरथ पूर्ण होय

अन्य—ॐ सुनर्शनायहु फट स्वाहा।

एक लक्ष जप सिद्ध करे॥

हस्त नक्षत्र में बबूल की जड़ लाकर तीन मंत्र पढ़कर दाहिनी बाहु में बांधे तो राज सन्मान पावे तथा वह कहीं विवाद ग्रस्त में न पड़े।

त्रिभुवन बशीकरण मंत्र

ॐ- नमः भगवती मातंगेश्वरि सब मन रञ्जनि सर्वेषां महामतङ्गे कूवरि के नंद् नंद् जिवहे जिवहे सर्व जगत वश्य मानय स्वाहा।

यह मंत्र दस हजार जप सिद्ध करे फिर चंद्र ग्रहण के समय सफेद् विष्णुकान्ता की जड़ लाय तीन बार मंत्र पढ़कर आंख में अञ्जन कर जिसे देखे वही बशी होय शुक्लपक्ष त्रयोदशी को सफेद् घूंघची की जड़ सात बार पढ़कर जिसे खिलावे वही अति शीघ्र प्राण मनसे बशीभूत होता है।

अन्य—ॐ नमो वक्रकिरणे शिवे रक्ष भये महायामृत कुरु कुरु स्वाहा।

श्वेत अपराजिता गोरोचन के साथ पीस सात बार मंत्र पढ़कर ललाट में तिलक करे तो, समस्त जगत बशीभूत होता है। प्रथम १००० जप कर सिद्ध करे।

अन्य--ओं मोंडरो। प्रातःकाल किसीसेबिना

बोले हुये तथा व्रत रख के पांच सौ मन्त्र जप करते हुए जिसका ध्यान करे वही बशीभूत होय।

भूत बशीकरण मन्त्र

ओं श्रीं बं बं मुं भूतेश्वरी कुरु कुरु स्वाहा॥

रसोई का बचा हुआ जल मूल नक्षत्र में बबूल वृक्ष की जड़में १०८ मन्त्र पढ़कर चालीस दिन तक डाले ४१ वे दिन ज़ल न देकर तीन वार मन्त्र पढ़े तो भूत सन्मुख आकर जल मांगे तो डरे नहीं। साहस कर तीन बचन कबूल करावे। फिर जब याद करे भूत सन्मुख आकर कार्य सिद्ध करे और सेवा में रहे।

अन्य—ओं साल स्लीता सओ सलबाईकाग पढ़ताधाई आई ऊँ लं लं ठः ठः।

शनिवार को आधी रात में बबूलके वृक्षकेनीचे नग्न होकर मदार की लकड़ी जलाय काले तिलऔर उरद मंत्र पढ़ २ हवन करे तो प्रेत संमुख आकर बोले उस समय किंचित डरे नहीं एवं दृढ़ हो

अनमिका अंगुली काट कर सात बूंद रक्त भूमि पर टपकावे फिर प्रेत सदा बस में रहे जब बुलाना हो तो मन्त्र पढ़ पाखाने का बचा हुआ जल बबूल की जड़ में डाले तुरन्त सन्मुख आवे।

सिंह बशोकरण मंत्र

ओं ह्रीं बन जीवन मालनी सिंह कीलनी कसि २ फट स्वाहा।

ज्येष्ठ मास में जब ज्येष्ठा नक्षत्र आवे तब जंगल किनारे खीर बनाकर दिन भर यह मंत्र पढ़ सिंहको किसी विधि खीर खिलावे तो सिंह बशमें होय।

हाथी बशीकरण तंत्र

भरणी नक्षत्र में आंवले का फल धूनी देकर भुजा में बांधे तो हाथी बस में होय।

सर्वजीव बशीकरण तंत्र

(१) मनः सिला, तगर कूट, हरिताल और केशर अनामिका अंगुली के रूधिर में पीस तिलक करे तो सर्वलोक वश्य होय।

(२) मनुष्यकी खोपड़ी में धतूरे के बीज, मधु, कपूर समभाग मिलाकर पीस तिलक करे तो सब जन वशीभूत होय।

(३) पुष्य नक्षत्रमें एन्द्र यव की जड़, पीपल साठ और काली मिर्च को गो दूग्ध में पीस सुखा कर रखे फिर सन्दल (चन्दन) के साथ घिसकर तिलक करे तो स्त्री पुरुष वश होय।

(४) अपामार्ग (लट जीरा) के बीज बकरी दुग्ध में पीस तिलक करे तो सर्व जन वश होय।

(५) आक धतूर की जड़ कबूतर की बीट चौराहे को धूल और जिसे बश करना हो उसका केश, मंगल या शनिको चिता भस्म मिला जिसके माथे पर फेके वही अवश्य बशीभूत होता है।

(६) तगर; कूट, तालीस पत्र इनका चूर्णकर बत्ती में लगावे फिर अमावश्याकी रातको मनुष्यकी खोपड़ी पर काजल बनाकर रखे। रविवार पुष्य नक्षत्र में अंजन कर जिसके नैन से नैन मिलावे वही वशीभूत होय।

(७) उल्लू का मांस व बकरा का मांस रत्ती भर पानी में धोकर पिलावे तो वह दास दासी ऐसा होकर रहे।

(८) तगर, कूट, कुमकुम, बच और चिता भस्म पीस स्त्री के सिर पुरुष के पैर तले डाले तो आजीवन गुलाम रहे।

(९) रविवार को घूग्घू की जीभ जिसे खिलावे वह बशीभूत होय।

(१०) घुग्घू और कागकी बींट जिसके सिर पर छोड़े वही बशीभूत होय।

राजा बशीकरण मंत्र

ओं नमः घुं घुं बीन बीन धाधा लबजन्ताद्रवति दूह्य जाजाल कह्यन्ता वह मातंगी मामान अमा अमा ओं क्षः क्षः क्षः।

श्वेत रेशम वस्त्र परिधान कर स्फटिक माल द्वारा १०८ बार मंत्र जप रूप कामनी के फूल और श्वेत दूर्वा का हवन करे तो राजा बश में होय।

अन्य—ॐ नमः भास्कराव त्रिलोके अमुकं प्रजा पताये मम वश्यमानय कुरु २ स्वाहा।

प्रथम हजारबार जपकर सिद्ध करे फिर तुलसी कुंकुम, चन्दन कर्पूर और गोरोचन गोदुग्ध में पीस सात मंत्र पढ़ तिलक लगावे तो राजकुल बशीभूत होय अथवा पुष्प नक्षत्र में आपामार्ग का बीज तीन वार मन्त्र पढ़कर खिलावे तो राजा वश होय।

अन्य-ॐ नमः आदेश गुरुका जल बांधूँ शहर बाधूँ आनि बांधूँ बार बार शिव पुत्र प्रचण्ड बाधूँ रूठे राजा क्या करे जिसे न छोड़े मोहीं वैसन देसी आय टीका चन्दन चढ़े लिलार टीका देइ सिंह वर्ण कहाउं और करूं सैइया लेते में बन्ध्या न गौरी पार्वती बन्ध्या ते में बन्ध्या या गुरु की फुरा मंत्र ईश्वरो बाचा।

इक्कीस शनिवार १२१ बार जपकर सिद्ध करे फिर कुंकुम, चन्दन, गोरोचन, गौ दुग्धमें पीस तीन मन्त्र पढ़ तिलक करे तो राजा बस होय।

राजा वशीकरण तन्त्र

राजा सभा वशी करण मन्त्र

(१) अंकोल के पके हुए फल लाकर मैनफल गौ गुग्ध में पीस गोली बनावे और गाय का पीला सींग लाय गौ गुग्ध भर सूखी हुई गोली डालकर सात दिन तक गाड़ कर धूनी देवे फिर गोलो निकाल तिलक करे तो राज सभा वश होवे।

(२) विष्णुकान्ता के बीज के तैल से आधी रात दीपक जलाये, काजल बनाये, अञ्जन करे तो चक्रवती राजा भी वश में हो।

(३) पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में किसी फुलवारी में जाकर नग्न हो स्नान करके अनार की शाखा या फल को एक झटके में तोड़ लावे फिर धूप देकर दाहिनी भुजा में बाँध सभा में जाय तो सन्मान होय, दरबार में जाय तो मुकद्दमा जीते या राजा वश में हो निडर हो करते बने राजा इन्द्र भी वस में होय।

स्त्री वशीकरण मन्त्र

ओं नमो कामाक्षा देवी अमुकी वशमानय कुरु कुरु स्वाहा।

प्रथम दस हजार जप सिद्ध करे फिर ब्रह्म-दण्डी और चिता-भस्म १०८ वार मन्त्र पढ़कर इच्छित सुन्दरी के अङ्ग पर फेंके तो तुरत वशीभूत होय अथवा रविवार को काले धतूर के फूल, शाखा, फल, पत्ता और जड़ में कुंकुम, कर्पूर, गोरोचन मिला पीस तिलक लगाकर अरुन्धती ऐसी पतिप्राणा कामिनी के सन्मुख जाये तो वशीभूत होय।

अन्य---ओं नमः ह्रीं ह्रीं का विकरालिनी ह्रीं क्षीं फट् स्वाहा।

प्रथम श्मशान में जाकर सात दिन तक नित्य १०८ मंत्र जपे तथा विधि पूर्वक काली देवी का पूजन करे फिर काले धतूर के पेड़ से पुष्य नक्षत्र में फूल भरणी में फल; विशाखा में शाखा, हस्त नक्षत्र में पत्ता मूल नक्षत्र कृष्ण पक्ष संक्राति में जड़ ग्रहण कर

कपूर, कुंकुम और गोरोचन में पीसकर तिलक लगा, जिस स्त्रीके सन्मुख जाय वह तिलोत्तमा क्यों न हो निश्चय ही अति शीघ्र बशीभूत होय।

फूल बशीकरण मन्त्र

ओं नमो कामरू देश कामाख्या देवी जहां बसे इस्मायल योगी इस्मायल योगी ने लगाई बारी फूल छोड़ै लोना चमारी जो इस फूल को सूंघै बास तिसके मन रहे हमारे पास महल छोड़े घर छोड़े आंगन छोड़े लोक कुटुम्ब की लाज छोड़े दुहाई लोना चमारी को धनौजी की दुहाई फिरै।

शनिवार लगातार २१ दिन तक नित्य १४४ बार जप तथा धूप दीप और मदिरा धरकर पूजाकरे फिर कोई फूल सात मन्त्र पढ़ देवे बशी भूत होय।

अन्य--फूल फूल फूल कुमारी रानी।
पल में आवो शीघ्र बश मानी॥
यह फूल मन्त्र पढ़ूं अमुकी जान।
जगत ईश्वर नरसिंह बरदान॥

यह फूल पढ़ि देउं अमुको माथा ।
हमें छोड़ न जाने दूसर साथा ॥
आज्ञा कामरू कामाक्षा माई ।
आज्ञा हाड़ी दासी चण्डी दोहाई ॥

प्रथम दशमी को १०८ बार जप सिद्ध करे फिर एक चम्पा फूल तीन मंत्र पढ़ दुष्ट स्त्री को दे या सिर पर डाले तो दुष्टता छोड़ वश्यता स्वीकार करे ।

काल भैरव बशीकरण मन्त्र

ओं नमो काल भैरव निशि राती काला आया आधी राती चलतो कतार बांधे तू बावन वीर पर नारी से राखे गीर मन पकरि वाको लावे सोवति को जगाय लावे बैठो को उठाय लावे फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

जब रविवार को दीवाली या होली पड़े सब रात को नग्न हो बायें हाथ से लाल एरण्ड एक झटका में तोड़ लावे और मन्त्र पढ़ते हुए भस्म बनावे फिर जिस स्त्री के सिर पर २१ बार मन्त्र पढ़कर फेंके तो अवश्य बशीभूत होय ।

वशीकरण पान मन्त्र

पान पान महापान ज्वले फलानी के गुमान तले जीये तो राम टले मोहे तो मसान न टले हमारा यह पन न लगे तो खुदा मुहम्मद् एक दो तीन तलाक।

शनिवार सन्ध्या बोहनी के समय एक पुकार में पान फिर एक पुकार में खैर व सुपारी खरीद् बीड़ा लगा तीन मंत्र पढ़कर वह स्त्री को खिलावे तो वशीभूत होय।

अन्य—ओं नमो कामरू देश कामाख्या देवी जहाँ बसे इस्मायल योगी इस्मायल योगी ने दिया पान का बीड़ा पहला बीड़ा आती जाती दूजा बीड़ा दिखावे छाती तीजा बीड़ा अङ्ग लपटाई अमुकी खाय चल आई दुहाई श्री गुरु गोरखनाथ की।

दिवालीके दिन १४४ मन्त्र पढ़ सिद्ध करे फिर विना छोले तीन पान का बीड़ा सात मंत्र पढ़ खिलावे वह स्त्री अवश्य बशीभूत होय।

अन्य—श्री राम नगर बेली अनखक बीड़ा सुनिये बचन हमारी एक पान रस रङ्ग मंगाय दूजे पान सेज सों लाय तीजे पान मुखमें राखे हमको छोड़ दूजे को देखै तो तेरा कलेजा मुहम्मद पीर चक्खे।

तीन पान २१ मंत्र पढ़कर खिलावे तो स्त्री व्याकुल होकर बश होय॥

बशीकरण सुपारी मन्त्र

ओं नमो देव भगवते त्रिलोचनं त्रिपुरं अमुकी में वश कुरु २ स्वाहा॥

पहिले हजार जप सिद्ध करे फिर चिकनी सुपारी १०८ बार मंत्र पढ़ स्त्री को खिलावे तो तन मन धन से बशीभूत होय।

अन्य-पीर में नाथ प्रीत में माथ जिसे खिलाऊँ वह मेरे साथ फूरो मंत्र इश्वरो बाचा।

सूर्य्यग्रहणमें नाभी पर्य्यन्त जल में सात मंत्र पढ़ समूचो सुपारी निगल जाय जब निकले जल से

धोय दुग्धसे धोकर सात बार मन्त्र पढ़कर धूनी दे जिस किसी स्त्री को खिलावे निश्चय बशीभूत होय।

अन्य--ओं नमः उर्वशी सुपारी काम निगारी शुचि राजा प्रजा सब रहैं पियारी। अमुकी को मंत्र पढ़ हृदय लगाउँ, उठत बैठत निज दासो बनाऊँ। मरें पर उसकी जान जाय मशानः नश न होवे तो हनुमन्त को आन।

सूर्य्यग्रहण में हजार जप करे फिर सुपारी सात बार पढ़ जिसे खिलावे वश हो।

लौंग बशीकरण मंत्र

ओं नमो जल की योगिनी पताल नाग जिस पर भेजूं तिसके लाग सोने न पावै सुख बैठे न पावे सुख घुमि फिरि ताके मेरा सुख, मेरी बाँधी छूटे तो बाबा नरसिंह की जटा टूटे॥

चार लौंग पत्ता में लपेट धूनी दे ओष्ठ से दबा कर किसी तालाब में एक गोता मार के सात बार मन्त्र पढ़े फिर सात बार मन्त्र पढ़कर धूनी दे जिस स्त्री को खिलावे वह बशीभूत होय।

अन्य-ॐ नमो कामरू देश कामाख्या देवी जहां बसै इस्माइल योगी इस्माइल योगी ने दिये चार लौंग। एक लौंग निशि माती दूजी लौंग दिखावे राती तिसरी लौंग रहे भूलाय चौथी लौंग मिलन कराय नहीं आये तो कुआं बावड़ी घाट फिरै रण्डी कुआं बावरी छिटक मरे ओं नमः गुरु की आज्ञा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

ग्रहण के समय चार लौंग चारों दिशाओं में धर बीच में एक चौमुख दीप जलाय विधि अनुसार हजार बार मन्त्र जपे फिर सात बार मन्त्र पढ़ खिलावे तुरत वशीभूत होय।

वशीकरण तेल मन्त्र

ओं नमो आदेश कामरू कामाख्या कर रे तेल झिकमिक कामरू के दीप में अमुकी का मन पड़े वह तेल के मांझ में जरे, मंत्र ज्योति के रूप से छांड़ि चंचल थिर हो मन स्थिरसे मेरी भजन कर कटे

जीवन, और अर्पण करे तन मन आदेश हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई फिरै।

जिस दुष्ट स्त्री के नाम दीप में सरसों तेल की बत्ती जला १०८ मन्त्र पढ़कर दीप का तैल उसके अंग पर दे तो बशीभूत होय।

बशीकरण धूली मन्त्र

ओं नमो आदेश गुरु को धूली धूली विकट चॉदनी पर मारु धूली फिरे दिवानी महल तजे घर दुआर तजे ठाढ़ा भरतार तजे देवी दिवानी एक सठो कलवान तू नरसिंह बीर अमुकी को उठाय लाये फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

शनिश्चर को जो स्त्री मरे उसके पैर की ओर का अङ्गार मसान से लावे और चौराहे की धूल लेकर सात बार मंत्र पढ़ जिसे लगावे वह उसी समय बशीभूत होय।

अन्य-धूल धूल तूं धूल की रानी मनमोहनी सुन मोर बानी। जलसे धूला आन पढ़ू यत्त पारवती

बरदान, धूली पढ़ि दूं अमुकी अङ्ग जो चलतो आती उलंग उसका मन लावे निकार, हमारो वश्यता करे स्वीकार।

रविवार के दिन जिस स्त्री के बांयें पैर के तले की धूली ले तीन मंत्र पढ़ मारे वह वश्यता स्वीकार करे। पहले होलीमें १०८ मंत्र जप ले।

अन्य—ओं नमः धूली धूलीश्वरी मातु प्रमेश्वरी चंचतो जय जयकार इनारन चोप भरे छार छारते में हटे देता घर बार मरे तो मसान लोटे जीवै तो पांप लोट वचन बांधी अमुकी को धाइ लाव मातु धूलेश्वरी फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ठः ठः ठः स्वाहा।

पहले सात शनिवार को प्रति शनिश्चर १४४ मंत्र जपे आखरी शनि को जप के तब रविवार के दिन जो कोई सुन्दर स्त्री मरे तो उसकी तीन चुटकी राख लाय चौराहे की धूल मिलाके उसी दिन जिस किसी स्त्री पर मारे वह वश हो उसी समय चली आती है। पहले भैंसी पर आजमा देखो।

बशी करण सरसों मन्त्र

ओं नमो आदेश कामरू कामाख्या देवी चलरे सरसों कामरू जाई, जहाँ बैठी बुढ़िया छुतारी माई। भूजूं सरसों उसके खप्पर, कर रे सरसों चढ़ वढ़कर। 'असुको' मन करे रे धड़फड़ कर, मेरी भक्ति शक्ति हाड़ि दासी चण्डो की दुहाई।

पहले दशहरे में १०८ मन्त्र पढ़कर सिद्ध करें फिर कुछ सरसों लेकर तीन मन्त्र पढ़कर खैर की अग्निमें डाल दे तो प्रेमिका प्रेम से विकल हो वशीभूत होय।

महा बशीकरण मन्त्र

ओं आं ईं अं रीं लूं काम कामिनी काल कुतूहली हां ह्रां ह्रां क्लीं।

होली या दिवाली के दिन दोपहर में चंचिक पक्षीको मार सन्ध्याको उसकी चोंच में अरवा चावल भर तालाब के किनारे गाड़ आवे फिर सुबह उखाड़ कर तीन मन्त्र पढ़कर जिस स्त्री को खिला दे वह तत्काल बशीभूत होय।

बेश्या बशीकरण मन्त्र

ॐ द्राविणि स्वाहा, ओं हासिले स्वाहा ।

रविबारके दिन अपामार्ग (ओंगा) की जड़ का कील सात अंगुल की बना सात बार मन्त्र पढ़ कर वेश्या के घरमें डाले तो वह वश में होय ।

अन्य—ओं कनक कामिनी सुन्दरी आन बान शूल अलाका पाजल पंचाल २ ओं यं यं यं ययः ।

सफेद कोचनी के फूल तथा विल्वपत्र ले विल्व बृक्ष के तले मृगासन पर बैठकर मन्त्र पढ़ २ हवन करे तो आश्चर्यजनक बशीभूत हो जाय ।

शैतान अमल स्त्री बशीकरण

अफल गुरु गुफ्तार जाग २ अल्लाउद्दीन शैतान सात बार 'अमुकी' के जियरा आन जो न आने तो तेरी अम्मा की तलाक हमशीर की तीन तलाक ।

एक बेसनका चौमुखा दीपक बनाय दाहिने अनामिका अंगुली से खून निकाल रूई की बती में लगावे फिर तेल में जलाकर लोहबान जलावे और

भुने हुए जवला भोग धर दक्षिण मुख बैठकर १०८ मन्त्र जपे तो स्त्री व्याकुल हो आय पैरपर गिरे।

आकर्षण तन्त्र प्रारम्भ

(१) माघमास बुध अष्टमीको स्वाती नक्षत्र में सन्ध्या समय आक वृक्ष को न्योता दे प्रातःको फल तोड़ लावे फिर जिस स्त्री के मस्तक पर डाल दे वश होय।

(२) पुष्प नक्षत्र में धोबी के पांव की धूली ले रविवार को जिस स्त्री के सिरपर डाले वस होय।

(३) कृष्णपक्ष के पुष्पार्क में मसान में दीप जला के एक मुट्ठी चिता भस्म लाय मोरकी बीट, हरताल, सुहागा मिला जिस स्त्री के सिर डाले वह प्रीति निर्वाह करे।

(४) रवि या मङ्गल दिन बाँये हाथ से एक चोट में छुछुन्दर मारे चौराहे पर गाड़े फिर सातवें दिन जब उखाड़े तो एक हड्डी भागने लगे उसे पकड़ ले और एक गड़हे में से हाड़ ले आवे फिर

धूनी देकर जो हाड़ भागा था उसे छुवावे तो बस होय और दूसरी छुवावे तो विघ्न हो जावे।

(५) उल्लू के पीठका हाड़ ले केशर कुंकुम और कस्तूरी के साथ घिसकर तिलक कर जिस स्त्री के सन्मुख जाय वह तुरत वशमें होय।

(६) जब स्त्री प्रथम रजस्वला हो तो वह वस्त्र लाय एरंड तेलमें दीपक जला के काजल पारे फिर जब स्वाती नक्षत्र आवे तो अञ्जन करे जिस स्त्री से नयन मिलावे वह अवश्य बशीभूत होय।

(७) स्त्री के बाएँ पैर की धूली लाकर पुतला बना नील वस्त्र पहिना कर उसी स्त्री के केश-सिरमें लगायके सिन्दूर लगावे तथा उसके अग में वोयंडाल उस कामिनीके द्वारपर लम्बा कर गाड़ देवे। जब वह लांघेगी उसी समय तन मन से वस होय।

(८) मङ्गल या रविवार को एक अञ्जीर की शाखा लावे और उसी दिन कुत्ता कुत्तीको सङ्गमकरते देख उसी शाखा से मारे फिर वह शाखा जलाकर

राख अपने मूत्रमें सानकर सात गोली बनाय जिस स्त्रीको उस गोली से सातबार मारे वह बशीभूत होय।

(९) अमावस्याके दिन मिठाईमें अपना वीर्य मिलाकर उलटा कुम्हारके चाकपर सात बार फिरावे फिर जिसे वह खिलादे तो जीवन भर दासी बन के रहे।

(१०) अर्का और धतूर को जड़, कबूतर की बीट और चौराहे की धूल व चिता भस्म आर जिसे बश करना हो उसके केश सबको चूरकर उस स्त्री के सिरमें डाले तो अवश्य बशीभूत होय।

(११) रविवारके दिन जब बैल मरे तो पोला सींग लाय जिस नारी के बांये पगतर की धूल भरके अपने घरमें गाड़े तो निस्संदेह वशीभूत होय।

पुरुष बशीकरण मन्त्र प्रारम्भ

ॐ नमो महा यक्षिणो मम पतिं वश्यमानय कुरु कुरु स्वाहा।

प्रथम एक हजार आप बार जप सिद्ध करे फिर गुरुवारके दिन योनि रक्त, सिन्दूर; कदली रस में

मिलाकर सात मन्त्र पढ़कर तिलक करे तो पति प्राण समान माने अथवा गोरोचन, योनि-रक्त और कदली रसमे मिला तिलक लगाय सन्मुख जायतो अति शीघ्र वशीभूत हो दासके समान रहे अथवा अनारका फल, फूल, पत्ता शाखा और मूल ले सफेद् सरसोंके साथ पीसकर तीन बार मन्त्र पढ़ रति समय लेप करे तो अवश्य वस हो।

सिन्दूर पति वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरुको सिन्दूर कमिया सिन्दूर नाम तेरी पत्ती। कामाख्या शिखरपर तेरी उत्पत्ती। सिन्दूर पढ़ि अमुकी लगावे विन्दी। हो वश 'अमुक' होके निर्बुद्धी। ॐ महादेव की शक्ति गुरू की भक्ति कामरूप कामाख्या माई की दुहाई आदेश हाड़ीदासीं चण्डी की। अमुक मन लाव निकार न तो पिता महादेव वाम पाद जाय लगे।

वेंग साथका सिन्दूरले जो पति आसक्तस्त्री तीन बार मंत्र पढ़ विन्दी लगावे तो तुरन्त उसका

पति वशीभूत होय अथवा सरसों तेलमें मालती के फूल को सड़ाय फिर रति के समय लगावे तो तत्काल वशीभूत होय।

महा वशीकरण पति मंत्र

ॐ ह्रीं भ्रीं क्रीं थिरिं ठः ठः अमुक वशं करोति॥

पड़वांके दिन परेवा पक्षीको मरवा मंगावे फिर इक्कीस बार मंत्र पढ़कर जरासा मांस पान में पति को खिला दे तो निश्चय तत्काल वशीभूत होय।

पुरुष वशीकरण तन्त्र प्रारम्भ

(१) जो नारी अपने बांये पैर का जूता या पाजेब (कड़ा) के बराबर आटा तौलकर मङ्गल या रविवारको चार रोटियाँ खिलावे तो पुरुष वशमें होय।

(२) जब मासिक-धर्म से शुद्ध होय तो चार लौंग चार दिन तक युक्ति के साथ योनि में रखे फिर उसको पीसकर पुरुष के सिरपर डाले तो उस नारी का पति उसके वश हो दास बना रहे।

(३) सफेद सरसों, सफेद धतूरा, तुलसी और अपामार्ग (लटजीरा) तिलके तेलमें खूब महीन पीस रति समय लेप करे तो पुरुष तन मन धनसे बशीभूत हो अपना कुचाल छोड़ हाथ बांधे रहे।

* इति पंचमोऽध्याय *
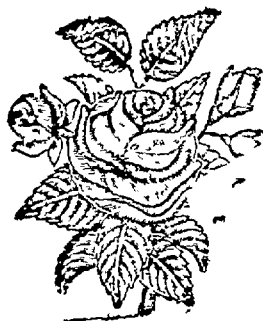
* श्री *

अथ कामाक्षा मन्त्रसार

षष्ठम अध्याय

विद्वेषण मन्त्र प्रारम्भ

ओं नमो महा भैरवाय श्मशान बासिन्ये अमुकामुकयोविद्वेषं कुरु कुरु क्रू फट ॥

विड़ाल (बिलारि) और चूहेकी विष्ठा लेवे और दोनों मित्रोंके पैर तलेकी धूल लेके एक पुतला बनावे तथा हृदयमें दोनोंका नाम लिख नील वस्त्र पहिराय विधिपूर्वक १०८ बार मन्त्र (अमुकामुक के स्थान दोनोंका नाम ले) पढ़ एक के द्वार पर गाड़े तो भाई भाईको क्या कहना है पिता पुत्रमें भी झगड़ा बिवाद होता है।

अन्य—ओं नमः नारायणाय अमुकस्यामुकेन' सह विद्वेषं कुरु कुरु स्वाहा ॥

कोई तालाबादि में स्नान कर दाहिने हाथ में घुग्घू पक्षीका पंख और बांये हाथमें डाढ़, कौआको पंख लेके मिलाये मंत्राभि-मंत्रित करे फिर दोनोंका बांधके सात दिन तक १०८ बार मन्त्र नित्य पढ़ तर्पण करे तो निश्चय विद्वेष हो जाय अथवा बिड़ाल और कबूतरको विष्ठा लाय दोनोंके पगतरको धूल लाकर पुतला बनाकर नील वस्त्र पहिनाय १०८ बार मन्त्र फूंक के श्मशान में गाड़े तो विरोध होय।

महा विद्वेषण मन्त्र

ओं क्रीं क्रीं क्रीं क्रॉ क्रॉ क्रॉ स्फरे स्फरे धां धां ठः ठः ॥

अमावसकी रातमें श्मशान जाकर खड़ी उड़द पकावे फिर धोकर या सुखाकर रक्खे फिर रविवार या मङ्गलको तीनवार मंत्र पढ़ जिस किसीके मकान पर फेंके तो आपस में महा भयङ्कर लड़ाई होय।

मित्र विद्वेषण करण मन्त्र

ओं नमो आदेशगुरु सत्यनामको बारह सरसों

तेरह राई, बाटकी माटी मसानकी छाई पटक, मारु कर दल वार, अमुक फूटे न देखे अमुक द्वार, मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा ॥

सरसों और राई तथा चिता भस्म लावे और आक ढाककी लकड़ीको चूर्ण बनाय १०५ बार मन्त्र पढ़कर हवन करे। फिर जहां दोनों मित्र बैठते हो या रहते हों वहाॅं हवन की हुई राखको डाले तो दोनों में जुदाई होय।

स्त्री पुरुष द्वेषकरण मन्त्र

आक ढाक दोनों बनराई अमुका अमुकी ऐसी करे जस कूकुर बिलाई। आदेश गुरु सत्यनामको।

शनिश्चरसे आरम्भ कर सात दिन तक आकके पत्तों पर मन्त्र लिख आधी रातको नित्य सत्य सात बार मन्त्र पढ़ २ कर ढाक लकड़ीकी आगमें जलावे तो अवश्य आपसमें वैर होय।

स्त्री पुरुष विग्रहकरण मन्त्र

ॐ नमो पंखेश अमुका अमुकी मध्य विग्रह स्वाहा ॥

घुग्घू पक्षीका शिर और कौआ का नख तीन बार मन्त्र पढ़ जलावे तो निश्चय है कि स्त्री पुरुषमें कलह होकर वैर हो जाय।

विद्वेषण तन्त्र प्रारम्भ

(१) साहीका कांटा लाय जिसके द्वार पर गाड़े उसके घरमें नित्य कलह हो।

(२) हाथी और सिंहके दाँत मक्खनमें घिस तिलक करे तो द्वेष होय।

(३) घुग्घू पक्षीका पंख और कौआ का पांख लाय शनिके दिन रात्रिमें जराय धूनी दिखावे फिर जिन दोनों में वैर कराना हो उसके शिर पर डाले तो घनिष्ट मित्रोंमें भी वैर होय।

(४) शनि या रवि दिन गधा का मूत्र जमीन पर न गिरने दे ऊपर से लावे और तीन दिन तक राई भिगोकर सुखावे धूनी दे रक्खे। फिर रविवार के दिन जहाँ दो दित्र बैठे पावे वहाँ फेक दे तो लड़ाई हो वैर होय।

(५) रविवार दोपहर समय कहीं गधा या भैंसा लोटता हुआ पावे तो वहां की धूल लावे फिर धूनी देके जिस शत्रुके शिर पर डाले उसे कलहसे ब्याकुल होना पड़े।

(६) पुरुषका वस्त्र और स्त्रीका केश मङ्गलके दिन जलाके खिलावे तो निश्चय बैर होय।

(७) चूहा और बिड़ाल के शिरका केश और शनि दिनको न्योता दे नीम वृक्ष पर का घोंसला की लकड़ी रविवार के दिन लावे उसी दिन तीनों को भस्म बनाय धूनी देवे फिर दो मित्रोंके बीच भस्म गिरादे तो अवश्य दोनोंमें द्वेष होय।

(८) काले नाग की केचुल और नेवल का केश दो मित्रोंके बीच जला दे या नाक तक धूंआं पहुंचावे तो तुरत भयङ्कर कलह हो बैर होय।

(९) रविबार पंचमीको श्मशानकी धूल लाय धूनी दिखा जिसके घर फेके वहाँ दिन रात कलह होय और बैरी दुख पावे।

(१०) सुअर, बिड़ाल और कुत्ताके दांत मंगा के चिता भस्म व चौराहे की धूल मिलाय शत्रु के घरमें गाड़े तो निशिदिन कलह होय परस्पर में बैर होय।

(११) अश्वरोम और भैंस का रोम ले सभा में धूप दे तो सभा भर में तुरत विद्वेष भाव फैल जाय।

स्तम्भन मन्त्र प्रारम्भ

सर्व स्तम्भन मन्त्र

ॐ वं वं वं हं हं हं ध्रों ठः ठः॥ प्रथम हजार बार जपे।

रविवार या मङ्गलवारको निगोहीका वीज इक्कीस बार मन्त्र पढ़ जिस पर फेंके वही स्तंभित होय।

अग्नि स्तम्भन मन्त्र तन्त्र

ॐ ह्रीं महिषा मर्दनी लह लह लह कठ कठ स्तम्भह २ अग्नि स्वाहा ॥

इस मन्त्र से १०८ बार खैर काष्ठ मन्त्रितकर अग्निमें देकर जाय तो शरीर जलने का भय नहीं रहता।

अन्य—ओं नमः अग्निरुद्राय मे देहि स्तम्भय कुरु कुरु स्वाहा ॥

मेढ़क चर्बी और घीकुवार शरीर पर लेप करे अथवा आक दूध घीकुवांरको १०८ बार मन्त्र पढ़ लेप करे तो अग्नि से शरीर न जले।

अग्नि स्तम्भन मन्त्र

ओं नमो कोरा कराबाजल सो भरिया,ले गौरा के शिर धरिया। ईश्वर ढाले गौरा नहाय, जलती अगिया शीतल हो जाय।

नये करवा में सात बार जल भर सात बार मन्त्र पढ़ पढ़ जलको छींट दे तो जहां तक छींटा जाय आग न लगे।

(१) जब ग्राममें आग लगी तो कुंएसे एक लोटा जल ला खड़े हो अग्निको ओर विनती कर शिर नवाय जब साँस भीतर जाय तो जल पीवे तो अग्नि शीतल होय।

(२) अग्नि में घोड़े का खुर और बेंतकी जड़ डालो तो अग्नि से कपड़ा न जले।

(३) मुलहटी व भांगरे का रस हाथ में लगा कर आग हाथ में उठाले हाथ न जले।

(४) नौसादर कपूर हाथमें लगाके आग उठावे तो न जले।

(५) पीपल लम्बा और गोल सम भाग ले मुख में धर आग लगावे मुख न जले।

जल स्तम्भन तन्त्र मन्त्र

ॐ नमः भगवते रुद्राय जल स्तम्भय २ ठः ठः स्वाहा ॥

पद्म को महीन चूर्ण कर सात वार मन्त्र पढ़ जल में छोड़ने से जल स्तम्भित होय।

अन्य—ओं अरुफोटयति धारा धारा उल्मलूका क्रां क्रां क्रां ।

रवि या मंगलको खटकुली पक्षीका पङ्ख लाय इक्कीस बार मंत्र पढ़कर बगलमें दबाय जलमें खड़ा होय तो जल स्तम्भित होय ।

अन्य—ओं थं थं थं थाहि थाह ॥

कुलीरा पक्षी पाँव मन्त्र पढ़ जल में डूबो दे तो जल स्तम्भित होय ।

(१) लिसोढ़े फलका चूर्ण बना जलमें छोड़ेतो जल स्तम्भितहो और सेंधा निमक डाले तो खुलजाय

मेघ स्तम्भन स्वाहा ॥

॥ ओं मेघान् स्तम्भय मन्त्र ॥

एक नई ईंट पर चिता भस्मसे चौतरफा चार रेखा खींच एक ईंट और उसपर रखके १०८ बार मन्त्र पढ़ बनमें गाड़े तो मेघ बरसना बन्द होय ।

बुद्धि स्तम्भन मन्त्र ।

ओं नमो भगवते मम शत्रु बुद्धि स्तम्भय कुरु कुरु स्वाहा ॥

उल्लूके बिष्ठाको छाया में सुखा रत्ती भर जिसे पानमें १०८ बार मंत्र पढ़कर खिलावे तो बुद्धि नष्ट हो पागल होय ।

(१) बच, सहदेई, जमीकन्द, ओंगा, भांगरा, सफेद् सरसों और सफेद् आक इन सबोंको लोहेके बरतनमें पीस तिलक लगाकर जिस शत्रु के संमुख जाय उसकी बुद्धि तुरत नष्ट भ्रष्ट होय ।

आसन स्तम्भन मंत्र

ओं नमः दिगम्बराम अमुकस्य आसनं स्तम्भ कुरु कुरु स्वाहा ॥

श्मशान में जाय एक हजार आठ बार मन्त्र पढ़ लवण होमे तो आसन बंद् हो अथवा स्वेत गुंजा का बीज मनुष्यकी खोपढ़ीमें बोवे और मन्त्र पढ़ नित्य दुग्धसे सींचे फिर जब शाख लता हों तब तीन बार मन्त्र पढ़ जिसके आसन तले रखे स्तंभित होय ॥

१] जहाँ पर नदी और समुद्र सङ्गम हुआहो वहाँ जाकर अपने हाथों दोनों किनारेकी मिट्टी लावे

और रति करते समय कुत्तेकी दुमके बाल गोली बना अंकाल तेलमें डाल जिसे दिखावे तो बैठा मनुष्य नहीं उठ सकता है। चौकी में भी गोली चिपका सकते हैं।

मनुष्य स्तम्भन तन्त्र

(१) रजस्वला वस्त्र लाय गोरोचन एवं मजीठ से जिस स्त्री या पुरुषका नाम लिख घरमें डाल दे तो वह स्त्री या पुरुष तुरन्त रुक जाय।

(२) शनि के दिन केशरमहावर और गोरोचन की स्याही बनाय भोजपत्र पर शत्रुका नाम लिखे तो स्तम्भिव हो वश में रहे।

सभा मुख स्तम्भन मन्त्र

ओं ह्रीं रक्ष रक्ष चामुण्डे अमुकं मुख स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा॥

प्रथम लाख बार मन्त्र सिद्ध करे फिर पुष्य नक्षत्र रविबार में ज्येष्ठी मधु (मुलहटी) की जड़ तीन वार मन्त्र पढ़कर सभामें फेंके तो सब व्यक्तियोंका मुख स्तम्भित होय।

अन्य—ओं नमो ह्रीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कालय बुद्धि विनाशनं ओं स्वाहा॥

प्रथम एकतालिस दिन सवा लाख मंत्र विधि पूर्वक षोड़सो प्रकारसे जपे फिर एक थालमें घृत भर हल्दीसे षटकोण यन्त्र बनाकर छवो कोणमें ओं लिख सामने धरे फिर दशांश होम कराय ब्राह्मण भोजन करावे तो सिद्ध होय। यह मन्त्र शत्रु की बोलती [जुबान] बन्द करनेका अद्वितीय मन्त्र है। हाकिम आदि कोई गाली देवे तो सात बार मन्त्र पढ़ फूंक दे मुख स्तम्भन हो जाय।

जिह्वा बन्धन मन्त्र

अफल अफल अफल दुश्मन के मुंहे कुलफ मेरे हाथ कुंजी रुपया तोर कर दुश्मनको जर कर॥

शनिवारसे लगानार सात रात धूप दीप जला फूल बतासा इकट्ठा कर हजार बार होम करे फिर १०८ बार मंत्र पढ़कर हाकिमके सामने जाय शत्रुकी

ओर फूंके तो शत्रु बोल न सके और यदि अरजी पर १०८ फूंके तो मनोरथ पूरा होय।

शत्रु मुख स्तम्भन मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं खेलत वीर चौसठ योगिनी प्रतिहार में शत्रु 'अमुक' मुख बन्धन कुरु २ स्वाहा।

मदिरा, मधु, घृतकी एक हजार बार श्मशानमें आहुति दे फिर चार अंगुल लोहेके कांटाको सौ बार मन्त्र पढ़कर श्मशान में गाड़े तो शत्रु मुख अवश्य स्तम्भित होय।

अन्य—ॐ ह्रीं रक्ष चामुण्डे कुरुकुरु, अमुक-मुख स्तम्भय स्वाहा॥

प्रथम एक लक्ष जप शिद्ध करे फिर पलाशकी जड़ ताड़में लपेट तीन बार मन्त्र पढ़ कर शत्रु के सम्मुख जाय तो अति शीघ्र शत्रु स्तम्भित हो जाय अथवा श्वेत गुंजा (कूँच—कर्जुनी) वृक्षकी मूल सात बार मन्त्र पढ़कर मुखमें धर लेवे तो उसके दर्शन से दर्शकों के मुख बन्द हो जायँ।

क्षुधा स्तम्भन मंत्र

ओं नमोसिद्धि रूपंमे देहि कुरु २ स्वाहा ॥

ग्रहणमें हजार बार जपे फिर अपामार्गके बीजकी खीर बनाय मन्त्र पढ़कर खाय तो उसकी भूख रुक जाय ॥

अन्य—ओं गाजुहद्रब्यॉ उन्मुख मुख मांसर धिल ताली आहुम ॥ २ ॥

हस्त नक्षत्रमें रविवारको चर्चिका बीज इक्कीस बार मंत्र पढ़कर खाय तो क्षधा स्तम्भित होय ।

(१) तुलसी, धात्री, पद्म और अपामार्गके बीजको पीस गोली बनाकर खाय दुग्ध पीवे तो फिर भूख प्यास न लगे ॥

(२) इतवारको गायके दूधमें लटजीरा चावल का खीर बना उसमें अपामार्ग डालके धूनी दिखावे फिर चना व गुड़ मिला हॉड़ीका मुंह अच्छी तौरसे बन्द कर सङ्कल्प कर बहते पानीके नीचे गाड़ देवे तो भूख प्यास न लगे फिर अवधिके बाद उखाड़ कर खीर खाय तो भूख लगेगी ॥

निद्रा स्तम्भन तन्त्र

(१) हरियल पक्षीकी चोट, दो मिर्च घोड़ेकी लीद्में पीसकर अंजन करे तो नींद् न आवे ॥

(२) महुआ और कटेरीकी जड़ पीस कर सूँघनेसे निद्रा नहीं आती ॥

(३) नमक, मिर्च, सोंठ बारीक पीस सात दिन आंजने से नींद् नहीं सताती ।

वीर्य्य स्तम्भन तन्त्र

(१) सोमवार लाल अपामार्गकी जड़ न्योत कर लायके कम में वांधे तो वीर्य्य स्तम्भित होय ।

(२) पुष्य नक्षत्र में तालमखीराकी जड़ नग्न हो ग्रहण करे और पीपल, सोंठ, काली मिर्च इनको गायके दुग्धमें पीसकर गोली बनाय छायामें सुखावे फिर १ गोली मुखमें रक्खे तो अवस्य वीर्य स्तम्भन होय ।

(३) घुग्घूकी जीभ एक रत्ती गोरोचनके साथ पीस तांबेकी तावीजमें भरके रक्खे फिर मुखमें रख कर काम करे तो निश्चय वीर्य्या स्तम्भित होय ।

(४) शनिवार को आक वृक्ष को न्योत रविवार को फल तोड़ लावे और रूई निकाल बत्ती बनाकर एरंडके तैल में दीप जलावे तो जब तक दीप जले स्तम्भन रहे ।

धार स्स्तम्भन मन्त्र

धार-धार खण्ड धार बांधू सात बार फिर बांधू त्रिबार चलै धार पर ना लागे घाव सोर राखै श्री हनुमान श्री गोरखनाथ लोहे का कड़ा सूंक का बाण लागे न पैनो धार कुण्ठि होय तलवार ।

चौराहे की धूल सात बार मन्त्र पढ़कर धार पर मारै तो धार स्तम्भित होय ।

कमान बन्धन मन्त्र

ओं नमः आदेश श्रीगुरु को जल बांधू जलवाई बांधू स्वाती ताई सवालाख अहेरी बांधू गोली चलै तो हनुमान यती की दुहाई ।

तीन बार मन्त्र पढ़कर श्वेत गौ के दुग्ध में मारे गोली बन्द होय ।

शस्त्र स्तम्भन तन्त्र

(१) कृत्तिका नक्षत्र में कद्वेल (कैथा) का बांदा लाय मुखमें रक्खे तो घाव न लगे।

(२) चमेली की जड़ मुखमें रक्खे तो घाव न लगे।

(३) सुदर्शन की जड़ बाहु में बाँधने से अथवा आंगा जड़ शरीर पर लेपन करे तो संग्राम में शस्त्र की चोट न लगे।

(४) पुष्य नक्षत्र में श्वेत सरसों की जड़ उत्तर मुख हो ग्रहण करे, उसे सिरपर धरकर युद्धमें जाय जब तक मुख से न बोले तब तक घाव न लगे।

(५) पुष्य नक्षत्र में विष्णुक्रांता की जड़ सिरमें बांधकर युद्ध में जाय तो शत्रों का संहार होय तथा सिंहादि, चोर शत्रु आदि भय से स्तम्भित होय।

शस्त्र स्तम्भन मन्त्र

ॐ अहो कुम्भकर्ण महा राक्षस निकषा गर्भ, सम्भूत पर वस्त्र सैन्य स्तम्भय महामय रण रुद्र आज्ञापय स्वाहा।

प्रथम दसहजार जप सिद्ध करे फिर श्वेत गुंजा की जड़ मन्त्र से न्योता कर दाहिनी भुजा में बांध कर युद्ध में जाय तो शस्त्र रुक जायं।

शस्त्र लेप मन्त्र

ओं नमो भगवते कराल विकराल रूपाय महाबल पराक्रमाया सुकस्य भुज बलं स्तम्भय २ दृष्टि स्तम्भय महीतले हु फट् स्वाहा।

प्रथम हजार वार जप सिद्ध करे फिर विष्णुक्रांत के बीज तेल, भिलावे का तेल, अहिफेन, गदहे का मूत्र और धतूरे के बाज का चूर्ण तीन वार मन्त्र पढ़कर शस्त्रमें लेपन कर युद्धमें जाय तो शत्रु को शस्त्रास्त्र की वर्षा प्रतीत होय।

नौका स्तम्भन तन्त्र

दूध निकालने वाले वृक्ष को पांच अंगुल प्रमाण की एक कील भरनी नक्षत्रमें बनाय नौका के छेद में डाले तो नाव नहीं चले।

पशु स्तम्भन मन्त्र

(१) ऊँट की हड्डी की चार कीलें बनाय चारों कोण में गाड़े तो पशु न निकल सकें।

(२) ऊँट के रोम जिस पशु पर डाले वह वहीं खड़ा रहे।

(३) घृत और तैल गदहे के चूतल में लगा देवें तो वह चिल्लाने न सके।

(४) मुर्गा के गले में दो दिरम रांग बाँधे तो बांग नहीं दे सके।

(५) मुर्गा के सिर में तेल लगावे तो बांग नहीं दे सके।

मूत्र स्तम्भन तन्त्र

शनि या मंगल को छछून्दर को मारकर मूत्र स्थानसे मिट्टी लेके पेट चीरकर भरके सिलाई कर दे तो जिसका मूत्र रहे उसका मूत्र बन्द हो या फिर खोले तो सुखी होय।

ग्राहक स्तम्भन मन्त्र

चित्रा नक्षत्र में भिलावे की लकड़ी आठ अंगुल प्रमाण जिसकी दुकान के सामने गाड़ दे तो उसकी दुकान में एक भी ग्राहक न जाय।

गर्भ स्तम्भन मन्त्र

ओं ह्रीं गर्भ धारिणे गर्भ स्तम्भय कुरु २ स्वाहा।

प्रथम हजार बार जपे फिर कृष्ण चतुर्दशी को न्योत धतूरे की जड़ लाय रति समय कमर में बाँधे तो गर्भ ठहरै।

अन्य-ॐ नमो आदेश गुरु को ओं नमः आदेश अङ्ग में बांधि राख, नरसिंह यती मोस ते बांधि राख, श्रीगोरखनाथ कांखते बांधि राख, हपूलीका राजा सुण्डी से बांधि राख, दृढ़ासन देवी यह मन पवन काया को राव, थंभे गर्भ औ बांधे घाव, थांभै माता पार्वती, यह गंडौ बांधू ईश्वर यती, जब लग डांडो कट पर रहे तब लग गर्भ काया में रहे, फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।

कुमारी कन्याका काता हुआ सूत गर्भवती स्त्री के एड़ी से चोटी तक नाप सात सूतेका सात मंत्र पढ़कर सातबालकोंसे गांठ लगवाकर डोरा (गंडा) बनाय स्त्री के कमर में बांधे तो गर्भ स्तम्भन होय। जब खोले तो गर्भ से बालक निकले।

अन्य—ॐ नमो आदेश गुरु को जंभीर बीर प्रधान हरे अठोत्तर है गर्भ ही तीनों तने पाके न फूटे गिरे न पीड़ा करे। करे तो जंभीर बीर की दुहाई फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

रविवार को ६ कुमारी कन्या से सूत कताय ६ तार का ६ गांठ लगाय गर्भवती के एड़ी से चोटी तक नाप कर धूनी दिखाय १०८ बार मंत्र जपके कमर में बांधे तो गिरते हुए गर्भ का स्तम्भन हो।

अन्य-ॐ नमो गङ्गा डकारे गोरख बलाय धीपार गोरख यती पूजा जाय, जयद्रथ पुत्र ईश्वर की माया

कुमारी कन्या के काते सूत को २१ मन्त्र पढ़-कर गण्डा बनाय देवे तो गिरता हुआ गर्भ बहता हुआ रुधिर बन्द हो जाय।

अन्य—हिमवत्तरे कुल की दशी नाम राक्षसी
एतेषां स्मरेन मात्रैन गर्भो भवेति अक्षयः।

सा बार पढ़कर गण्डा बांधे तो गर्भ-रक्षा हो

विशेष गर्भ विषयक बातें पुष्टि कर्म अष्टम अध्याय में देखें।

* इति षष्ठमो ऽध्यायः *

॥ श्री ॥

अथ कामाक्षा मन्त्र सार

सप्तम अध्याय

पुष्टि कर्म मन्त्र प्रारम्भ

ओं परब्रह्म परमात्मने नमः। उत्पत्ति स्थिति प्रलय कराय ब्रह्म हरिहराय त्रिगुणात्मने सर्व कौतुक निदर्शय दर्शय दत्तात्रायाय नमः मन्त्र तन्त्र सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

होली या दिवाली या किसी महापर्वमें एक लाख मन्त्र विधिपूर्वक २१ दिनमें जपे फिर किसी भी कार्य्यमें १०८ बार मन्त्र जपके करे तो तुरत सिद्ध होय।

इन्द्रजाल मन्त्र

ओं नमः नारायण विश्वम्भरणाय इन्द्रजाल कौतुकाथ दर्शय २ सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा॥

इसे ऊपर लिखे विधिनुसार सिद्ध कर इन्द्रजाल विद्या को करे।

देहरक्षा का मन्त्र

ॐ नमो परमात्मने परब्रह्म मम शरीरे पाहि २ कुरु कुरु स्वाहा॥

इस मन्त्रको हजार बार जप कर सिद्ध करे सब कार्य्यों में अपने शरीर की रक्षा करे।

दिग् बन्धन मन्त्र

याहि सार सार सार जिन्न देवपरी नवस्कंफार फार एक खाये दूसरे को फार चहुं ओर अगिया पसार मलायक असचार दुहाई दस्तरखे जिब्राइल वाइ पे खेमि काइल दांई दस्त रस्त हुसेन पीठ खले खेई आभिल कलेजे राखे इस्राइल दुहाई मुहम्मद अलोलाह इलाह का कोट कंगूर ईलिल्लाह की खाई हजरत पगम्बर अली की चौकी तख्त मुहम्मद रसूलिल्लाह की दुहाई।

श्मशानादि में या कहींपर मन्त्र जपने के समय अथवा कहीं आने जाने में भय लगे तो सात बार मंत्र

पढ़कर चारो ओर ताली बजाय लकीर खींच दे तो वहां भय न लगे ।

प्रथम देह रक्षा मन्त्र

ॐ नमो कामरू कामाख्या देवी कहाँ जाने को हुआ मेरा मन आत्म रक्षा बन्दि होऊं सावधान सिर हाथ बंधन औ बन्धन गर्दन पेट पीठ बंधन औ बंधन चरण अष्टांग बांधू मनसा के बरदानका करि सके उमा के बान । कामाख्या वर होऊं अमर । आदेश हाड़ि दासी चण्डी की दुहाई ।

यह मन्त्र पढ़कर तीन बार जहाँ कहीं गमन करे तो सर्प व बाण का भय नहीं रहता ।

द्वितीय-छाड़ो पंथ जीव जन्तु आदिसे अन्त बीछी साँप भालू बाघा सटे दन्त आदेश पिता धर्म को दोहाई आज्ञा हाड़ि मासी चण्डी की दुहाई । तीन बार मंत्र पढ़कर गमन करे तो भय नहीं होय ।

तृतीय—मुई खप्पर हिले आसमान लटकाय, मंत्र बलसे तीन लोक पृथ्वी जुरि जाय । परमपिता

पुरुषोत्तम मैं बोलूं इस बार, तुम रक्षा करो रक्षा करो हमार। आदेश कामरू कामाख्या हाड़ि दासी चण्डी की दोहाई।

तीन बार मन्त्र पढ़ने से भूतादिक का भय नहीं रहता।

चतुर्थ—घर से निकर धरती पै राखूँ पांव, पत्थर भये देह नहीं दुश्मन गांव। जय दुर्गा रक्षा करे अमुक अङ्ग मनसा माय दूत किये हैं सङ्ग। आदेश मनसा माई की दुहाई॥

पञ्चम—काली काली बोल मन काली माय लेत नाम कालो शत्रु मोर काला होय बाघ सांप भूत प्रेत अरु दक्ष दानवाय को बाधा न डारै पंथ में नहिं दिखाय आज्ञा कामरू कामाख्या हाडि दासो चण्डी की दुहाई।

इन दोनों मंत्र को तीन ही बार पढ़कर गमन करे तो भय न होगा।

षष्ठम—ॐ नमो कामरू कामाख्या देवी घर से निकस पंथ में राखा पांव तुम हमारी बस माता तू

हमारी माय । कौन सड़हड़ाय कौन मड़मड़ाय कौन तोड़े खड्ग, मोरे तो अस्त्र नहीं कछु सङ्ग । कौन जाय काट अमुक जाय बाट के डाइन योगिनी कॉटा खोंचा बाट दक्ष दानव बयारि में यदि पड़ै पांय रक्षा करै जय दुर्गा मनसा माय ॥

सप्तम—काली घाट में काली बन्दूं चित्त करि स्थिर, सिर पीड़ा बंदूँ औ सात समुद्र पीर दस घरवा बंदूं औ देव पंचानन कामाख्या देवी बंदूं कामरूपी गगने गङ्गा भागीरथी बन्दौं औ सब घाट रक्षा करौ मोहि पंथ सब बाट आठो याम बंधन लाग मोरे गात आज दोपहर कल रात सात दिन सात रात ।

घर से अढ़ाई डेग निकल कर सात मंत्र पढ़ गमन करे तो भय न होय ।

अत्म रक्षा मंत्र

ॐ नमः बज्र का कोठा जिसमें पिण्ड हमारा पैठा ईश्वर कुंजी ब्रह्माका ताला मेरे आठो याम का यती हनुमंत रखवाला ।

इसे तीन बार पढ़ने से हर समय शरीर की रक्षा हो सकती है ॥

व्याघ्र सर्पादिक भय निवारण मन्त्र

फकीर चले पर देश कुत्तक मनमें भावे बाघ बांधू बघाइन बाँधू बाघके सातों बच्चा बांधू सांपा चोरा बांधू दांत बंधाऊँ बाट बांधि दऊं दुहाई लोना चमारी की

मंगलको १०८ बार मन्त्र जप सिद्ध करे फिर पथ में जो मिले सात बार मन्त्र पढ़ फूंके ।

आपत्ति निवारण मंत्र

हुक्म शेख फरीद कमरिया निशि अन्धियरिया आग पानी पथरिया तीनों से तोही बचाइया ।

सुनसान मैदान में जब ओला गिरे आंधी पानी बरसे तो यह मंत्र तीन बार पढ़कर ताली बजावे ।

ग्रह बन्धन मंत्र

हाट चलते बाट बांधू बाट चलते घाट बांधू स्वर्ग में राजा इन्द्र बांधू पताल में बासुकी बांधू शिकली बाण बचन तोड़ के मछरी मारूं टेगरा गाछ

मारी गाछ फूटै डाल मारूं फूल उठे तार खाईबन किये उजार आये आगे बांधू पाछू आये पाछू बांधू बाँये दांये बांधू यह बन्धनको बांधत ईश्वर महादेव बांध देवे हिम घरमें सहदेव हम सोय रहेऊँ अकेला, लोहेके दोकला मांसकर पत्थर होवेगा काटे कूटू बड़े पिता धर्म की दुहाई ॥

एक मुष्टि धूल ले सात बार मंत्र पढ़कर घरके चारो ओर छींट देवे।

चोर भय निवारण मन्त्र

ॐ करालिनी स्वाहा ॐ कपालिनी स्वाहा। हौं ह्रीं ह्रीं ह्रीं चोर बंध ठः ठः ठः।

प्रथम १०८ बार मन्त्र जपले फिर सात बार मन्त्र पढ़कर थोड़ी मिट्टी दरवाजे पर गाड़े तो चोर भय नहीं होता।

(१) शुक्लपक्षके पुष्य नक्षत्र में श्वेत गुंजा की जड़ अपने सिरहाने बांधे तो चोरों का भय न होय।

चोर धन सहित आनेका मन्त्र

ओं भ्रू भ्रांजन हुंकार स्फटिति दह दह ओं॥

रवि या मङ्गलकी कर्पटिका वृक्ष के नीचे मृगा चर्म पर बैठ गांधूलीकी लकड़ी जलाय सरसों और गूगुल मन्त्र पढ़कर हवन करे तो चोर धन लिये हुए आ जाय।

चोर पहिचानने का मन्त्र

ओं नमो इद्रोग्नि वन्ध वन्धय स्वाहा।

जिन आदमियों पर शकहो उन सबोंका नाम रवि और शनि को भोजपत्र पर लिख १०८ बार मंत्र पढ़कर अग्निमें एक २ आहुति डाले चोर का नाम नहीं जलेगा अथवा मंत्र सहित नाम लिख सफेद मुर्गी के गले में बांध एक टोकरासे ढांप देवे और सब लोगों का हाथ धरवावे जब चोर हाथ धरेगा तो मुर्गा बोल उठेगा।

चोर मुख रक्त निकालनेका मन्त्र

ओं नमों ह्रां चक्रेश्वरी चक्र धारिणी चक्रवेगि कोटि ग्रामाग्रामा चोर ग्राहिणी स्वाहा

यह मन्त्र २१ बार चावल पढ़कर जिस आद-मियों पर शक हो सभी को थोड़ा थोड़ा खिलावे तो चोर के मुख से खून निकले।

चोर नाम निकालने का मंत्र

ओं नमः किष्किन्धा गिरि पर कद्ली बन में फल फूल दंढ तल कुँजदेबी नूनप्रसाद् देवी अलग पावली पारस माघ बूटी चोर तेरे कुंजको देवो तेरी आज्ञा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा॥

जिसपर सन्देह हो उन सबका नाम लिख आटे की गोली में बन्द् कर इक्कीस बार मंत्र पढ़ पढ़के जल में छोड़े जो गोली उतराय उसे पकड़े।

कटोरी चलावन मंत्र

ओं नमो विश्वनाथ बन्दूं हाथ में लेई माटी, तुलसी बन्दि के कटोरी पे साटी, यह मूस की माटी निज बल जाय तिसके बलते कटोरी आप चलाय चल कटारी जहां चोर के तन धन विश्वनाथ बन्दी

के करे गमन आदेश बड़े ईश्वर पिता धर्म को दुहाई आदेश सीता श्री रामचन्द्र सोई ॥

सन्ध्या समय एक कटोरीमें मूसेको मिट्टी भर तुलसी चौराके पास धर २०८ बार मंत्र पढ़कर रात भर वहीं रहे फिर प्रातःकाल १ बारह बर्षके लड़के के दोनों हाथमें कटोरी पर धरके ऊपरसे चूहे बिलके मिट्टीको मंत्र पढ़कर मारे तो चोर धन के निकट कटोरी जाय।

अन्य—ओं नमो नरसिंह बीर ज्यूं ज्यूं तेरी चलै पवन चलै पानी चलै चोर चित्त चले थहराय चोर मुपन्नो ही चाले कथ माया परू करे बीर यानाथकी पूजा मंत्र टले तो गुरू गोरखनाथ की आज्ञा न चले तो चौरासी सिद्धमो आदेश मिटै।

उपर लिखे विधिनुसार इस मंत्रसे चावल पढ़ कर १०८ बार मारे।

चोरके स्वप्नका मंत्र

हुक्म मूद्दजल जलाल पकरी चोटी धर पछारके यकुद्दाक आव मुद्दा या हक यारो या हक यारो।

किसी कुआँके किनारे रात में १२१ बार मंत्र जपके सो रहे नित्य ऐसा सोलह दिन तक करेतो स्वप्नमें चोरी का सारा भेद व पता मालूम होय।

चोर बन्धन मंत्र

ओं काजू बिया बान लाजु हाले आसमान उसी का क्रुं क्रुं आं॥

दिवालीको स्वाती नक्षत्र में शामको चिंचना वृक्षके नीचे बैठ बिधिसहित पूजन करे फिर सवा हाथकी लकड़ी काट अपने पासमें रक्खे। फिर जब कभी चोर पकड़ना हो तो सात बार मंत्र पढ़कर लकड़ी को चलावे तो लकड़ी उड़कर चोरके पांवसें चिपक जाय।

युद्ध विजय करण मंत्र

ओं नमः बिश्वम्भराय अमुकेन विजयं कुरु कुरु स्वाहा॥

प्रथम हजार बार जपकर सिद्ध करे फिरओंगा धतूराकी जड़ और कुंकूम हरिताल पीसकर १०८ बार मंत्र पढ़कर तिलक करे तो युद्धमें विजयी हो।

कुश्ती जीतने का मन्त्र

ओं मल्लां मल्ल मल्लें बादर बसन्ता आहुम आहुम ॥

रवि या मङ्गल को कनिका की लकड़ी मंत्र से न्योत लावे और १०८ बार मन्त्र पढ़कर दाहिनी बांहु में बांध कुश्ती लड़े तो अवश्य जीते।

अन्य—ओं नमो आदेश कारू कामाक्षा देवी अङ्ग पहुरूं भुजंगा पहुंरू लोहे शरीर आवत हाथ तोडूं पांव तोडूं सहाय हनुमन्त बीर उठ अब नरसिंह बीर तेरा सोलह सौ शृङ्गार मेरी पीठ लगे नाहीं तो बीर हनूमन्त लजाने तू लेहु पूजा पान सुपारी नारियल सिन्दूर अपनी देहु सबल मोही पर देहु भक्ति गुरु को शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।

मंगलवार से आरम्भ कर लगातार ४० दिवस तक नित्य १०८ बार मंत्र जपे पहले गेरुका चौका लगाय लाल लंगोटा पहन लड्डू भोग धरे फिर

हनुमानजी को स्मरण कर सात बार मन्त्र पढ़कर लड्डू खाय तो जरूर जीते।

मामला मुकदमा जीतने का मन्त्र

ॐ क्रां क्रां क्रां धूम्र मारी बदाक्षं बिजयति जयति ओं स्वाहा।

त्रयोदशीमें जब पुनर्वसु नक्षत्र पड़े तब सुरही गौके चर्मपर नदी किनारे मूंगे के माल से हजार बार जपे फिर सात बार मंत्र पढ़कर जाय तो जीते

जुआ जीतनेका मन्त्र

ओं नमः ठुं ठुं ठुं ठुं क्लीं क्लीं बानरी विजयति स्वाहा।

दीपमालिका को आधी रात को पीपल पेड़ के नीचे बैठकर १०८ मन्त्र पढ़कर कदम्बरी पुष्प का हवन करे फिर एक फूल सात मन्त्र पढ़कर दांये हाथ में बाँधकर खेले तो निस्सन्देह जीते।

अन्य तन्त्र----रविवार के दिन जब हस्तनक्षत्र हो तब एक दिन पहले ही पँवार वृक्ष को न्योत

रविवारको लाय दाहिने भुजा में बांधकर जुआ खेले तो अवश्य ही जीते।

अत्याहार करण मन्त्र

ओं नमः सर्व्वभूताधिपतये ग्रस ग्रस शोषं शोषं भैरवी आज्ञा पयति स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर बरगद के पेड़ को न्योत कर दूसरे दिन फूल लाय माला बनाकर भोजन करे तो भीम के सदृश भोजन सामर्थ होय।

अन्य विधि----शनिश्चरको बहेड़े वृक्ष को न्योत कर रवि प्रातःकाल मंत्र पढ़कर पत्ता लाय दाहिनी भुजा या जाँघ में बांधे तो बीस गुणा वेसी आहार करे।

बहुत भोजन करने का मन्त्र

ॐ नमः नाभिवेगेन उर्व्वशी स्वाहा।

कृक लाश (किरकिटा) पक्षी की चोंच लाय इक्कीस बार मन्त्र पढ़कर शिखामें बाँध भोजन करे तो अत्यधिक भोजन कर सके।

बेपरिमाण भोजन करने का मन्त्र

ॐ परतिगत आसा स्याली आगास्तयां द्रांभी द्रां द्रां भीः ॥

परिवाके दिन हिंगुआरके फल सात बार मन्त्र पढ़कर कमर में बांध कर भोजन करे तो भोजन करता ही जाय पर कुछ मालूम न होय।

निधि दर्शन मन्त्र प्रारम्भ

ॐ नमः श्रीं ह्रीं क्लीं सर्व्व निधि प्रखत नमो बिच्चे स्वाहा ॥

काले कौआ की जीभ काली गौ के दुग्ध में औंटकर दही बनाय घृत निकाल १०८ बार मन्त्र पढ़कर काजल बनाय नयनों में अंजन करे तो गड़ा धन दिखाई देवे।

अन्य---ॐ नमो चिडा चिडाला चक्रवतीन्मे सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

काले कौआको तीन दिन तक घृत व मक्खन खिलावे फिर उसकी बीट रूई में लपेट जलाकर काजल बनाय अंजन करे तो गड़ा धन नजर हो।

अदृश्य धन जाननेका मन्त्र

ॐ कनक स्फुटित बिश्वक सेना चीङ्ग आंजनी परमां दृष्टिं कुरु कुरु स्वाहा ।

पूर्णिमा अग्रहण मास के मारे हुए हिरण के चर्म अथवा कस्तूरी लिये हुये जो हिरण मारा गया हो उसके चर्म पर दो में से किसी एक पर आसन बनाकर बैठकर मूंगा की माला से १०८ बार मन्त्र जपे तथा आहुति करे और एक अष्टधातुकी कटोरी पर मन्त्र लिखकर सन्मुख रखे तो जहाँ धन गड़ा हो कटोरी वही जाकर ठहर जाय ।

स्थान खोदने का मन्त्र

ॐ नमः भवति सुमेरु रुपाय महाकालयकङ्काल रूपाय फट स्वाहा ।

गेहूं तिलका चूर्ण बना करके घृत में सानकर उस स्थान में हवन करे तो सर्पादिकका भय न रहे फिर अच्छा दिन देखकर खोदे ।

गड़ा धन देखनेका मन्त्र

[१] काले कौआका कलेजा और जीभ पीस कर जो आदमी पैरे [उलटा] पैदा हुआ हो उसें अञ्जन कर अरंडके पत्ता बांध दे फिर उसके साथ साथ चार मनुष्य साथ जाय तो वह जहाँ जहाँ पर धन सम्पत्ति गड़ा हो बतलावेगा। जहाँ पर गड़ा धन मालूम हो वहाँ पहले एक हण्डी में गेहूं भरके गाड़े सात दिनके बाद उखाड़े गेहूं भरा देखे तो निश्चय धन जानिये और खोदने के समय जब कमलकी बास आवे तो धन जानना चाहिये और परीक्षा यह है कि जहां कौआ मैथुन करते या सिंह बैठते हुए दिखाई दे अथवा जैठ आषाढ़ में जहाँ घास व वृक्ष ही दिखाई दे और दूसरे ऋतु में सूखा हो तो जरूर धन पृथ्वी के पेट में समझना चाहिये।

अन्नपूर्णा मन्त्र

ओं नमः अन्नपूर्णा अन्न पूरे घृत पूरे गणेश जो पाती पुरे ब्रह्मा बिष्णु महेश तीनों देवतन मेरी

भक्ति गुरु की शक्ति श्री गुरु गोरख नाथ की दुहाई फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

प्रथम एक लाख जपकर सामनेमें से अछूता निकाल श्री अन्नपूर्णा माता को भोग लगाकर ब्राह्मण भोजन करावे फिर एक भाग कूपमें डालकर एक हाथसे एक लोटा जल भर लावे फिर दीप जलाय भण्डार घरमें अन्नपूर्णा और वरुणका पूजन करे १०८ मन्त्र जपके ब्राह्मणका भोजन कराके खिलावे मालमें घटी न होय।

ऋद्धि सिद्धि का मन्त्र

ॐ नमो आदेश श्री गुरुको गजानन वीर बसे मसान अवदो ऋद्धि का वरदान जो जो मांगू सो सो आन पांच लड्डू सिर सिन्दूर हाट बाटका माटी मसान की सब ऋद्धि सिद्धि हमारे पास पठेव शब्द सांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

भोज भंडारा सबको खिलानेके पहले ही पांच लड्डू निकाल सिन्दूर लगाय श्रीगणपति जी का

पूजन कर एक कलश में एक लड्डू धर कुंए पर जाकर जल भरे और मन्त्र पढ़कर चारों लड्डू कूप में छोड़ दे फिर भण्डार घरमें कलश स्थापन कर हजार मन्त्र जपकर ब्राह्मणों को खिलाय सबको खिलावे तो भण्डार में माल न घटे।

अन्य—ॐ नमः कामरू देश कामख्या देवी ॐ शङ्क वादनी में वराती धरणी ऊधर इन चण्डी सवा प्रहर होय कर प्रक्षालि मुख प्रक्षालि तुमरो जो ध्यातो सोई फल पाई पग भुज बन्ट २ मोरे सम बांधो चार लड्डू के सिर सोहै सिन्दूर ऋद्धि सिद्धि दो पिया नन्दके पूत सोयेको उठाऊं बैठेको देहु पठाय उठाय सा लै आवै यदि न जाय लावै तो लाजै गजानन गौरी माय, ईश्वर पार्वती सब जाने घर बैठी ऋद्धि सिद्धि आने महेश्वरी मारी चटाका घाव ऋद्धि सिद्धि दो गणनायक राऊ।

उपरोक्त विधि अनुसार करें परन्तु इसमें दो लड्डू बाहर रखे वे लड्डू कूपमें डाले और एक मनुष्य

के खाने के योग्य निकाल अलग रख बरोबर बैठकर मन्त्र जपता ही रहे तो कितां हूं आदमीको क्यों न खिलावे सामग्री न घटे।

ऋद्धि करण लक्ष्मी मन्त्र

ॐ नमो पद्मावती पद्मनयने लक्ष्मी दायिनी वांछा भूत प्रेत विध्वंसिनी सर्व शत्रु संहारिणी दुर्जन मोहिनी ऋद्धि सिद्धि वृद्धि कुरु २ स्वाहा॥ ॐ नमः क्लीं श्रीं पद्मावत्यै नमः।

गूग्गुल गोरोचन छारछबीला कपूर कचरी मटर प्रमाण गोली बनाय शनि या रविके दिनसे आरंभ कर नित्य १०८ बार मन्त्र आधी रातिमें जपे और १०५ मन्त्र पढ़मर हवन करे तथा सब वस्तु लाल धरै व लाल वस्त्र पहिन कर २२ दिन तक करे तो लक्ष्मी जी की कृपासे ऋद्धि मिले।

अनायास धन प्राप्ति का मन्त्र

औं ह्रीं श्रीं श्री ध्वः ध्वः।

मृग शिरा नक्षत्र में मारे हुए काले मृगके चर्म

कोई नदी सरोवरके किनारे कनकांगुदी पेड़के नीचे बैठ विधि पूर्वक एक लक्ष प्रमाण २१ दिनमें जपे तो अनायास धन मिले।

ऋद्धि करण तन्त्र

भादो मास कृष्णपक्ष में जब भरणी नक्षत्र आवे तब चार कलशे में जल भरकर एकान्त में धरवावे फिर दूसरे दिन प्रातः समय जो खाली हो उसे ले आवे और तीनोंका जल वहीं गिराकर कलशे को छोड़कर खाली हुए कलशेको लाय अन्न भर नित्य पूजन करे तो अन्न हर समय भरा ही रहे।

अटूट भण्डार तन्त्र

जिस स्थानमें बहुत दिनोंसे होलिका जलती हो तहां जिस दिन होली जलनेको हो उसी दिन गेहूं, ज्वार, गौ घृत, तिलका तैल और एक पैसा कोरी हांड़ी में भर मुंह बन्द कर गाड़े, फिर होली के प्रातःकाल उखाड़ लावे। फिर जो कोई वस्तुके सङ्ग में बांध रक्खे तो कितनाहूं खर्च करे पर वस्तु न घटै। यह गुप्त रीति से करे।

अन्य---पुष्य नक्षत्रमें कहीं नीलकण्ठ या ठाढ़ कौआके घोंसलेमें अण्डा या छोटा बच्चा देखे तो धून धूनी देकर न्योता देवे फिर दूसरे दिन जाय एक नई चादर में यत्नके साथ वह घोंसला लेकर नदी किनारे जाय और एक २ लकड़ी को जलमें डाले, जलमें तृण छोड़ते समय जब एक तृण सर्प रूपसे आवे तो निडर होकर पकड़ ले वह फिर लकड़ी हो जायगा उस लकड़ी को धूनी देकर अन्न की कोठीमें धरे तो अन्न कभी नहीं घटे।

खर्चा हुआ धन फिर आ जाय

मलमासके महीनेमें रविके दिन एकान्त स्थानमें दो रुपया नग्न होय दो स्थानमें थोड़ा हटकर गाड़ै वहां किसी नर नारी की छाया नहीं पड़ने पावे। फिर आठ दिनके बाद दोनोंको जब एक जगह पर देखे तो जो रुपया उड़के दूसरेके पास पाया हो उसे खर्च करे और दूसरे को थैला में रक्खे तो वह रुपया फिर चला आवे।

अन्य---श्यामा चिड़िया का जहां घोंसला हो उसके ठीक नीचेमें एक अठन्नीको पूजा कर गाड़े फिर दूसरे दिन जब वह चिड़िया अठन्नी निकाल दे तो धूनी देकर रुपयों की थैली में धरे तो खर्च करे पर न घटै।

अन्य--रविवार के दिन कहीं मेढ़क व मेढ़की को मैथुन करता पावे तो मारके नरके मुखमें रुपया मादीके मुखमें अठन्नी धरके दोनोंके टीका लगाय किसी तालाव के पूरब किनारे नरको और पश्चिम किनारे मादीको गाड़े। फिर दूसरे रविवार को जाय दोनोंको खोदकर लावे और रुपया अठन्नी का पूजन कर रुपये को खर्चै अठनीको थैली में धरे तो खर्च किया हुआ धन फिर आ जाय। इन सब तन्त्रों में कोई सन्देह न करे परीक्षा करके धन लाभ करे।

॥ इति सप्तमोऽध्याय ॥

॥ श्री ॥

अथ कामाक्षा मन्त्र सार

अष्टम अध्याय

श्री कामाक्षा देवीका मन्त्र

ओं क्लीं नमः । व्रत रखकर पटकर्मानुसार दस हजार बार सात दिवस तक जपे तो धनधान्य की वृद्ध तथा सम्मान मिले ।

श्री लक्ष्मी देवी का मन्त्र

ओं नमो पद्मावती पद्मनेत्रे वज्र वज्रांकुश प्रत्यक्ष भवंति ॥ २ ॥

अर्द्धरात्रिको मृत्तिका का दीप जलाय मृत्तिका की माला से १००८ बार मन्त्र लगातार २१ दिन तक विधि पूर्वक जपे तो लक्ष्मी देवी प्रसन्न होय तथा लक्ष्मी देवीका दर्शन पावे ।

अन्य—ओं नमः भगवती पद्मावती सर्वजन मोहनी सर्व कार्य बरदायिनी मम बिकट सङ्कट हारिणी मम मनोरथ पूरणी मम शोक विनाशिनी ॐ नमः पद्मावत्यै नमः ॥

त्रिकाल समय नित्य एक माला जपे सन्मुख (१) लिखकर धरे व धूप दीपसे पूजन करे तो सिद्ध हो तथा रोजी रोजगार मिले।

रोजी तथा धन मिलने का मन्त्र

ॐ नमः भगवते पद्म पद्मावत्यै ॐ ह्रीं श्रीं पूर्वाय दक्षिणाय पश्चिमाय उत्तराय अन्नपूर्णस्थसर्व जन वश्यं करोति स्वाहा ॥

प्रातः काल किसीसे बात करनेके पहले १०५ बार पढ़के चारों ओर कोणमें १० बार मन्त्र पढ़कर फूंके तो चारों दिशासे लाभ होय।

लक्ष्मी दाता मन्त्र

ओं ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं क्रों क्रीं क्रीं स्थिरां स्थिरां ओं।

कांचनी वृक्ष के नीचे कृष्ण मृगासन पर बैठ मोती की माला से नित्य ११० मंत्र ४१ दिन तक जप करे तो लक्ष्मी प्राप्त होय।

रोजी रोजगार मिलने का मन्त्र

ॐ नमः काली कङ्काली महाकाली मुख सुन्दर जिये व्याली चार बीर भैरों चौरासी बात तो पूजूं मान ऐ मिठाई अब बोलो काली की दुहाई।

प्रातः काल स्नान कर नित्य ७ मन्त्र या ४९ मन्त्र पूर्व मुख बैठकर जपे तो अल्प दिनोंमें रोजी प्राप्त होय।

रोजी प्राप्त होनेका मन्त्र

बिस्मल्लाहिर्रहमानुर्रहीम या हश्राफील वहक्क या अल्लाहो अल्ला हुस्नसल्ला मुहम्मद नव धारक नसल्लम।

शुक्रवार या बृहस्पतिवारसे आरम्भ करे सवा पाव उड़द के आटाकी दो रोटियां हाथसे बनाकर सफेद रूमाल में बांधे और रोटियों की १०१ जङ्गली बेरके समान गोली बनावे और मन्त्र पढ़ २

कर नदीमें फेंके और रूमाल खोल पक्षियोंको मंत्र पढ़ खिलादे तो ४० दिन में मनोरथ पूरा होय।

व्यापार वर्द्धक मन्त्र

ॐ श्रीं श्रीं श्रीं परमां सिद्धीं श्रीं श्रीं श्रीं ओं।

प्रदोष का व्रत रखकर सन्ध्या समय नागोरीके फूल अष्ठ गन्ध मिलाकर १००० मन्त्र जपे फिर १०८ अहुति देवे सात प्रदोष तक करे तो अवश्य ही व्यापार की वृद्धि होय।

व्यापार द्वारा धन प्राप्ति का मंत्र

ॐ नमो ह्रीं श्रीं क्रीं श्रीं क्लीं क्लीं श्री लक्ष्मी ममगृहे धनं चिन्ता दूर करोति स्वाहा।

प्रातःकाल मुख धोकर मौन होय १०८ मन्त्र नित्य जपे तो धन धान्य की वृद्धि तथा व्यापार चले।

तन्त्र—भेंड़ेके सींगको रविवारके दिन न्योत देकर लावे पोली बनाकर भण्डार कोण में गाड़कर तेलसे सींचे फिर आधी रातको निस्तब्धताके समय

मनमें जा चिन्ता करके उसके पास जाय तो मनो-रथ पूरा होय।

अनाजकी राशि उड़ानेका मन्त्र

ओं नमो आदेश गुरुको हँकालों चौसठयोगिनी बुलावें बावनपीर, कातिक अर्जुनवीर बुलाऊँ आग चौसठि वीर। जल बाँधि बांधि उत्तर विराजे अर्जुन-राजा दक्षिण विराजे कार्तिक विराजे आसमान लौं वीर गाजे नीचे चौसठि योगिनी विराजे पीर तो संग चलि आवे छप्पन भैरों राशि उड़ावें एक बंध आसमान उड़ाया दूजे बांधि मेरे घर में लाया॥ शब्द साँचा पिण्ड कांचा फुरो मन्त्रईश्वरो वाचा॥

दीवाली की रात में जंगल या खेतसे चूहेकी मंगनी लावे और उसे सात मन्त्र पढ़कर राशि पर धर आवे पीछे न देखे, पीछे से राशि उड़ती हुई घरमें चली आवे, उसमें ये आधी धर्मार्थ खर्च करे।

रोजी मिलने का मन्त्र

बिस्मिल्लाहहिर्रहमानुर्रहीम यादू बुह या

हयियो या कयियूमो या अल्लाहो या फरदो या बितरो या समदो या रहिमो या बारिसो याअहदो या लमयालिदों वलमयूलजवल मयकुन लहूकुफवन चहद् ।

बृहस्पतिसे लगातार ७ दिन तक नित्य १००० बार मन्त्र पढ़े और कौआको रोटियां खिलावे तो निश्चय रोजी मिले ।

महालक्ष्मी मन्त्र

श्री शुक्ले महाशुक्ले कमलदल निवासे श्री महालक्ष्म्यै नमो नमः । लक्ष्मी माई सत्यकी सवाई आवो माई करो भलाई ना करो तो सात समुद्रकी दुहाई ऋद्धि सिद्धि खोवोगी तो नौनाथ चौरासी को दुहाई ।

दुकानदार प्रातःकाल गद्दी पर बैठकर २०८ मंत्र नित्य जपकर लेन देन करे तो लाभ हो तथा वृद्धि होय ।

जंजीरा का मन्त्र

ओ नमः आदेश गुरू को सात समुद्र बीच किला सुलेमान पैगम्बर बैठा तख्त सुलेमान पैगम्बर के चारि मुवक्किल तारिया सारिया जारिया औ जमरिया एक मुवक्किल पूरब गया लाया देव दानव को बाँध दूसरा मुवक्किल पश्चिम को गया लाया भूत प्रेत को बाँध तीसरा मुवक्किल उत्तर को धाया उत्तपृत् को बाँधि लाया, चौथा मुवक्किल दक्षिण को गया डाकिनी शाकिनी बाँधि लाया चार मुवक्किल चहुंदिशि धावे छल छिद्र कछु रहै न पावै शब्द सांचा पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा ।

कपड़े के चार पुतले बनाय आधी रात में चारो कोने पर गाड़े । धूप दीप देकर १०८ बार मन्त्र पढ़े सर्व कार्य सिद्धि होय ।

मनःकामना पूर्ण करण मन्त्र

ॐ आं अं स्वाहा ।

इस मन्त्र को नित्य प्रति १ सहस्रबार २१ दिन

तक ब्रह्मचर्य्य रहकर विधि पूर्वक जपे तथा दशांश होम करे तो मनःकामना पूर्ण हो।

काली सर्व कार्य सिद्धि करण मन्त्र

ओं नमः हुं काली करि करालिनी क्षंक्षा फट्

एक पॉव से खड़ा हो १०८ बार मन्त्र जपे बकरे का मांस और लाल फूल नित्य प्रति एक मास तक या छः मास तक चढ़ावे तौ सिद्धि हो जो बर मॉगे सो मिले तथा सदा प्रसन्न रहे।

भैरव सिद्धि मन्त्र

ओं नमो काली कङ्काली महाकाली के पूत कङ्काली भैरव हुक्मे हाजिर रहै मेरा भेजा तुरत करे रक्षा करे आन बॉधो बान बॉधो चलते फिरते को औसान बॉधूं दशा सुखा बाँधू नौ नाड़ी बहत्तर कोठा बॉधूं फूलमें भेजूं फूल में जाय कोठेजी पड़े थर थर कांपे हल हल हलै गिर गिर परै उठ उठ भगै बक बक बकै मेरा भेजा सवा घड़ी पहर सवा दिन सवा मास सवा बरस का बावला न करे तो

काली माता की शय्या पर पाँव धरे बचन जो चूकै तो समुद्र सूखे बाचा छोड़ कुबाचा करै तो धोबी की नाद चमारके कुन्डे में पड़ै मेरा भेजा बावला न करै तो रुद्र के नेत्र से अग्नि ज्वाला कढ़ै सिर को जटा टूटि भूमि पर गिरै माता पार्वती के चीर पै चोट पड़े बिना हुक्म नहीं मारना हो, काली के पुत्र कङ्काल भैरव फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।

सूर्य्यग्रहण की रात्रिमें त्रिकोण चौका लगाय कर लाल करनेके फूल, सिन्दूर, लड्डू, जोड़ा लौंग और चौमुखा दीप, धरके दक्षिण मुख बैठ के एक हजार वार मन्त्र जप करे तथा दशांश हवन करे तो भयङ्कर रूपमें भैरव सन्मुख आवे तब डरे नहीं गले में माला पहिरा लड्डू आगे धरे फिर जो काम कराना हो करावे तुरन्त कार्य होय।

भैरव सिद्धि तन्त्र

अमावस्या की रात्रि को अपना वीर्य्य निकाल सुखा कर रक्खे फिर दूसरी आमावस्या को नैन में

अंजन कर भेड़े व बकरियों के पांलां (झुण्ड) में देखे तो भैरव बकरे पर सवार दिखाई देंगे उस समय उनकी टोपी उतार कर छिपालेवे, जब तक वह टोपी रहेगी भैरव वशमें रहेंगे और उनके द्वारा कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होंगे। अन्त में तीन बचन ले टोप दे देवे।

अन्य—शनि या रविकी रात्रिमें कहीं एकान्त में पगड़ी बांधि आसमान की ओर देखे जब जब तारा टूटे तब एक गांठ पगड़ी में बाँधे इसी प्रकार सात गाँठे बाँधि दूसरे दिन पनघट पर जाकर बैठे जब पनिहारिन घड़ा भरके चले तो एक गांठ खोले तो घड़े फूटेंगे तब घड़े का गर्दन जो नहीं टूटा हो बसे लेकर भेड़ बकरियों के झुन्ड में घड़े के गर्दन की गोलाई के भीतर से भैरव दिखाई दे तो गोलाई में हाथ डाल टोपी लेवे और गर्दन को तोड़ फेंके फिर भैरव सदा बश में रह के मनोरथ पूर्ण करे।

सहदेई सिद्धि मन्त्र

ओं नमः भगवतो मातङ्गी सर्व व्रतेश्वरी सर्व मन मोहनी सर्व लोक वश करणी सुख रंजनी महा माये लघु २ वश्यं कुरु २ स्वाहा।

कृष्णाष्टमीका व्रत रक्खे सहदेईको न्योतादेकर सुबह उखाड़ लावे और ईशान दिशामें बैठकर लगातार १४ दिन तक रात्रिमें विधि पूर्वक पूजन करे तथा ३२ बार मन्त्र जपे फिर सहदेई को चूर्ण कर जिसके माथे पर रखे वह वश में होय चूर्ण में मैंनसिल मिलाकर नैन में मॉज जिसपर नजर डाले मोहित होय तथा सिरपर रख के युद्ध या मुकद्दमा को जाय तो जय हो और ऋतु समय बन्ध्या स्त्रीको चूर्ण खिलावे तो गर्भ रहे बालकके गले में बांधे तो ग्रहपाड़ा नाश हो व अतिसार मिटावे सब रोग चला जाय।

विद्या बृद्धिका मन्त्र

ओं नमः श्रीं श्रीं अहं बद् बद् वाग्वादिनी

भगवती सरस्वत्यै नमः स्वाहा विद्यां देहि मम ह्रीं सरस्वती स्वाहा।

ग्रहणमें १४४ मन्त्र जपे और २१ दिनों तक विधि पूर्वक त्रिकाल में १०८ बार जप करे तथा नित्य एक माला जपे तो विद्या बढ़े।

विद्या दायिनी शारदा मन्त्र

ओं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ओं नमः सरस्वत्यैः

षटकर्मानुसार विधि पूर्वक दस हजार बारमंत्र जपे फिर एक सेर घृतको चार सेर बकरीके दुग्धमें मिला दो टंक सहजनेकी जड़, सेन्धा लवण, धवढ़ा पुष्प और लवण मिलके नर्म आंच पर रक्खे दूध व दवा जल जाय तब घृत को तीन बार धरे इसी तौर मन्त्र पढ़कर बनाया करे तो गूंगेकोकण्ठ हो और कण्ठवाले को हजारो श्लोक कन्ठमें धरे रहे बुद्धि बढ़े।

पढ़ी हुई विद्या न भूलने का मन्त्र

ओं नमः भगवतीसरस्वतीपरमेश्वरीवाग्वादिनी मम विद्या देहि भवती हँसवाहिनी समारूढ़ा बुद्धि

देहि २ प्रज्ञा देहि विद्यां देहि परमेश्वरी सरस्वती स्वाहा ॥

रविवारसे आरंभ कर २१ दिन नित्य १०८ बार पढ़े ब्रह्मचर्य्य से रहे एक समय भोजन करे तो जो पढ़े वह भूले नहीं।

हाजरात कामाक्षा मन्त्र

ओं नमो कामक्ष्यै सर्व सिद्धिदाययै अमुक कर्मानि कुरु २ स्वाहा ॥

संकल्प—अस्य मन्त्रस्य वह्निक ऋषि जगती छन्दः कामाख्या देवी प्रणव शक्तिः अव्यक्तं कीलकं अमुक कर्मानि जपे विनियोगः।

न्यास—ओं नमो अंगुष्ठाभ्यां नमः कामक्ष्यापैं तर्जनीभ्यां नमः सर्व सिद्धिदाये, मध्यमाभ्यॉं नमः वौ षट अमुक शर्मा अनामिकाभ्यां नमः कुरु २ कनिष्ठकाभ्यांनमःवौषट स्वाहाकरतबपृष्ठाभ्यांनमः अस्राय फटओं नमः सोह दयाय कामाक्ष्या सिरसे स्वाहा सर्व सिद्धि दाये शिखायै वौषट अमुक कर्म कवचाय हुं कुरु २ नेत्राय वौषट स्वाहा अस्रायफट्

ध्यान—योनि मात्रशरीरांयांकंगुबासिनीकामदा। रजस्वला महातेजा कामाक्ष्ये ध्यायतं सदा।

दस हजारबार मंत्रजपकरके गुड़हलके पत्तोंकी एक सहस्र बार आहुति देकर तर्पण तथा ब्राह्मण भोजन करावे तो मन्त्र सिद्धि होय फिर तीनबार मन्त्र संकल्प कर जलको फलों पर डाले।

हाजरात पैगम्बर मंत्र

बिस्मिल्लाह रहमानुर्रहीम खुदाई बड़ी तू बड़ा जैनुद्दीन पैगम्बर दूनी तेरा सा दाता फुरो बदना मुरादी बेबुनियादी तर्कमापरि ता इया सिलार देख तेरा असर जल्द बांधि लाव नौ नरसिह चौरासी कलूहा बारह ब्रह्मा अठारह सौ शाकिनी डाकिनी कामद दुरामन छल छिद्र भूत प्रेत चोर चाकर अगिया बैताल जल्द बांधि लाव जो न बांधे तो सुलेमान पैगम्बर की दुहाई।

हरेक शुक्रवारको तेल फुलेल मिठाई से पूजनकरे २१ बार मंत्र पढ़कर इसी तरह ४० दिन करे तो

फिर मिट्टीसे चौका लगाकर चावल के आटे का स्थान बनावे और एक त्रिशूल बनाकर कुमारी कन्या स्नान कराके सामने बैठावे और माथे पर दीप जला देवे एवं मन्त्र पढ़ २ कर चावलसे मारे फिर जो कुछ पूंछना हो वह पूछ ले लड़की सत्य सत्य कहेगी।

अगिया बैताल कर मन्त्र

ओं नमो अगिया बैताल पैठे सप्त पताल लाघें आगो की धुधुआती झाल वैसी ब्रह्माके कपाल मछली चील कागला गुगुल हरताल इन सप्तों ले चले ना चल तो काली की आन।

होलीको रातमें एकलाख बार मन्त्र जपे मछली मांस मद्द का भोग धरे गुगुल हरताल की धूनी देवे। फिर २१ बार मंत्र पढ़कर धूली फेंके तो अग्नि जल उठे।

मसान जगाने का मन्त्र

ओं नमः आठ काठकी लकड़ी मूंजवनी का

बाण मूवा मुर्दा बोलो नहीं तो महाबी को आन शब्द साँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचां ।

मद्य १ सेर और कपूर, कचरी, छाड़ छबीला, इत्र, लोहबान और चमेली के फूल लेकर श्मशान में जाकर मन्त्र जपे तो श्मशान जागे ।

सर्प बन्धन मन्त्र

बज्र बज्र बज्र किंवाड़ बजरा कीलुं आसपास सर्पा मरे होय छार मेरा बांधा पत्थर बंधे पत्थर फूटै ना बांधा छूटै मेरी शक्ति गुरुकी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा ।

इस मन्त्रको दसहजार बार पढ़े तो सिद्ध होय फिर एक कंकर मारे तो सर्प बंध जाय ।

सर्प खोलने का मन्त्र

ओं नमो आदेश गुरुको कीलन भई कं कील-नासा भये कुवाब जाओ सांपा चुगने फिरने चौमासा ।

मंत्र पूर्वोक्त रीति से सिद्ध कर मारे तो छूट जाय ।

टिड्डी बांधने का मंत्र

ओं नमः आदेश कामाक्ष्या देवी को अज्ञ बांधूं वज्र बांधूं बांधूं दसो दुआर लोहेका कोड़ा हनुमान ठोंके गिरे धरत्ती लागे घाव सब टिड्डी भस्मी हो जाय बांधूं टिड्डी बांधूं नाला ऊपर ठोंकूं वज्र का ताला नीचे भैरों किलकिलाय ऊपर हनुमान गाजैं हमारो सीवे में दाना पानी खावे तो गुरुगोरखनाथ लजावे।

होली में हजारबार मंत्र जपकर सिद्ध करे फिर चावल ले ३ बार मंत्र पढ़करके खेत खलिहान में छीटे और चारों कोने में चार कीला मंत्र पढ़कर ठोंक दे तो टिड्डी भाग जाय।

अदृश्य करण मंत्र

ॐ नमः भगवते रुद्रेश्वराय नमः रुद्रायव्याघ्र चर्म परिधानाय डमरू वं चन्द्ररू कंकाली स्वाहा।

काले कुत्तेको एक दिवस भूखा रखने के उपरान्त काले तिल दूध में भिगाकर सात बार मंत्र पढ़कर खिलावे फिर विष्ठाको लेकर तेल निकलवावे और

उस तेल द्वारा काजल बनाय तीन बार मन्त्र पढ़कर नैनमें लगावे तो लोप हो जाय।

अथवा अंकोल के तेल में सात दिन तक यव भिगावै फिर १०८ बार पढ़कर गुटिका बनाय मुखमें राखे तो लोप होय।

अदृश्यांन मन्त्र

ओं नमः कुरु २ स्वाहा में हरिः अनेक धनये पाटेश्वरी स्वाहा।

घुग्घूकी चरबी द्वारा तैल निकाल कर आधी रात में मन्त्र पढ़ते हुए काजल बनाकर नैनमें लगावे तो लोप हो, सदृश्य होनेको गौ-मूत्र से हांथ धोवे।

अन्य तन्त्र-घुग्घू पक्षीका पैर और पिण्डलीका तैल निकाल दो टंक पारद मिलाय घिसकर आंजन बनाय आंख में आंजै तो अदृष्टि होय।

अन्य महातन्त्र--काली बिल्लीको मक्खन व घृत बहुतायत से खिलावे और पांव बांधकर राखे जब खाया हुआ घृत मुख से निकले तव उसका

दीपकमें भरकर वत्ती जलाय कागज बनाकर धर लेवे। आधी रत्ती प्रमान नैनमें आंजे तो उसको कोई न देख सके और वह जगतको देखे।

अन्य—इतवारके दिन जब अमावस्या पूर्ण चौदह तिथि हो तब घुग्घुके पेटसे विष निकाल श्मशानमें जाय तो खप्पर लेवे और एकमें विष धर वत्ती जलावै तथा दूसरी खोपड़ी पर काजर पारे और अपना गुरु मन्त्र जपता रहे। यह सब कार्य नग्न होकर करे, फिर तांबेकी तबीजमें काजर भरके रक्खे। जब मुंहमें रखे तो कोई देख न सके और पातालका धन दिखाई पड़े। यदि कागज नैनमें आंजे तो गन्धर्व, किन्नर, योगिनियोंसे मुलाकात हो और देव देवी दर्शनकी शक्ति हो। गौ मूत्रसे नैन धोवे तब सादृश्य होय।

अन्य—बन्दर तथा मयूरके हाड़ महिषा (भैंस) के घृतमें खूब पकाकर बारीक पीसकर आंखमें आंजै तो वह किसी स्थानमें जाय मगर कोई न देख सके।

अन्य-*करगिलास पक्षीकी पूँछ रविवारके दिन ले धूप दीप जलाय १०८ बार निज मन्त्र पढ़कर पूजन कर फिर मुखमें धरे तो अदृश्य हो जायगा।

अदृश्य करण ताबीज

खञ्जीरा नामक पक्षीको पिंजरेमें रक्खे। उसको एक वर्ष पोसे पाले। वर्ष भरमें एक दिन ऐसा आवेगा कि पक्षीको पिंजरेमें रहते हुए नहीं दिखलाई देगा उस समय पिंजरेमें हाथ डाल पकड़े और सिरमें सात पङ्ख निकले हुएको उखाड़ लेवे और सोनेको ताबीज में मढ़ाय, मुख में रक्खे तो इस जगतमें कोई प्राणी नहीं देख पावे।

अन्य—फाल्गुन मासमें खञ्जन पक्षी लाकर रक्खे यह भादों महीनेमें लोप हो जायगा फिर उसकी शिखा काटकर सोलह भाग चांदी, दस भाग सोना और बारह भाग तांबा को ताबीज

*करगिलोस पक्षी सरोवर के किनारे रहता है और लम्बी चोंच चितकबरा होता है।

बनाय मुखमें रक्खे तो देव देवी भी उसको नहीं देख सकता फिर मनुष्यको क्या सामर्थ है।

खञ्जन पक्षी छोटा और दूधका सा रङ्ग तथा शिर पर शिखा होता है।

गर्भ बिषयक मन्त्रम्

—※—

गर्भ धारण मन्त्र

ॐ ह्रीं लज्जा जलयं ठः ठः लः ॐ ह्रीं स्वाहा॥

स्त्रीके रजो-धर्मसे निबृत होने पर शुद्ध रूपसे भूमिको मिट्टीसे चौका लगाय स्त्रीको बैठावे, फिर काले मृगासन पर बैठ मृगशिरा नक्षत्र तथा शुभ मुहूर्त देखकर १०८ बार ऊपर लिखा हुआ मन्त्र पढ़कर स्त्रीके कर्णमें सुनावे और पञ्चमुखी हनुमान जीका पूजन कर सवा सेर रोट भोग लगाकर बानरोंको खिलावे तो अवश्य गर्भ रहे।

गर्भ बन्धा मन्त्र

ओं नमो कामरू कामक्ष्या देवी जल बांधूंजल बाई बांधू बांधि देउं जलके तीर, पांचो दूतकलूआ बांधू बांधू हनुमत बीर सहदेव को अनुआ औ अर्जुनका बाण, रावण रणको थाम ले नहीं तो हनुमन्त की आन फूरो मन्त्र इश्वरोवाचा।

हनूमानजी को सवा सेर रोटका भोग धरे और कुमारी कन्या का काता सूत सिर से पैर तक नाप गण्डा बनाकर पहिरा देवे तो गर्भ ठहर जाय।

गर्भ न गिरने का मन्त्र

ओं थं ठं ठिं ठीं ठूं ठें ठैं ठौं ठः ठः ओं॥

सोमवार अनुराधा नक्षत्र हर्षण योगमें १०८ बार मन्त्र पढ़कर स्त्री को झार देवे और अनारकी कलमसे भोजपत्र पर मन्त्र लिखकर कुमारीकन्याके काते हुए सूत में तन्त्रको बांध कर स्त्री को कटिमें बांध देनेसे गर्भ मिटनेका भय नहीं रहता।

झरता हुआ गर्भ रुके

ॐ नमों ह्लीं ह्लीं चल चले हुः चलमलहुः ठः ठः ठः स्वाहा।

इक्कीस तारका सूत इक्कीस गांठ मन्त्र पढ़के कटि में बांधे।

गर्भ रक्षा मन्त्र

ओं रुं द्रां भी द्रव ह्लौं हां हः ओं क्लीं।

मंगलवार की शामको धूप दीप जला गर्भिणो को १२१ मन्त्र सुनावे।

बन्ध्या गर्भ धारण मन्त्र

ओं अक्सल बिज्जहीता क्रांद्व क्रांद्व खपड़ां खपड़ां त्वर प्रसावित मा गृहीता ओं ह्लीं क्रों ठः ठः।

शनिवारके दिन जब चतुर्दशी हो उस दिन शामको जो कुलारा पक्षी अन्डा सेवती हो उसे मार लावे और चिर्चिराके बीज उसके मुखमें भर सरोवरके तीर ऐसे स्थानमें गाड़े जहांपर किसी की छाया नहीं पड़े फिर प्रातःकाल स्नानादिकर रेशमी

वस्त्र पहन कर उखाड़ लावे बीज मुख से निकाल धो डाले और सवा पाव चावल मिलाकर गो दूधमें खीर बनावे मन्त्र पढ़कर ११ बार आहुति कर शेष बची हुई खीर ऋतुवती स्त्रीको खिलादे तो अवश्य गर्भ रहे और दीर्घजीवी पुत्र होय।

वन्ध्याके पुत्र होने का मन्त्र

रजोधर्म से शुद्ध होकर गोखरूके बीज निर्गुंडी के रस में डालकर पावे। सात या तीन दिनमें गर्भवती हो।

अन्य—श्रवण मास कृष्णपक्ष रोहणीनक्षत्रमें एक नये कलशेमें प्रवाहमान नदीसे जलभरलावे आते समय पीछे नहीं देखे और आते जाते समय कोई टोके नहीं उस जलको बन्ध्या स्त्रीको पिलावे तो गर्भ रहे।

बाँझपन नाशकमन्त्र

श्रवण नक्षत्रमें कोली एरण्ड की जड़को लाय धूप दीप दे पूजन कर स्त्री के गले में बाँधे तो बन्ध्या दोष जाता रहै।

अन्य—विष्णुकांताका पौधा जड़ सहित लाकर भैसके दूधमें पीस कर भैसका मक्खन मिलाय सात दिवस तक रितुवती स्त्री को खिलावे तो निश्चय गर्भ रहे।

मृतवत्स दोष निवारण मन्त्र

ओं परब्रह्म परमात्मने अमुकी' गर्भे दीर्घजीवी सुतं कुरु २ स्वाहा।

जेठकी पूर्णिमाको घर लीपकर तोरण बन्दवार आदि मङ्गल कार्यादि करके एक हजार आठ बार मन्त्र जपे तथा ब्राह्मण भोजन करावे तो दीर्घजीवे पुत्र होय।

मृतवत्सा के पुत्र जिलाने का मन्त्र

बन्दरकी सूखी हुई बीट पके हुए पानमें बच्चे का माँ को २१ दिनतक खिलावे और बालकको भी चावल प्रमाण एक दिन घूंटी देवे तो बालक जीवित रहे।

अन्य—ओं अदिते दिते दिव्यां र्गात मासूति सूरि रस्मय गर्भां ठहः ठहः ठहः॥

सोमवार प्रदोषमें एक प्रहर रात्रि रहें तब स्नानादि कर कांचनी वृक्षके नीचे यह मन्त्र पढ़ता हुआ जावे वहाँ अष्टगन्ध धूप देकर पकी हुई फलीको तोड़ लावे और उनके बीज निकाल गो-दुग्धमें खीर पकावे स्त्रीको स्नान कराकर श्वेत मिट्टीका चौका लगाय के बैठावे और कहे कि अदितिका ध्यान कर इसे खीरके सात ग्रास खालो फिर जबतक बालक न हो दिनमें एक बार भोजन करे शुद्ध कुशाकी आसनी पर शयन करे और किसी अन्य स्त्रीकी छाया न पड़ै तो अवश्य बालक दीर्घजीवी होय।

मृतवत्सा दोष शान्ति मन्त्र

छोटी मोटी खप्पर तू धरती कितना गुण जिसके वल काट कू—ज्ञान विज्ञान॥

दाहिनी ओर हनुमान रहे बांयीं ओर चील।
चहुंओर रक्षा करे बीर बानर नील॥
नील बानर की शक्ति लखि न जाय।
जेही कृपा मृतवत्सा दोष नशाय॥

आदेश कामरू का कामक्ष्या माई।
आज्ञा हाड़ि दासी चण्डी की दुहाई॥

मछुआके घर जाकर एक त्रिकोण मछली मारने वाले यन्त्रका टुकड़ा लाय तोन बार मंत्र पढ़कर कटिमें बाँध दे तो मृतवत्सा दोष शान्त होय।

वाण मंत्र प्रारम्भ

ओं नमो वीर तो हनुमन्त वीर भर मुष्टिचलावै तीर मैंको रुख नाखो तोडूं तोड़ि रक्त सोखि मोर बैरी तेरा भषहि तोढ़ि कलेजा चलाव सब धर्मनकी हाथई वाजे धर्मकी लालमें वलि तुम्हारे कहाँ गये माथे भूरे बाल उलटी पछाड़ न पछाड़े तो माता अंजनीकी आन शब्द सांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाच।

नोट—स्त्रियो को मासिक-धर्मके समय जो कष्ट होता है उसके निवारण वास्ते ऋतु दर्द निवारण मन्त्र, सुखप्रसव मन्त्र और रज दोष नाशन मन्त्र इसी पुस्तकके दूसरे अध्यायमे पृष्ट १२०, १२१, १२२ मे पहिले लिखे जा चुके है इस अध्यायमें गर्भ सम्बन्धी बाते होने के कारण हम अपने पाठको को याद दिलाना उचित समझते है।

होली की रात्रिको यह मंत्र पूजन कर हजार बार जपे फिर एक मूठ काले उड़दों की भर के मन्त्र पढ़कर जिस बैरीको छाती पर मारे तो पछाड़ खाकर गिरे।

अन्य—लोहा अग्नि बज्रबाण अंडरी काठ का कोयला आन दुश्मनको छोड़ा अष्टयाम कष्ट दे भगवान कामरू कामाक्षा व गुरु की दुहाई।

ब्रह्मास्त्र बाण मंत्र

जय जय करके छोड़त हु हुंकार।
वेग से छूटत शिखर पहार॥
अग्नि बाण शरत्राण सायरात आर।
बालिके प्रताप से छोड़त हु हुंकार॥
मुष्टिक धूलि छोड़ूं मन्त्र उचार।
असुककी छाती पर हो बाण सवार॥
उसके मुख से चले रक्त की धार।
ह्रीं भ्रीं रं धू धू स्वाहा मन्त्र सन्॥
यह बाण फिरेतो कामरू कामक्षा की दुहाई॥

गायकी तांत (डोरी) और अरथी को बाँस लेकर धनुष बनाय त्रिमुहानी रास्ते में शनि या सोमवारकी रात्रिको पूजनादि कर मङ्गलको लाय रक्खे और पुराने मन्दिरसे चक्र या त्रिशूल ग्रहण कर लोहारसे फला तीर बनबावे और तुलसी पत्रके रसमें १०८ बार बुझावे फिर सिन्दूरका पुतला बना कए तीन बार मंत्र पढ़कर कार्य करे ।

लव-कुश बाण मंत्र

युद्ध करै नव-कुश दुई भाई ।
बाल्मीकि यह मंत्र बाण जन्माई ॥

बाण से बाण कटै होय बाणीको बरीषण ।
अर्द्ध चन्द्र खुर फांससे कतें श्री राम लछिमन ।
अर्द्ध चन्द्र खुर फांस बाण तोरे बलिहारी जाई ।
जिसके तेज तापसे कटे राम लछिमन दुइ भाई ॥

आं रिं यः जय चामुण्डे मम शत्रु बिनाशनम धू धू स्वाहा ।

वज्राहत वृक्ष की छाल और ग्रहण के समय का एक मुट्ठी धान और पांच चुटकी सिन्दूरको तीन बार मन्त्र पढ़कर भूमि पर मारे।

सरसों बाण मंत्र

अरे सुन रे सरसों सुन रे राई, घोड़ामुखी अघोरेश्वरो अघोरी। ॐ चामुण्डे अर्द्ध केशी ह्रीं श्रीं हुं फट स्वाहा॥

एक मुट्ठी सरसों बारह मुट्ठी राईसे चार बार मंत्र पढ़कर झारे।

हल्दी बाण मंत्र

हल्दी गोरी बाण को लिया हाथ उठाय।
हल्दी बाणसे नीलगिरी पहाड़ थहराय॥
यह सब देख बोलत बीर हनुमान।
डाइन योगिनी भूत प्रेत मुंड काटौतान॥
आज्ञा कामरू कामक्षा माइ।
आज्ञा हाड़ि की चण्डी की दोहाई॥

यह मन्त्र केवल भूतादिक दोषों के लिये है हल्दी तीन बार मंत्र पढ़कर अग्नि में छोड़े।

मूठ निवारण मंत्र

ओं ह्रीं आई को लगाई को जट जटखट खट उलट पलट लूका को भूका को नार नार सिद्ध यती की दोहाई मन्त्र सांचा फुरो वाचा ॥

जब मूठ आती दिखाई दे तो उस ओर मंत्र पढ़ पढ़कर उर्द फेंके तो मूठि लौट जाय ।

बाण काटनेका मंत्र

आईकटार वृषकेतुकी सिर काटय पौरि ।
धन्य होइ कहै नारायण से कर जोरि ॥
हे प्रभु कहो हम करुँ कौन सा काम ।
कौन कार्यसे हम जगत बनाऊं धाम ॥
नारायण बोले हैं तुमरी इच्छा किसरूप ।
समुझि कहो उसका बर्णन स्वरूपा ॥
बोले कटार यह मम इच्छा होय ।
जगत हित में मम मन सदा बिगोय ॥
होय सन्तुष्ट हरिने दीन्हा आदेश ।
कटै कटार से दुष्ट जनके बाण निमेष ॥

बाण शक्ति 'अमुक' अङ्ग न रहाई।
सहाई हरि आदेश श्री हरि की दुहाई॥

किसी तालाबसे एक लोटाजल लाकर तीनबार मंत्र पढ़कर पिलावे तो बाण जनित रोग शान्त होय।

बाण काटन मन्त्र

काच काचिके ऊपर काच काचि।
यम के दूत और सब सूर॥
कांच काच करे नील काचिका फूल।
आंधी सूर के लगि बज्र होइ जाय॥
कांचके हिलत चाँद सूरज गिर जाय।
कुरुता चाँद बड़ वशमाता बड़ माय॥
तीनोंदेवजोलीलसकैवहमोहोंघावकराय।
पड़िअङ्गलौहगढ़ यह गढ़ डिड्गू सकाई॥
डिंगगवेलोहेपदपड़ेसारश्रीनारसिंह दोहाई
रक्षा करै जन बाण से॥
नरसिंह सहाई दोहाई।

यह मन्त्र तीन बार पढ़कर शरीर बन्धन करने पर शत्रु बाणकी चोटका भय नहीं रहता।

बाण काटन मन्त्र

एक मुट्ठी सरसों बारह मुट्ठी राई ।
चल रे सरसों कामरु जाई ॥
जहाँ बैठी बूढ़ी छुतार माई ।
तिसके खप्पर सरसों भुंजाई ॥
कर रे सरसों चढ़ बढ़ कर ।
सरसों मन्त्र बाण ले हर ॥
आज्ञा देवी कामरू कामक्षा माई ।
आज्ञा हाड़ि की चण्डी की दोहाई ॥

सीकी के हया मारनेके पहले यह मंत्र तीन बार मन ही मन स्मरण करनेसे बाण भय नहीं रहता ।

मूठ पकड़ने का मंत्र

ओं नमो आदेश गुरूकों चंडी चढ़ी तो ऊपर चंडी आवत मूठ करे नव खंडीः चकर ऊपर चकर धरूं चार चकर ले कहा करूं श्रीनृसिंह के मुंह आये धरूँ मद् मांस को अगियारी मोंचाचि मेरे साथ का काँचाच तो मूंठ फिराऊं तीन सौ साठ मेरी भक्ति, गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र इश्वरो वाचा ।

मूंठ आवे तो मद् मांस का भोग देखकर कहे जिसने भेजा है उसे जाकर मार ।

बाण बुलाके उल्टा भेजने का मन्त्र

काला चौसठ कलवा वीर मेरा कलवा मंधा तीर जहाँ को भेजूं वहाँको जाई, माँस मछली को छुवस न जाई । अपना मारा आप ही खाय चलत बाण मारूँ उलट मूल मारूँ मार मार कलवा तेरी आश चार चौमुख दिया न बाती, जा मारूँ वाही की छाती इतना काम मेरा न करे तो तुझे अपनी माँका दूध पीना हराम है ।

सात मङ्गल प्रतिदिन २१ बार पढ़े चौरेठे का दीप जलावे अग्नि पर गूगुल देवे व जोड़ा मिठाई जोड़ा फूल रखे सिद्ध होय फिर मूठ आवे तो यह मन्त्र पढ़ उलटी भेज दे और आकर्षण या बशीकरणमें सुपारी की छाल पर २१ बार पढ़ पानमें खिलावे । दोनोंमें काम आवे ।

पूंगी बन्धन मन्त्र

ओं नमो वादो आय। वादन करता बैठा बट पीपर की छाया रहे बादो वदीय कीजै बांधू तेरी कंठ और काया बांधू पूंगी नाद बांधू योगी और साधू बॉधू कंठकी पूंगी बाजे मसान की बानी अब ठहर पूंगी गुमान तले बॉधे नरसिंह ऊपर हनुमन्त गाजे मेरा बान्धू पूँगी बाजे तो गुरु गोरखनाथ लाजै।

इस मन्त्र को एक लाख जपकर सिद्ध करे फिर इक्कीस उरद इक्कीस मन्त्र पढ़कर पूंगी पर मारे तो पूंगी नहीं बाजे॥

पूंगी खोलने का मन्त्र

ओं नमो आदेश गुरू को शब्द आनन्द खुल गई पूंगी भई आवाज शब्द सांचापिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

धूल को सात मन्त्र पढ़ पढ़ मारे खुल जाय।

पैसा रोपन मन्त्र

ओं नमो आदेश काली माई किल किला भैरों चौंसठी योगिनी बावन बीर तांबा का पैसा वज्र। की लाठी मेरा काला चलै न साथी नीचे भैरों किलकिले ऊपर हनुमन्त गाजै हमारा रोपा पैसा चले तो गुरू गोरखनाथ लाजै।

तीन बार मन्त्र पढ़कर कंकड़ी मारै

पैसा उठाने का मन्त्र

ओं नमो हनुमन्त वीर चलरे पैसा रूंखाबीर खा तेरा पैसा बासा सबन दृष्टि बांधि दे मोहि मारा मुख जोवे सब कोई वादी करता बादी रोवे भरी सभा में मोंहीं बिगोवे।

मंत्र पढ़कर के धूलि पैसा पर मारे तोपैसा उड़ जाय।

नकसीर थम्भन मन्त्र

ओं नमो गुरुकी आज्ञा सार सार महासागरे बांधूं

सतवार फिर बाँधू तीन बार लोहेकी सार बांधू सीर बाँधे हनुमन्त वीर पाके न फूटे तुरत सेखे।

राख से सात बार चांके।

एक मन्त्रसे तीन काम

ओं कलमुल आमिया बादि हो अहबुल वी स्फ्रैं स्फ्रैं स्फ्रैं।

नर्क चतुर्दशीको मुरगा पक्षीको मार कर उसके चोंचमें धान भर नदी किनारे गाड़ आवे दूसरे दिन सुबह को उखाड़ धान निकाल के उस स्थान में गाडै जहाँ स्त्री की छाया न पड़े, जब धान पके तब हाथ द्वारा चावल निकाल रखे वह चावल मंत्र पढ़कर बाजीगर के खेल पर मारे खेल बिगड़ जाय, नट के ओर फूंक कर मारे तो नट कला से चूक जाय और उन्हीं चावलों को मन्त्र पढ़ २ कर जलमें डाले तो कोई मन्त्र यन्त्र जादू नहीं चले।

एक मंत्र से दस काम

ओं सार्पे सार्पे उनमूलितांगुलीयके आवेहि आवेहि कायिका दोहद् बः बः ।

दिवाली के एक दिन पहले श्मशान में जाकर खोपड़ो औंधी उलठ कर गेरूसे सात रेखा मन्त्र पढ़ पढ़कर खींच कर जलमें औंध कर चला आवे फिर दिवाली को आधी रात में उसी स्थान पर जाय नग्न हो उस खोपड़ी को जल भरके निकाले और मसान की लकड़ी व आग जलाकर उस खोपड़ी में उड़द् और चावल पकावे तब तक मन्त्र पढ़ता खड़ा रहै । फिर उसको निकाल शुद्ध जलसे साफ कर घर ले आवे, पीछेसे न देखे और मार्गमें किसीसे न बोले। फिर रविवार या मङ्गलवार को जिसका नाम ले उर्द चावल फेंके उसपर मूठि चल गोली आती दीखै और जिस ओरसे बाण या गोली दीखै मन्त्र पढ़कर फेंके रुक जाय । तलवारकी धार पर मारे तो धार कुन्ठित हो जाय । बाजीगरकी तोंबी पर चढ़कर मारे तो तोंबी बन्द हो जाय,

जहाँ बहुत बाजा बजते हों वहाँ मंत्र पढ़कर फेंके तो बाजा बन्द हो जांय, जिसको खिलादे वह मूक हो जाय। घरमें पढ़कर फेंके तो मूस न रहै, खेतमें पढ़कर फेंकै तो हरा खेत सूख जाय, बृक्ष पर फेंके बृक्ष सूख जाय जिस स्थान पर बहुत मच्छड़ हों वहाँ फेंके तो मच्छड़ भग जाय।

॥ वृहत कामाक्षा मन्त्र समाप्त ॥

॥ श्री ॥

भानुमती का पेटारा

नवम अध्याय

-:❀:-

नजरबन्दी का मन्त्र

ओं नमो भगवते वासुकी नगर जाय गोप कुंडली चल नागिनी स्वाहा ॥

इतवारके दिन अंकोलकी लकीले गोल चौक लगाय धूप दीप नैवेद्य काष्ठ पर देवै फिर १०८बार मंत्र जपकर सिद्ध करे 'फिर खेल तमाशेके समय लकड़ी पर मन्त्र पढ़कर फिरावे जिसकी नजर उस पर पड़े उसकी नजर बन्द होय।

दृष्टिबन्धन मन्त्र

ओं नमो बटुमी चामुण्डी ठः ठः ठः स्वाहा ॥

पद्मनाल पर कन्याका काता हुआ सूत लपेट कर १०८ बार मंत्र पढ़े फिर जहाँ तमाशा करे वहाँ घुमावे जिसकी दृष्टि पड़े नजर बन्द होय।

तमाशा अन्य प्रकार

ओं नमों भगवते बासुकी नाग पूर्ण ॥

१ अंगूरकी शाखा, २ शशकी बीट, ३ चहरके पात, ४ बहेड़ेकी छाल, ५ पटोल, इन पाँचोंको भेड़ी के दूध में बांटि गोली बाँधे गुग्गल वो दीप जलावे दूध चूड़ा भाग धरे पुष्प १०८ बार पूरा मन्त्र जपे गोली सिद्ध होय फिर गोली को छायामें सुखा रख छोड़े।

अत्म-रक्षा मन्त्र

ॐ नमो पानी दल स्वाहा ॥

तमाशा करनेके पहले इस रक्षा मन्त्रको सात बार विभूति पढ़कर मस्तक में लगावे।

बर्तने की विधि

(१) उक्त गोलीको मेहदी की तरह हाथ पर लगा के कहे कि फलाने आवे तो उसी को देखे।

(२) गोलीको गलेमें लगावे तो गरुड़ दीखे

(३) गोलीको कमरके नारामें मलके ऊंचा करे तो ऊंचा दीखे।

(४) और नीचा करे तो उल्टा दीखे।

(५) गोलीको कागके परमें लगावे तो काग दृष्टि में पड़े।

(६) गोलीको निम्बूके पत्ते में रक्खे तो बिच्छू दीखे।

(७) मुर्गाके घर पर गोलीको मलकर हाथ मले तो मुर्गा दीखे।

(८) गोली और हरिताल दोनोंको मिलाय उंगली लगावे तो लोबा दीखे।

(९) उत्पन्न पर मले रत्नादिक नजरमें आवे।

(१०) अन्न को बोवे तो तुरन्त फूले फले।

(११) गोलीको करञ्ज बीज पर मलके मुंह राखे तो पेटमें पानी भरे निकारे तो सुख होय।

(१२) गोलीको हाथ नाक पर मले तो लोप होके भोड़में से निकल जाय।

(१३) गोलीको सारे अङ्गमें लगावे तो सब हाथ, पांव आदि टूटे हुए दिखाई दें धोवे जब जुड़े हुए दीखें।

भानुमतीके अन्यान्य खेल

१ गोदन्तीहरताल, २ आंवला, ३ केलेकी जड़, ४ मूंग भोगीका अंगूर, ५ सोलह पर्ण, ६ शंगसाख, यह जवों समान लेकर भेड़ीके मूत्रमें गोली बांधे और ऊपर लिखे हुए मन्त्र—"ओं नमो भगवती" पूरे मन्त्र २१ बार पूर्व युक्तिसे पढ़के गोली छाया में सुखाकर धरे।

सिद्ध कारक गुण विधि

(१) गोलीको घिसकर कांसेके पात्रमें लगावे तो पातालके देवी और देव देखे।

(२) गोली और सरसोंको गोमूत्रमें पीसकर शरीरमें लगावे तो बड़ासे छोटा दीखे।

(३) गोली और सरसों बकरीके मूत्रमें पीस कर शरीर पर मले तो बड़ा दीखे।

(४) गोली और धतूरके बीज दूधमें पीसकर अँगुलीपर मले तो जिसे दिखावे वह नग्न हो जाय।

हाथकी वस्तु कोई न देखे

मनसिल और हरताल गो-घृतमें गोली बाँधके मयूरको नित्य चुगावे सात दिवस बीत जानेपर मोरकी बीट उठाके रक्खे फिर अपने हाथ में लेप कर खेल करै चाँदी या सोना कोई वस्तु जो कुछ हाथ में लेवे दिखाई नहीं पड़े।

एक योजन बात सुनाई पड़े

गीधकी बीटके बराबर पीपल और निम्बू की छाल मालकागिनीको तांबेका लोटामें भर पारा भर देवे फिर पाताल यंत्रमें अर्क चुआवे और जब कोई बात सुनना हो तो तब कानमें डाल श्रवण को साधनेसे एक योजन की बात सुनाई पड़े।

अन्य—औं सरितपक्षनी महापक्षनी फट् स्वाहा ॥

इस मन्त्र के द्वारा सारस पक्षीका बिचली पंखको लेकर धोके रक्खे फिर सोरा, राल, गन्धक संगली इन चारो वस्तुओंको पंपमें लेप कर कपड़े लपेटे और मिट्टी लेप करके आँच लगाय अर्क चुआवे फिर रत्ती भर पानमें खाकर चावल प्रमाण सींक मुहंड़ेमें भी देवे तो एक योजनकी बात अनायासमें ही मालूम होय।

दो योजन दिखाई पड़े

किसी स्त्रीके मरने पर युक्ति पूर्वक लोहा, सीसा, तांबा और पाराको खरल बनाय आंच पर देवे लोहेकी एक डिबिया में भरकर उस स्त्री के योनिमें रख देनेसे वह डिबिया अपने आप बहार निकल पड़े तब उसे लेकर अञ्जन करनेसे अवश्य दो योजन दिखाई पड़ने लगे।

शत योजन तक दीखे

कृष्णपक्षकी चतुर्दशी को गीधका सिर लाय

मिट्टीमें गाड़ कर लहसुन बोवे फिर पुष्य नक्षत्रमें लहसुन लाकर काजलके साथ पीस घी मिलाय आंखोंमें आंजै तो सौ योजन तक दिखाई दे और दिनमें तारा चमके।

शीघ्र चलने का तन्त्र

सात काकेजघाकी जड़ और मैनफल तथा भोजपत्र को पीसकर इकरंगी गाय के दूध में घोंट के दोनों पांव तले लगावे तो बिना थके शीघ्र चले।

अन्य—अग्नि बंशलोचन और श्वेत भांगरा को बकरी के दूध मक्खन से पुष्य नक्षत्र में पीसे और तालवा में लेप करके दो घड़ी सुखावे फिर मार्ग चलै हारे नहीं।

सोलह योजन चल सके

चकवी चकोर मैना और कगवर की बीटका गोला बनाय मुखमें रख के चले तो सोलह योजन तक चले।

बीस योजन चल सके

श्रावण शुक्ल त्रयोदशी सोमवार को जब पूर्वा-फाल्गुनी नक्षत्रमें नदी किनारे जाय छः मास सोनेवाली मरी हुई मच्छी लावे और पारा, शीशा, हींगूल भरकर कपरौटी करके जलाशयमें छः महीना गाड़ै फिर निकाल आंच देकर गुटक बनावे जब मुख में रखे तो बीस योजन तक जाकर लौट सके।

सो मील तक चल सके

श्वेत ककोराकी जड़ सफेद काकजघाकी जड़, श्वेत सरफोका इन तीनों की पोटली बाँध कमर में बांधे तो इतनी जल्दी सौ मील चले कि पशु पक्षी भी हार मानै।

सौ कोस उड़ जानेका कौशल

चार सेर मोर की बीट धूपमें सूखाकर पीस छानके हरताल केवांच अम लीचियाँ और शीशा सब मिला एक गोला बनावे फिर मरे हुए गदहे के मुख में ईक्कीस दिवस तक रखे फिर छायामें

सुखाय लोहपात्र में रख पारा मिलाय छः महीना भूमि में गाड़े। अवधि बीतने पर शीशा पारा मिलित गुटका लेकर रक्खे। आगे जब दूध भात खाकर गुटिका मुखमें रखे तो क्षणभर में सौ कोस उड़ जाये।

मार्ग चले पर हारे नहीं

काला तीतर लाकर तीन दिवस पर्य्यन्त भूखा रक्खे चौथे दिन पारा खिलावे फिर गायके दूध में चावल भिगोकर खिलावे फिर जब बीट करे तो पारा निकाल गुटिका बनाय मुख में रखकर मार्ग चले पर मालूम न होय।

सभी काना मालूम होय

आंवलेके वृक्ष पर नीम लगी हुई नीमके फल फूल मूल लाकर छाया में सुखावे फिर कूट छान कर एक बत्ती रू केई सहारे बनावे और नाम के तेलमें दीप जलावे इसका उजाला जहाँ तक जाय सब काना दिखाई देवे।

घर जलमय दीखे

सामुद्रिक मिडियाव मछली की चरबी और भेड़ की चरबी दीप में घर जलावे तो घर पानी से भरा देख ताज्जुबमें होय।

घर में सर्प दीखे

सर्पका केचुली लाकर चार बत्ती बनावे और चौमुखा ताँबे के दीपक के चारों मुख जलावे तो उसके उजाले तक सर्प ही सर्प दीखे।

रात में दरिया की सैर दीखे

कछुआ के चरबी में अरमनी बूरा मिलाय महीन कपड़े द्वारा बत्ती बनाकर नये दीपक में रोगानसी नावभर दे फिर जलाने पर नौका में बैठे हुए दरिया की सैर करते दिखाई देवे। मेंढ़क का चरबी जङ्गल में जलावे तो समुद्र देख पड़े।

दर्पन में अजीब सूरत देखे

अमलबेत और पुष्प रक्त करबीर इन दोनोंको मिला आतसी शीशा में मंजावे तो अन्य प्रकार की सूरत दिखाई देवे।

निज रूप कूकर ऐसा दीखे

रविवार को कूकरी के स्तन काट दर्पण पीछे लगाकर देखे तो निज रूप कूकर ऐसा मालूम होय।

निज रूप कुरूप दीख पड़े

सुअर बकरी ऊँट घोड़ा और बन्दर इन पांचो का नख लाकर एक हाँड़ीमें बराबर धरे और पीली सोंठ कचूर लगाकर अग्नि में भस्म बनाय मेढ़ककी चरबी में घोल दर्पण में लेप करे तो कुरुप सूरत दिखाई देवे।

अचरजी तमाशा

जुगनूं की सिर को हिरणके चरबी में देकर बत्ती बनावे वह बत्ती जलाने पर अनोखा तमाशा दृष्टि में आवे।

दीप बिना उजियाला

तबकी हरताल और मुकत्तर सिरका को शीशे में भरे तो उजाला हो।

पानो से दोप जले

बकरो के दूध और माजूफल समान भाग लेकर पीसकर सातबार पुट देवे फिर पानी भर दीप जलावे।

दो दीपक की लड़ाई

एक दीपमें लिर्चाकी चरबी भर दक्षिण मुखमें जलावे और दूसरी दीप बकराके चर्बी भर उत्तरमुख में जलावे फिर जब एकको बुझावे पर दूसरा दोप जल उठेगा, इसी तरह एक भी न बुतेगा।

चार मूसलों की लड़ाई

रविवार के दिन कागसिसी की जड़ चार मूसलों के बीच रक्खें तो चारों मूसल लड़े।

आवें के बासन लड़े

कौंचके बीज घोड़ेके बाल में गूंथकर आवां में डाले तो सब बरतन आपस में लड़ने लगेंगे।

दो बरतन आपसमें लड़े

रवि या मंगल के दिन काले कुत्तेके दो दांत और काली बिल्लीके दो दाँत, इन चारोंमें सिन्दूर लगाकर

एक प्यालाके भीतर धरे और ऊपर से मुंह बन्द कर दे। फिर दो दाँत बकरा और दो दाँत भेंड़े को सिन्दूर लगा प्यालामें धरकर ढक्कन लगा और बकराका दाँत बन्दकर बीचमें रक्खे दक्षिण उत्तर उन दोनोंको रक्खे और चपड़ाको धूनी देनेसेही दोनों ओरके बरतन लड़ेंगे और विचला बासन बारम्बार उन दोनों को हटावेगा।

पनिहारी का घट भरे और खाली होय

मङ्गलवारके दिन हँसकी चोंच लाकर रास्तेमें लकीर खींचे जो पनिहारिन लांघे तो घड़ा खाली मालूम हो फिर पनघटकी ओर जाय तो भरा हुआ मालूम हो फिर निज मूर्खता जानकर घरकी ओर जाय फिर खाली मालूम होय।

पनिहारिन का घट टूटे

शनिवारको सन्ध्या समय बरगदके जटा (शोर) को न्योता देकर प्रातःकाल रविदिन लाकर गुगल, को धूनी देने के बाद घाट बाट में रक्खे या गाड़ देवे तो पनिहारिनके लांघते ही घड़े फूट जायँगे।

अन्य—महीने के अन्त में जब मङ्गल आवे तब कुम्हारके घरसे डोरा डालकर गूगलकी धूनी देवे फिर उसी रात्रिके कोई जलाशयमें दोनों पैर डाल दक्षिण मुख आकाशकी ओर बैठे फिर जब २ तारा गिरे तब तब डोरामें सातवार गांठ लगावे। उसको पनिहारिन को देख गांठ खोलनेसे अथवा उसके लांघने से तुरन्त घड़ा फूट जाय या सिर्फ डोरा लांघने से भी फूट सकता है।

लहँगा माथे चढ़ै

गदहा गदही को मैथुन करता देखकर मुखसे बालू ले आवे और धूप दीप देकर लाल, काला, पीला, रङ्गके कपड़े में गंडा बनाय अपने हाथ में पहिर के ऊपर को चढ़ावे तो लहँगा ऊपर चढ़ै नीचे उतारे तो नीचे गिरै।

कमरके नारा टूटे

रविवारको कुम्हारके घरसे चोरी करके बासन काटनेका डोरा लावे और चिड़ाचिड़ी पक्षीका संगम

करता हुआ देखकर सातबार गांठ लगावे और घाट बाट में गाड़ै। उसे जो स्त्री लांघे उसके कमरका बन्द खुलै।

स्त्री के स्तन जाते रहें

शनि या रविवार के दिन लाजवन्ती की पत्ती न्योता देकर लावे और अपने हाथमें मलकर नारी को दिखलाकर मुट्ठी बाँधे तो गायब हो जाय और खोले तो फिर हो जाय।

मनुष्यके मनकी बात मालूम करना

रविवारको जब अमावस्या हो उस दिन घुग्घू पक्षीका कलेजा लाकर धूप दिखाय सिद्ध करे और सोते हुये में छाती पर धरे तो मनकी बातें बतावे। (जलाकर धूनी भी देनेको ग्रन्थोंमें लिखा है।)

मालीकी डलियासे फूल फल कूदै उछलै

रविवारको मरा मेढ़क लाय धूप दीप दिखाय, चिकनी मिट्टीमें गाड़ उसके मुखमें मूँग बोवे जलसे सींचता रहे जहाँ बोवे वहाँ नर नारीकी छाया नहीं

पड़ने पावे, जब फली होय तब बनसे घर ले आवे और दोनों को अलग २ कर गुगूल दिखाकर पास रक्खे जब खेल करना हो तब मालीकी डलिया (टोकरी) में मङ्गलवार या शनिवारको छोड़े तो डलियाका फल फूल कूद कूदकर बाहर आ निकले।

बैंगन कूद बाहर होय

उपरोक्त लिखेनुसार मङ्गलको उड़द बोवे तो सब बैंगन उछल कूदकर बाहर हो पड़े।

नींबू उछलै कूदै

कागजी निम्बू में सूराख कर नौसादर और पारा भरकर धूपमें रक्खे।

पुरुष नाच करे

रविवार को पीले गिरगिटको लाकर मिथुन जब चन्द्रमाका योग हो तब नङ्गा होकर मारे फिर पूंछ काट बत्ती बनाय तेल में जलावे तो उसके उजाले पुरुष सब नाचने लगै।

घर में सब कोई नाचै

दो पूंछवाली विषभरी लाकर चार पत्तियां बना तेलसे दीप जलावे तो सबके सब नाचते दिखाई पड़ें।

दो घड़ीमें शाखा पर फूल दीखै

गदहीके मरा हुआ बच्चा जब होय तो उसका कलेजा निकाल सुखाकर रक्खे फिर काली मिर्च सोंठ, पीपर इन चारों को पीस कर गोली बनाकर रक्खे जब खेल करे गोली घिस शाख पर मारे।

हाथ अग्नि से न जले

मुलहटी और भांगरा दोनोंका रस हाथमें लगा कर आग उठावे अथवा मेंढक की चर्वी हाथ पर मले तो ताप न मालूम होय अथवा नौसादर और कपूर जल द्वारा हाथ पर मल आग उठावे।

नारी रूप दिखाई देवे

मंगलवारको मनुष्यकी खोपड़ी में ताल गूंजा बोवै फिर फल मुखमें धरे तौ स्त्री रूप हो जाय।

सिंह रूप धारण

बाघ या सिंह को खोपड़ी एतवार को लाय एकान्त बनमें रुई बोवे फिर रविवार दिन रूई के बीज लाकर गलेमें बांधे तो सिंह सा मालूम होय बत्ती जलावे तो सब सिंह दीखै ।

बन्दर रूप धारण

बन्दरकी खोपड़ीमें घुंघची बोवे और उस घुंघची की माला गले में डाले तो बन्दर सा दिखाई पड़े।

कुत्ता रूप धारण

कुत्तेके खमें सुसनका बीज बोय कर उपजीहुई सनको गले में बाँधे तो कूकर रूप दिखाई देवे ।

बिल्ली रूप धारण

काली बिल्ली के मुखमें अरण्ड के बीज बोकर फिर उस अरण्डके बीज मुखमें धरे तो बिल्ली रूप दरशाय ।

मयूर रूप धारण

कृष्णपक्ष की चौदश को मयूरका शीश लाकर

सनके बीज बोवे फिर उसको माला गलेमें पहिरै तो मयूर रूप दिखाई पड़े।

बिच्छू उपजै

भैंसके गोबरमें गदहेका मूत्र डालकर ऊपरसे दही और बूरा छोड़ कर गन्दे स्थानमें गाड़ देवे आठ दिनमें भयंकर बिच्छू तैयार होय।

धान्य बढ़ै

दीपमालिकाकी रात्रिमें श्वेत चिरमिट्टीकी जड़ लाय ताबीज में भर हांड़ी में बांधे तो अन्न बढ़ै।

पानीमें डूबे नहीं

दो मुहाँ सर्प के खूनमें वस्त्र भिगोकर धूप में सुखाकर फिर उस कपड़े का गोला बनाय मुख में रख दरियामें कूदे तो डूबे नहीं।

स्त्री के रक्त बहे तो रुके

खटमल के नीचले भागको नारीको खिलावे तो रुधिर जारी होय और ऊपरका भाग खाय तो वह रुधिर रुक जाय।

स्त्रीके पेटसे मरा बच्चा निकले

गायका गोबर पाव भर जल मिलाकर छान पिलावे तो तुरन्त बच्चा पैदा होय।

रुका हुआ मासिक खुले

गायका गोबर और कपूर बनफ़शा इन तीनों को मिला करके कान में एक बून्द टपकाने पररुधिर खुल जाय।

अथ साधन प्रकरणम्

मूषिक सिद्धि

अपनी विवाहिता पत्नी के साथ बैठकर ऐं श्रीं श्रीं ह्रीं ॐ ह्रीं ओं मूषिकाविचर्चिके स्वाहा यह मंत्र एक सहस्त्र बार जप करनेसे मूसे का शब्द समझनेकी शक्ति होती है, जिस कार्यकोकरना चाहे सिद्ध लाभ होते हुए कभी असंगल दृष्टि नहीं आती

अन्यमंत्र--श्रीं श्रीं मुष्यै स्वाहा यह मन्त्र भी विधि पूर्वक एक सहस्र जपनेसे चूहेकी भाषा का ज्ञान होता है।

विड़ाल सिद्धि

श्रावण मासमें एक समय फलहार कर श्मशान में सप्त दिवस पर्य्यन्त धूप दीप नैवेद्य, रक्तकुसुम प्रभृति उपचार द्वारा कङ्कटा देवीकी अर्च्चना करे और देवी बिकटायना, बर्म्मधारिणी भयङ्करामार्जार बाहिनी रुपका ध्यान करते हुए 'ओं ह्रीं काँङ्कटाय स्वाहा' यह मन्त्र तीस सहस्त्र जप करने से वह सहज में ही विल्लीका स्वर समझने में समर्थ होता है। भूत भविष्यत् वर्तमान आंखोंके सन्मुख प्रतीत होता है।

गजसिद्धि

मन स्थिर कर हस्तीको स्मरण करते हुए यथा नियम से 'क्रीं' मन्त्र आठ हजार बार जप कर दशांश हवन करनेसे हाथीका शब्द अनायास में मालूम होता है और गज कृपा से सर्वत्र जय एवं सर्वज्ञता लाभ होती है।

शुक सिद्धि

उपवास रखकर निशीथ समयमें ' ह्रीं शुक शुक

बोधय बोधय स्वाहा' यह मन्त्र अयुत (हजार) संख्यक जप करने से शुक पक्षी का स्वर समझने का समक्ष होता है और पक्षीकी अनुग्रह से प्रचुर धन संचय होता है।

हंस सिद्धि

जो साधक एक लक्ष प्रमाण 'हं हं केके हंसः हंसः यह मन्त्र एकाग्र चितसे जपकर मदिरा व मांस द्वारा गुह्यकालिका देवीको अर्च्चना करने से मन्त्र सिद्ध होता है। एवं हंसका शब्द समझने की शक्ति प्राप्त होते हुए हंस विष्ठातिलक करने से सर्वज्ञता लाभ होती है।

नटी साधन

नदी तीरमें जाकर एक सप्ताह पर्य्यन्त दश हजार बार 'ॐ हुं हुं फट् फट् नटी हुं हुं हुं॥ विधि पूर्वक जप करे और ध्यान करें उपरान्त हवनादि करे तो नटी सन्तुष्ट होकर साधक पत्नी होवे और एक तोला स्वर्ण प्रदान करती हैं।

यक्षिणी साधन

साधक अशोकवृक्ष पर बैठ ॐ ऐं क्लीं श्रीं धनं कुरु कुरु स्वाहा॥ यह मंत्र एकाग्रचित से दस हजार बार जप करने से यक्षिणी सिद्ध होती है और साधक को बहुत ही अर्थ लाभ होता है।

आम्र वृक्ष पर बैठ 'ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं पुत्र कुरु कुरु स्वाहा यह मन्त्र एक मन से दस हजार बार जप करनेसे पुत्र हीन व्यक्ति पुत्र लाभ करे।

बरगद वृक्ष पर बैठ एकान्त मनसे 'ॐ ए ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः' यह मन्त्र १००० बार जपनेसे यक्षिणी महालक्ष्मी के रूप में सिद्ध होकर साधकके गृह स्थिर भावसे चिर निवास करती है।

❁ दोहा ❁

संग्रह करि निज बुद्धिसों लिख्यो गुरु धरि ध्यान।
भूल चूक करिये क्षमा विनवउं सन्त सुजान॥

इति श्री राधाकृष्ण प्रसाद द्वारा सग्रहीत बृहत्त कामाक्षा मन्त्र सार नवम्ऽध्याय समाप्तम्।

—❁—
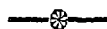
रहिमन पाय बड़ेन को लघु न दीजिए डार।
जहाँ काम आवे सुई काह करे तरवारि॥

सुई की जगह तलवार काम नहीं कर सकती

बड़े इन्द्रजाल को पाकर आप " **छोटे इन्द्रजाल** "
को सपने में भी भूलने की गलती न करिएगा। जहाँ
कहीं बड़ा असफल हो जाता है वहाँ छोटा ही
सफल होता है। "छोटे इन्द्रजाल" की
लोक प्रियता से ही इसके अनेक
संस्करण धड़ल्ले से आपके
सामने आ रहे हैं।

यह भी हमारा ही प्रकाशन है मूल्य केवल लागत मात्र—२)

—: प्रकाशक :—

श्री दूधनाथ पुस्तकालय एण्ड प्रेस,

६३, सूतापट्टी बड़ाबाजार कलकत्ता-७